विचार दृष्टि

वर्ष : 4 अंक : 11 अप्रैल-जून : 2002 15 रुपये

- गाँधी की धरती पर हैवानियत की हद
- हिंदी संस्कृति और राष्ट्र निर्माण
- स्वस्थ समाज के बिना सबल राष्ट्र की कल्पना नहीं
- 'पुनर्मिलन , 'चाँदनी में लिपटा पलाश - दो कहानियाँ
- विधानसभा चुनावों में भाजपा को करारा झटका
- गीतकार गोपीवल्लभ पर विशेष

INDIAN INSTITUTE OF HEALTH ECUCATION & RESEARCH

(Recognised by the Govt. of Bihar and RCI, Govt. of India)

Affiliated to Magadh University, Bodh Gaya

Health Institute Road, Beur (Near Central Jail), Patna

Ph.: 252999 Fax : 253290

A Perspective of New Building

Under Construction Site

ADMISSION NOTICE

Applications are Invited from eligible candidate of either ex for admission into following courses admission into following courses in the ***academic session 2001-2002***

BACHELOR DEGREES IN

1. PHYSIO THERAPY
2. OCCUPATIONAL THERAPY
3. AUDIOLOGY & SPEECH THERAPY
4. PROSTHETIC & ENGG
5. MENTAL RETARDATION

DIPLOMAS IN

6. PHYSIOTHERAPY
7. PROSTHETIC & ORTHOTIC ENGG.
8. MEDICAL LAB. TECHNOLOGY
9. X-RAY TECHINOLOGY
10. HOSPITAL MANAGEMENT

ELIGIBILITY

I.Sc. for course no 1 to 9,
Graduation for Hospital Management

FORMS & PROSPECTUS

Can be obtained from the office against payment of Rs. 100/- Only. Send a D/D of Rs. 120/- Only in favour of 'Indian Institute of Health Education & Research' Patna for Postal delivery.

निम्नलिखित नि:शुल्क स्वास्थ्य सेवाओं के लिए पधारें:

● स्वास्थ्य परीक्षण एवं परामर्श ● टीका करण ● फिजियोथेरापी ● अकुपेशनल थेरापी ● स्पीचथेरापी सभी प्रकार की विकलांगता पोलियो, लकवा, गठिया, हड्डी, जोड़ एवं नस से संबंधित सभी प्रकार के रोगों की जाँच एवं उपचार ● हकलाना–तुतलाना सहित गूंगे–बहरों की जांच एवं उपचार, हियरिंग–एड ● मानसिक विकलांगता तथा मंद बुद्धिमता–जांच एवं उपचार ● कृत्रिम हाथ, पैर, कैलीपर, पोलियो के जूते, वैशाखी सरवाइकल कॉलर, बेल्ट आदि का निर्माण एवं वितरण ● लाचार विकलांगों को तिपहिया साईकिल तथा व्हीलचेयर ● विकलांगों की शल्य चिकित्सा (सर्जिकल करेक्शन) ● रियायती दर पर पैथोलोजिकल ● जांच एक्स–रे तथा शल्य चिकित्सा

Anil Sulabh
Director-in-Chief

विचार दृष्टि

(राष्ट्रीय चेतना की वैचारिक त्रैमासिकी)

वर्ष-4 अप्रैल-जून, 2002 अंक-11

संपादक व प्रकाशक:

सिद्धेश्वर

कार्य. संपादक : **डॉ. शिवनारायण**

प्रबंध संपादक : **सुधीर रंजन**

सह संपादक : **कामेश्वर मानव**

सहा.संपादक : **मनोज कुमार**

संपादन सहायक : **अंजलि**

विधि सलाहकार : **मान.न्यायमूर्ति बी.एल.यादव**

शब्द संयोजन : **कुमारटेक कंप्यूटर्स**

(शशि भूषण, दीपक कुमार)

सज्जा : **सुधांशु कुमार**

प्रकाशकीय कार्यालय :

'दृष्टि', 6 विचार विहार, यू० 207

शकरपुर, विकास मार्ग, दिल्ली-92

दूरभाष : (011) 2230652

फैक्स : (011) 2225118

E-mail-vicharbharat@hotmail.com

ब्यूरो प्रमुख

मुंबई : **वीरेंद्र याज्ञिक** : 8897962

कोलकाता : **जितेंद्रधीर** : 4692624

चेन्नई : **डॉ. मधु धवन** : 6262778

तिरुवनंतपुरम : **डा. रति सक्सेना** : 446243

बेंगलोर : **पी.एस.चंद्रशेखर,** :6568867

हैदराबाद : **डॉ. ऋषभदेव शर्मा**

जयपुर : **डॉ. सत्येंद्र चतुर्वेदी** : 225676

अहमदाबाद : **वीरेंद्र सिंह ठाकुर** :2870167

मूल्य : एक प्रति 15 रुपये

द्विवार्षिक : 100 रुपये

आजीवन सदस्य : 1000 रुपये

विदेश में

एक प्रति : US $3, द्विवार्षिक : US $20,

आजीवन : US $250

रचना और रचनाकार

पाठकीय पन्ना /2

संपादकीय /3

विचार-प्रवाह

हिंदी संस्कृति और राष्ट्र निर्माण
- रवि भूषण /4

साहित्य

संस्मरण-रेखाचित्र: भ्रांति और स्थिति
- प्रो. डी.आर. ब्रह्मचारी /8

रेणु-साहित्य में सामाजिक एवं राजनीतिक चेतना
- प्रो. रामदेव प्रसाद /11

कहानी

पुनर्मिलन
- कमल किशोर दुबे 'कमल' /14

चाँदनी में लिपटा पलाश
- प्रो. लखनलाल सिंह 'आरोही' /15

व्यंग्य

देख ली तेरी मुंबई नगरी
- वीरेंद्र कुमार सिन्हा /12

साहित्य समाचार /18

गोपीवल्लभ पर विशेष

साक्षात्कार -सिद्धेश्वर /23

समीक्षा -डॉ. नंदकिशोर नवल /26

दुख का गाता.... -परिमल /28

'जन्म-मरण.... -सत्यनारायण /31

गोपी भैया -बाँके बिहारी /33

गतिविधियाँ

राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक /35

विश्व बाजार पर संगोष्ठी /37

लोकतांत्रिक व्यवस्था की घटती जवाबदेही
-सिद्धेश्वर /38

रेणु जयंती पर संगोष्ठी /40

समाचार विश्लेषण

भारतीय रेल 150वें साल में /40

स्थानीय निकायों के चुनाव /45

राजनीतिक नजरिया

कम खर्च में चुनाव -भारत ज्योति /48

कुर्सी की भूख.... -सुधीर रंजन /50

चुनावों में भाजपा को झटका
-विनय सिन्हा /52

काव्य-कुंज /54

नई पीढ़ी

राष्ट्रीय एकता और युवा पीढ़ी
-पल्लवी /55

लौट-आओ -प्राणेन्द्र /56

आधी आबादी

नई सदी में महज नारे.... -सुशीला /57

गांव-जवार

गांव में संगोष्ठी /59

श्रद्धांजलि

बालयोगी का असामयिक निधन /60

कला-संस्कृति

रमा प्रसाद: जिसके नृत्य से.... /61

संगठन

मंच: एक परिचय /62

फिल्मावलोकन /63

गोपीवल्लभ का व्यक्तित्व

भारतीय रेल 150वें साल में

राजनेताओं के आमने-सामने अब हिजड़े भी

पत्रिका-परामर्शी

□ पद्मश्री डॉ. श्यामसिंह 'शशि' □ प्रो. रामबुझावन सिंह □ श्री गिरीशचंद्र श्रीवास्तव □ श्री ज़ियालाल आर्य □ डॉ बाल शौरि रेड्डी □ श्री जे.एन.पी.सिन्हा □ श्री बाँकेनंदन प्रसाद सिन्हा □ डॉ. सच्चिदानंद सिंह 'साथी'

☆ रचनाकार के विचारों से पत्रिका-परिवार का सहमत होना आवश्यक नहीं।

बुद्धिजीवी हाशिए पर

"विचार दृष्टि" आपके कुशल संपादकीय स्पर्श से दिनानुदिन निखर रही है- मँज रही है! इस अंक की भी सारी रचनाएं मैं ध्यानपूर्वक पढ़ गया! रचनाएं सभी पठनीय और उपयोगी हैं। आपके अग्रलेख का अतिरिक्त महत्व है। देश और खासकर बिहार की राजनीति में बुद्धिजीवी हाशिए पर चले गए हैं, परिणाम है कि नेतृत्व घटियापन का शिकार हो गया है। बुद्धिजीवो भी सुविधाभोगी हो गए हैं-देश-दुनियां से कोई मतलब नहीं। राजनीति में आज क्रीम नहीं-कूड़ा है। जो बुद्धिजीवी नेतृत्व में है, वह भी क्रीम नहीं चाहता-गवारों की जमात चाहता है। प्रतिभा की आँच वह बर्दाश्त नहीं कर सकता। देश बौद्धिक नेतृत्व के अभाव में संकट से गुजर रहा है। कोई आवाम का हित नहीं चाहता, केवल सत्ता-भोग चाहता है। भाई, इस दिशा में पहल कीजिए।

प्रो० लखनलाल सिंह 'आरोही'
बांका, (बिहार)

खरीदकर पढ़ने में सुख मिलता है

राष्ट्रीय भावनाओं की त्रैमासिकी **विचार दृष्टि** का अंक जनवरी-मार्च 2002 मिला। आद्योपांत देख गया। सचमुच पत्रिका खरीदकर पढ़ने में सुख मिलता है संपादकीय का एक-एक शब्द मन मस्तिष्क को एक अनिर्वचनीय सुख का अनुभव करा गया। मुख्य पृष्ठ पर दो साहित्यकारों, साथ-साथ एक डाक्टर का भी चित्र छापकर आपने एक प्रेरणादायक काम किया है। कौन किसको पूछता है? सब तो अपनी छवि सर्वत्र बनाने में व्यस्त हैं। आपने समूचे राष्ट्र का दर्शन कराते-कराते पटना के साहित्यकारों का मन मोह लिया है। लोकभाषा के गीतकार अलबेला जी का दुखद अंत आज तक और न जाने कब तक दिल को सहलाता रहेगा। उपर्युक्त इन तीनों विभूतियों से मेरा गहरा लगाव था।

पत्रिका फले-फूले और आपका संपादकीय विशेष रूप से भविष्य में जाकर संग्रहीत हो, पुस्तक का रूप ले सके, इसकी भी ईश्वर से कामना करता हूँ।

अवध बिहारी जिज्ञासु, पटना

मुझे भी जोड़िए

विचार दृष्टि पत्रिका जनवरी-मार्च की एक प्रति सादर प्राप्त हुई। मैं भी चेन्नई इकाई का सदस्य बनना चाहूँगा ताकि मैं भी हिन्दी साहित्य की सेवा कर सकूँ। आप उचित समझें तो अवसर प्रदान करें।

सी०आर० वासुदेवन 'शेष', चेन्नई

विचार देनेवाली पत्रिका

विचार दृष्टि का अक्टूबर-दिसम्बर 2001 अंक प्राप्त हुआ। पढ़कर अति प्रसन्नता हुई। राष्ट्रीय परिदृश्य को विचार देनेवाली यह पत्रिका वास्तविक अर्थ में सराहनीय है।

कमल किशोर दुबे 'कमल',
अहमदाबाद

दो दूक, हर दृष्टि पर खरा

बेशक आज हम भारतीयों को आस्था, मजहब, दीन, जाति के आधार पर नफरत की सीख फैलानेवाली विचारधारा को त्यागना पड़ेगा। अपनी संप्रभुता की रक्षा करना हर राष्ट्रवासी का कर्त्तव्य है। राष्ट्रीयता को अपनाना ही होगा।

संपादकीय में राष्ट्र के हर नागरिक को कुपथ से सुपथ की ओर जाने की प्रेरणा दी गई हैं जो काबिलेतारीफ है।

दिलीप कुमार सिंह
मंडावली, दिल्ली

सही दिशा में सशक्त कदम

न्यायमूर्त्ति श्री बनवारी लाल यादव की अध्यक्षता में मंच की राष्ट्रीय कार्यकारिणी का गठन मंच को मजबूत करने की दिशा में सही कदम है।

विचार दृष्टि के जनवरी-मार्च 2002 अंक में नवनिर्वाचित पदाधिकारियों के नाम व संपर्क सूत्र सोने पे सुहागा के समान है।

इन नवनिर्वाचित पदाधिकारियों को हमारी ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ।

दिलीप, रेलवे कॉलोनी, दिल्ली

जरा इनकी भी सुनें

प्रधानमंत्री ने संसद को गुमराह और देश के साथ विश्वासघात किया है।

-सपा.प्रमुख मुलायम सिंह यादव

जनता ने हमारी कमियों के लिए दंडित किया है। वह अपेक्षा करती है कि हम पिछली गलतियों से सबक लें तथा अपनी कमियों से उबरें।

-राज्यों के चुनावों में भाजपा की पराजय पर

-अटल बिहारी वाजपेयी

हम न्यायालय के आदेश का स्वागत करते हैं। यह आदेश ऐतिहासिक है।

-राजग प्रमुख लालू प्रसाद यादव

अयोध्या मुद्दे पर सरकार की दो मुंही बातें व दोहरे मापदंड का संसद में पर्दाफाश करेंगे।

-विपक्ष की नेता सोनिया गाँधी

सचिन विश्व के सर्वश्रेष्ठ बल्लेबाज हैं।

-ब्रायन लारा
वेस्टइंडीज के स्टार बल्लेबाज

फिर से थियेटर में लौटना चाहता हूँ।

-फिल्म अभिनेता
नसीरूउद्दीन साह

संपादकीय

गाँधी की धरती पर हैवानियत की हद

गाँधी की धरती गुजरात के गोधरा स्टेशन के पास साबरमती एक्सप्रेस से यात्रा कर रहे कारसेवकों पर हजारों उग्रवादियों द्वारा किए गए हमले के बाद, राज्य की राजधानी अहमदाबाद सहित 37 छोटे-बड़े शहरों में हिंसा और आगजनी का जो तांडव हुआ, वह हैवानियत की हद को पार कर गया। गुजरात का इतिहास कई बार दंगों के दंश से दागदार हो चुका है। सत्य और अहिंसा के पुजारी की इस भूमि पर स्थित **साबरमती आश्रम** के नाम से जहाँ भारतवासियों के मन में श्रद्धा व सम्मान उमड़ पड़ते हैं, वहीं एक भाई दूसरे भाई के खून का प्यासा हो जाए, इसे दुखदायी और शर्मनाक नहीं तो और क्या कहा जाएगा। क्या इस बात से कोई इनकार कर सकता है कि हिंदू और मुसलमान दोनों ही एक ऐसे राष्ट्र के नागरिक हैं, जिसकी अपनी एक विशिष्ट पहचान और परंपरा है, उनके अपने आदर्श और मूल्य हैं। इस राष्ट्र में सभी धर्म, पंथ, आस्था और विश्वास आदर के पात्र हैं क्योंकि कोई भी धर्म किसी से घृणा नहीं सिखाता। किंतु इन धर्मों के मुट्ठी भर कट्टरपंथी उग्रवादियों व देशद्रोहियों से सांठ-गांठकर न केवल हिंदू-मुस्लिम एकता के लिए खतरे बन गए हैं बल्कि दोनों संप्रदाय के लोगों को संदेह और अविश्वास के कठघरे में खड़े कर देते हैं। जिस प्रकार इस्लाम के कट्टरपंथी गुट भारतीय इस्लाम की आवाज बन गए हैं, ठीक उसी प्रकार हिन्दू कट्टरपंथी गुट भी पूरे हिन्दू समुदाय का प्रतिनिधित्व करने का ठेका ले रखा है।

दरअसल इस देश में इन कट्टरपंथियों की हैवानियत पर पहुँचने का और कारणों सहित अयोध्या में मंदिर-मस्जिद के निर्माण का झगड़ा भी एक कारण है जिसकी वजह से दोनों धर्मों के कट्टरपंथियों में उन्माद पैदा हुआ है। दुर्भाग्य यह है कि एक लम्बे अरसे से इस समस्या का समाधान निकालने का न तो भारत सरकार ने कभी गंभीरता से प्रयास किया और ना ही अदालतों में वर्षों से पड़े इसके विवादों के फैसले में सक्रियता दिखाई दी जिसका परिणाम सामने है। गुजरात के सांप्रदायिक दंगे में सैकड़ों बेगुनाहों की जानें गयीं और करोड़ों की संपत्ति का नुकसान हुआ। हालाँकि इसके पीछे विदेशी ताकतों के षड्यंत्र से इनकार नहीं किया जा सकता। विदेशी ताकतों के समर्थन से जो आतंकवादी शक्तियाँ भारत में सक्रिय हैं उनका तो उद्देश्य ही है कि यह देश साम्प्रदायिक दंगों की आग से जल उठे।

पिछले दिनों गुजरात में जो घटनाएँ हुईं, भारत सरकार के गृह मंत्रालय को जो तथ्य मिले हैं उससे संदेह की सुई सीधे तौर पर आईएसआई पर जा रही है क्योंकि स्थानीय स्तर के अपराधियों के बूते इतनी वीभत्स घटना को अंजाम देना संभव नहीं दिखता। इसलिए घटना की प्रकृति से शक आईएसआई पर जाना स्वाभाविक है। वैसे भी भारत में सांप्रदायिक दंगे कराना आईएसआई की रणनीति में हमेशा से रहा है और इसलिए उसने पूरी तैयारी के साथ साबरमती एक्सप्रेस पर हमला करके उन कोचों को ही निशाना बनाया, जिनमें कारसेवक सवार थे। गुजरात में गोधरा रेल आगजनी कांड की साजिश रचनेवाला हरकत उल जिहाद का एक इस्लामी आतंकवादी प० बंगाल की सीमा से बंगला देश भागने की कोशिश करते समय गिरफ्तार किया गया।

खैर, जो लोग भी इस घटनाक्रम के लिए जिम्मेदार हैं, पहले उनकी पहचान कर उन्हें दंडित किया जाना चाहिए और, कट्टरपंथियों तथा आतंकवादियों के इस खतरे से इस देश के हिंदू और मुसलमान दोनों को सावधान और चौकस रहने की आवश्यकता है। इस सन्दर्भ में दोनों समुदाय के उदारवादी लोगों का दायित्व बढ़ जाता है क्योंकि आपसी भाईचारा और सद्भाव का वातावरण बनाने में वे अहम भूमिका अदा कर सकते हैं।

सरकार और प्रशासन के भरोसे सब कुछ छोड़ा नहीं जा सकता क्योंकि गुजरात सरकार की उदासीनता रेल घटनाक्रम में देखी गयी है जिसने अशांति के दो दिन बाद सेना की टुकड़ियों की माँग की। इस संदर्भ में यह अच्छी बात रही कि देश के तमाम प्रमुख मुस्लिम संगठनों ने गुजरात की रेल हत्याकांड की भर्त्सना की। वैसे भी देश के तमाम धर्मनिरपेक्ष ताकतों को अपनी ईमानदारी का परिचय देते हुए निर्भीक ढंग से गुजरात की घटनाओं व वहशियों को हवा-पानी देने से बचना चाहिए तथा इस संकट की घड़ी में राजनीति, विचारधारा और तमाम तरह की संकीर्णताओं से ऊपर उठकर देश और मनुष्यता को बचाने का संकल्प लेना होगा, क्योंकि दो समुदायों के बीच जब आपसी नफरत खड़ी हो जाती है, तो वह जल्दी मिटती नहीं। और, जो जख्म पैदा हो जाते हैं, वे जल्दी भरते नहीं।

सच तो यह है कि कट्टरपंथी चाहे किसी भी धर्म के हों, उन्हें अपने धर्म से कुछ लेना-देना नहीं है। वे तो केवल लोगों के दिल में आग भड़काकर, उस आग में अपनी रोटी सेंकना चाहते हैं। और, यह भी सच है कि सभी धर्मों में अधिकांश लोग ऐसे हैं जिन्हें मंदिर-मस्जिद निर्माण से कुछ वास्ता नहीं, कुछ सिरफिरे लोग ही ऐसे हैं, जिन्हें देश के करोड़ों लोगों के लिए रोजी-रोटी, शिक्षा तथा स्वास्थ्य जैसी समस्याओं की नहीं बल्कि मंदिर-मस्जिद निर्माण की चिंता सताए है। सीमा पर एक ओर हमारी फौजें डटी हैं और दूसरी ओर देश के अंदर मर्यादा पुरुषोत्तम राम और बाबर के नाम पर सांप्रदायिक सौहार्द की सामाजिक बनावट को तोड़ देने का खेल जारी है। दरअसल गुजरात का दंगा महज दंगा नहीं वह उस विकृत मानसिकता का आईना है, जिसमें हिंदू और मुस्लिम मजहब के कट्टरपंथियों ने जहर घोल दिया है।

गुजरात की इस शर्मनाम घटना से यह बात जाहिर हो गयी है कि 21वीं सदी में प्रवेश करने के बाद भी हम हिंदुस्तानी, धर्मांध मध्ययुग में ही रह रहे हैं। जब तक उदारवादी सहिष्णु मानवतावादी चुप्पी साधे रहेंगे, निर्दोष शिकार होते रहेंगे। इसलिए हमें अपनी चुप्पी तोड़नी होगी और दोहरे मापदंडों एवं पाखंड से मुक्त होना होगा।

हिंदी संस्कृति और राष्ट्र-निर्माण

❑ रवि भूषण

21वीं सदी के इस प्रथम दशक में हिंदी प्रदेश 20वीं सदी के दशकों की तुलना में कई अर्थों में भिन्न है। 1907 ईसवीं में प्रेमचंद ने अपनी पहली कहानी **संसार का सबसे अनमोल रत्न** में अपने वतन की हिफाजत में गिरनेवाले खून के आखिरी कतरे को विश्व का सबसे कीमती रत्न माना था। और, 1996 में भारत के राष्ट्रीय चिह्न का दिल्ली के कई स्थानों सहित कश्मीर में अपमान हुआ। नाश्ते के प्लेटों पर और कागजी रूमालों पर अंकित राष्ट्रीय चिह्न गौरवशाली दिनों की याद भर कर सकते हैं क्योंकि राष्ट्र चिह्न सजावट के लिए नहीं होते और, न जूठे प्लेटों तथा हाथ पोंछकर फेंक दिये गये कागजी रूमालों में छपाई के लिए होते हैं। साहित्यकारों और पत्रकारों के लिए यह साधारण बात थी और इनके लिए यह आवश्यक भी नहीं था कि वे मौखिक स्तर पर ही इस संबंध में पदाधिकारियों का ध्यान आकृष्ट कराते या अपना विरोध दर्ज करते। केवल राष्ट्रीय चिह्न की ही बात नहीं, जरदे की पुड़िया का नाम 'तिरंगा' है, जिसे फाड़कर फेंक दिया जाता है और 'तिरंगा' 'लिबर्टी' जूते के नीचे या तो मसला जाता है या गंदगी में मिल जाता है। शब्दों, चिह्नों और प्रतीकों आदि के साथ आज हमारा संबंध और सरोकार स्वाधीनता आंदोलन के दिनों में इनके प्रति हमारे सरोकार से एकदम अलग है। औपनिवेशिक युग में फैलने वाले राष्ट्रीय जागरण की लहर सत्ता के हस्तानांतरण के पश्चात क्यों मंद पड़ गयी? उस समय संस्कृति और राजनीति ने मिलकर समाज को एक नयी दिशा देने का जो कार्य किया था, वह बाद के वर्षों में क्यों स्थगित हो गया? क्या हम सचमुच मीर और मिर्जा (शतरंज के खिलाड़ी) के वंशज होकर रह गये, जिनमें 'सामाजिक भावों का अधोः पतन' हो गया था या फिर हमारे लिए अपनी परंपरा और संस्कृति का कोई महत्व ही नहीं रहा?

> हिन्दी प्रदेश के ऐतिहासिक तथा सांस्कृतिक अवदान को अपने समय में अंग्रेजों ने नहीं स्वीकारा, पर इस प्रदेश के निवासियों में कई ऐसे व्यक्ति थे, जिन्होंने इस भू-भाग के अध्ययन-मनन में अपने को लीन कर दिया।

हिंदी संस्कृति हिंदीभाषी क्षेत्र (बिहार, झारखंड, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, राजस्थान, हरियाणा उत्तरांचल, छत्रीसगढ़, झारखण्ड, हिमाचल प्रदेश और दिल्ली) की संस्कृति है। और, फिलहाल हिंदी प्रदेश एक प्रदेश न होकर दस प्रदेशों में बंटा हुआ है। 'हिंदी संस्कृति' का प्रयोग और व्यवहार नया है। डॉ० धीरेंद्र वर्मा ने 'मध्यदेशीय संस्कृति' का प्रयोग अपनी पुस्तक 'मध्यदेश' में अनेक बार किया है। हिंदीभाषी क्षेत्र पहले मध्य देश ही कहलाता था और पूरे मध्यदेश की संस्कृति मध्यदेशीय संस्कृति कहलाती थी। आर्यावर्त के पाँच भौगोलिक विभाजनों-उवीची (उत्तर), प्रतीची (पश्चिम), प्राची (पूर्व) दक्षिण और मध्य में मध्यदेश मध्य भाग ही था। मुसलमान शासकों के आगमन के पूर्व तक यह भाग मध्यदेश कहा जाता रहा है। इसकी भौगोलिक सीमा कभी स्थिर नहीं रही। ऐतरेय ब्राह्मण, मनुस्मृति, विनयपिटक, वराहमिहिर की वृहत्संहिता, फाहियान और अलबेरूनी के यात्रा-वृत्तांतों के अनुसार यह सीमा घटती-बढ़ती रही है।

मुसलमान शासकों ने 'मध्येदेश' के स्थान पर 'हिंदुस्तान' शब्द का प्रयोग किया और आधुनिक काल में इसे 'हिंदी प्रदेश' कहा जाने लगा।

भारतवर्ष के इतिहास में इस प्रदेश का अमिट और असाधारण महत्व है। वैदिक संहिता, ब्राह्मण ग्रंथ, उपनिषद, रामायण, महाभारत – सबकी रचना हिंदी प्रदेश में ही हुई। मौर्य तथा गुप्त साम्राज्य यहीं थे और दिल्ली अनेक साम्राज्यों का केंद्र बना रहा।

हिंदी प्रदेश के ऐतिहासिक तथा सांस्कृतिक अवदान को अपने समय में अंगरेजों ने नहीं स्वीकारा, पर इस प्रदेश के निवासियों में कई ऐसे व्यक्ति थे, जिन्होंने इस भू-भाग के अध्ययन-मनन में अपने को लीन कर दिया। धीरेंद्र वर्मा को अपने विद्यार्थी जीवन में ही पिता से 'मध्यदेश' की संस्कृति के अध्ययन की प्रेरणा प्राप्त हुई थी। उन्होंने अपनी पुस्तक 'मध्येदेश' अपने अत्यन्त उज्वल इतिहास तथा असाधारण शक्ति के प्रति उदासीन मध्यदेश के जनपदवासियों को समर्पित की।

धीरेन्द्र वर्मा से लेकर सुप्रसिद्ध समाजशास्त्री पी०सी० जोशी तक हिंदी प्रदेश को 'भारत का हृदय' मानते हैं। ईसा पूर्व ढाई-तीन-हजार वर्ष से लेकर अब तक के कुल लगभग पाँच हजार वर्षों का इस प्रदेश का सांस्कृतिक इतिहास क्या है? पाँच हजार वर्ष के इतिहास में सबकुछ ग्राह्य है या त्याज्य? क्या सैकड़ों-हजारों वर्ष पहले की बात करना पुनरूत्थानवाद है? इस लंबे दौर में केवल वर्णाश्रम व्यवस्था है, या इसके विपरीत हिंदी प्रदेश की संस्कृति आज भी हमारे लिए उपयोगी और जरूरी है? क्या सचमुच हिंदी वैचारिक संकट से ग्रस्त है या यह संकट केंद्र में बैठे और जनमे लोगों का संकट है? क्या सदी के इन अंतिम वर्षों में वर्णाश्रम की विचारधारा पूरी तरह हावी है या यह एक संक्रमण कालीन स्थिति है, जिसकी पीड़ा 'संक्रमण की पीड़ा' (श्यामाचरण दुबे)

है और संस्कृति 'त्रिशंकु' बनकर रह गयी है? क्या सत्ता की राजनीति के साथ 'वर्चस्व' की संस्कृति का कोई सम्बन्ध है और संस्कृति के इस 'वर्चस्व और प्रतिरोध' (पुरूषोत्तम अग्रवाल) में नव औपनिवेशिकता तथा उसके विरूद्ध राष्ट्रीय चेतना के विकास का कोई स्थान नहीं है? क्या हिन्दी संस्कृति पर कोई भी विचार हिन्दी प्रदेश और हिन्दी जाति पर विचार किये वगैर संभव और उचित है? क्या अब हमें राष्ट्र-निर्माण की कोई आवश्यकता नहीं है और हमारा राष्ट्र विकसित तथा सुगठित राष्ट्र के रूप में विश्व-प्रसिद्ध है? क्या आज अधिसंख्य राजनेता जो आवारा और राष्ट्रद्रोही खेल रहे हैं, उसके प्रतिरोध में संस्कृति कर्मियों को उठ खड़े होनें की स्थिति उत्पन्न नहीं हुई है? क्या राष्ट्र निर्माण हिन्दी संस्कृति के बगैर संभव है? क्या आज हम बिना आत्मगौरव और आत्मसम्मान के सांस्कृतिक पहल कर सकते हैं? क्या हिन्दी संस्कृति का हिन्दी की जातीय चेतना से कोई सम्बन्ध नहीं है और अगर है तो इस जातीय चेतना को विकसित करने के मार्ग क्या हैं?

क्या संस्कृति के प्रश्न को आज दो हजार वर्ष पहले के भारत या हिन्दी प्रदेश से जोड़कर देखना संगत है- बुद्ध और महावीर के समकालीन सुधार आन्दोलनों के साथ या निजीकरण, उदारीकरण और खगोलीकरण के उस त्रिक के साथ जो पूरे राष्ट्र को एक नयी गुलामी के दौर में धकेल रहा है। हिन्दी प्रदेश को 'बीमारू' राज्य तथा 'काऊबेल्ट' कहकर मखौल उड़ाया जाता है तथा उसके भीतर हीन भाव फैलाया जाता है। दीन-हीन जाति राष्ट्र का निर्माण नहीं कर सकती। "जिस देश की जनता को आत्मगौरव और आत्मसम्मान नहीं होगा, वह क्या संघर्ष करेगी? जहाँ अपनी भाषा के प्रति, अपने साहित्य के प्रति अपनी संस्कृति के प्रति सम्मान भाव नहीं होगा, वहाँ अपनी राजनैतिक मुक्ति की कामना और चेष्टा भी नहीं हो सकती।" (पूरनचंद जोशी: 'अवधारणाओं का संकट' 1995, पृष्ठ 47)

स्वाधीनता आन्दोलन के दौर में और उस समय भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में भी किसी ने यह अनुमान भी नहीं किया था कि स्वतंत्र भारत में राज्य की संरचना साम्राज्यिक होगी, राज्यक्रेन्द्रित और नियंत्रित होगी, नौकरशाह प्रमुख होंगे और समूचे समाज को वह अपने अधीन कर लेगी। राज्य के इस वर्चस्व और आतंक को सीमित तथा नजरअंदाज कर संस्कृति पर किया गया कोई भी विचार सही नहीं होगा क्योंकि राज्य ने शिक्षा और संस्कृति के विकास में अपनी कोई सराहनीय भूमिका अदा नहीं की। सत्ता हस्तान्तरण के पश्चात् साम्राजिक मॉडलों का ही यह दुष्परिणाम है कि आज समूचा राष्ट्र संकटग्रस्त है और संस्कृति का प्रश्न नहीं रह गया है। भारतीय संविधान 1935 के साम्राज्यिक संविधान की आवृत्ति है, नौकरशाही 'भारत में शक्तिशाली नियंत्रक संस्था है, इसलिए यह आश्चर्य नहीं होना चाहिए कि संस्कृति भी नौकरशाहों के द्वारा नियंत्रित हो या उसकी दिशाएँ वे निर्धारित करें। सेठी के अनुसार भारतीय समाज का

क्या राष्ट्र निर्माण हिन्दी संस्कृति के बगैर संभव है? क्या आज हम बिना आत्मगौरव और आत्मसम्मान के सांस्कृतिक पहल कर सकते हैं?

बड़ी तीव्रता से विभाजन अंग्रेजी भाषा ने किया है और भारतीय भाषाओं की कीमत पर अंग्रेजी का यह एकाधिकार कायम है, जिसने देश के बाह्य और आन्तरिक, सांस्कृतिक और शैक्षिक स्तरों पर दूरगामी प्रभाव डाला है। सत्ता के हस्तान्तरण के बाद सारी व्यवस्था सामाज्यिक रही। संविधान, न्यायपालिका, शिक्षासंस्थान सब सही। स्वतंत्र भारत में हमने अपनी आवश्यकताओं के अनुरूप अपनी कोई व्यवस्था निर्मित नहीं की। साम्राज्यिक व्यवस्था का उद्देश्य भारत का शोषण था और जब वही व्यवस्था कायम रही, तो फिर शोषण किस प्रकार समाप्त होता? वह नये-नये, आकर्षक और भड़कीले रूपों में पसरता गया और अंग्रेजों द्वारा छोड़ी गयी अर्ध सामंती, अर्ध औपनिवेशिक व्यवस्था' आज नवसामंती और नवऔपनिवेशिक व्यवस्था बनकर अपने सारे कार्य पूरे कर रही है और इसके विरूद्ध प्रतिरोध नगण्य है। सरकार राज्य का एक अंग मात्र है और इस अंग को ही अंगी मान लिया गया तथा लोकतंत्र का अर्थ महज चुनाव बन कर रह गया। ऐसी दशा में संस्कृति का रूप, अर्थ और चरित्र भी बदलता चला गया है। एक प्रकार की वर्णशंकर संस्कृति का जन्म हुआ, संस्कृति को शहर केन्द्रित मान लिया गया और शिक्षित वर्ग की संस्कृति पर ही विचार किया जाने लगा। इसका दुष्परिणाम यह हुआ कि संस्कृति का जो रिश्ता मूल्यों और नैतिकता से था, वह समाप्त हुआ और यहाँ बल देकर यह कहने की जरूरत है कि मूल्याधारित समाज का अर्थ वर्णाश्रम व्यवस्था के अपने मूल्य मात्र ही नहीं थे। सामाजिक मर्यादा को आरोपित मर्यादा मानकर क्या हम चन्द उदाहरणों के द्वारा हजारों वर्ष के भारतीय मूल्यों/मर्यादाओं को एक झटके में यह कहकर खारिज कर सकते हैं कि इन मर्यादाओं का संबंध 'सवर्ण पुरुषों के सामाजिक-सांस्कृतिक वर्चस्व' से है? इससे यह निष्कर्ष निकला कि हमारी परम्परा में सार्थक और प्रगतिशील तत्त्व कम हैं। यह निष्कर्ष कम, मन का फितूर अधिक है। इसका यह अर्थ भी नहीं है कि पुनरूत्थानवाद और मूलवाद समाज में नहीं है। विचार का विषय यह है कि राज्य ने इस पर प्रहार किया या इसे चुमकारा-पुचकारा। राज्य के साथ ये पुनरूत्थानवादी शक्तियाँ समय-समय पर जुड़ी या नहीं? हिन्दी प्रदेश में क्या राज्य के सहयोग के बिना ही पुनरूत्थानवादी शक्तियाँ फैली? बाबरी मस्जिद के ध्वंस के समय केन्द्र की कांग्रेसी सरकार क्या कर रही थी और स्वतंत्र भारत में सरकार और राज्य ने शिक्षा, भाषा और संस्कृति को कितना और किन रूपों में महत्व दिया? संस्कृति की गतिशीलता क्यों अवरूद्ध हुई? जिस संस्कृति का श्रम और उद्यम से अभिन्न संबंध है, उस श्रम और उद्यम को स्वतंत्र भारत में कितना महत्व मिला व श्रम की संस्कृति को हमने कब और किस तरह उपयोग की संस्कृति में बदल डाला और उसके विरोध में उपभोक्तावादी संस्कृति को ला खड़ा किया- इस पर विचार किये बगैर सांस्कृतिक संकट की पहचान नहीं हो सकती?

हिन्दी संस्कृति की रीढ़ हिन्दी प्रदेश की जनता है जो आज भी अधिक संख्या में गाँवों में निवास करती है। इस संस्कृति का 'देहाती दुनिया' से सीधा, सबल और घनिष्ठ संबंध रहा है। इस जनता ने स्वाधीनता

आन्दोलन के दौरान अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ कम लड़ाई नहीं लड़ी, लेकिन अन्य प्रदेशों - बंगाल, केरल और महाराष्ट्र की तरह की यहाँ नयी लहर अधिक नहीं उठी। भक्ति-आन्दोलन के बाद इस विशाल भू-भाग में कोई प्रमुख सुधारवादी आन्दोलन नहीं फैला। स्वामी दयानन्द का आर्य समाज तथा कुछ अंशों में राधा स्वामी सम्प्रदाय का धार्मिक सुधार आन्दोलन चला, लेकिन इससे सामंती शोषण से कोई मुक्ति नहीं मिली। इस विशाल भू-भाग में अक्षर ज्ञान से वंचितों की संख्या नहीं घटी। अशिक्षा, अज्ञान, दरिद्रता, अंधविश्वास आदि को इस प्रदेश के सुशिक्षित जनों ने भी मिल-जुलकर दूर करने में सार्थक पहल नहीं की। 'सांस्कृतिक उन्नति तथा सामाजिक सुधार के अभाव' ने इस प्रदेश को और विकट-विकराल दशा में ला खड़ा किया। स्वाधीनता आन्दोलन के दौर में संस्कृति और राजनीति-दोनों क्षेत्रों में जो स्वस्थ तत्त्व विद्यमान थे, वे बाद में नष्ट कर दिये गये। हिन्दी प्रदेश के मध्यवर्ग ने बाद के वर्षों में अपने क्षेत्र का सांस्कृतिक विकास कम किया। सत्ता और राज्य के साथ उसके संबंध प्रगाढ़ होते गये और गाँवों में रहनेवाली जनता से उसका जीवित सम्पर्क टूटता चला गया। इसका परिणाम यह हुआ कि गाँवों और शहरों की सांस्कृतिक गतिविधियों में किसी प्रकार का जीवन्त और अभिन्न रिश्ता नहीं रहा, जिससे संवादहीनता बढ़ी। अपनी भाषा के प्रति वह लगाव नहीं दिखाई पड़ा जो बंगाली समाज, मराठी समाज, मलयाली समाज आदि में दिखाई पड़ता है। जातीय चेतना का विकास नहीं हुआ। उसके सामाजिक और राष्ट्रीय सुफल की अधिसंख्य शिक्षितों और बुद्धिजीवियों ने चिन्ता नहीं की। उल्टे, वे उन्हीं पर पिल पड़े। शिक्षित समुदाय के एक बड़े हिस्से ने अपने को सामान्य जन से काट लिया तथा श्रम और उद्योग के स्थान पर धनोपार्जन के नये-नये तरीके निर्मित किये गये। पहले संस्कृति के केन्द्र जहाँ भी थे, वे न रहें और सारा रास्ता दिल्ली की ओर खुल गया। 1953 में ही रामधारी सिंह 'दिनकर' ने दिल्ली को 'वैभव की दिवानी' के साथ कृषक-मेघ की रानी दिल्ली भी कहा था और अब 1991-92 में जयदेव सेठी दिल्ली को स्यूडो इस्टेटमेंट सिटी कहते हैं।

भारत का हर तीसरा व्यक्ति हिन्दी भाषी है और संसार का हर बीसवाँ व्यक्ति हिन्दी भाषी है। इसलिए हिन्दी प्रदेश पर हिन्दी भाषी जनता पर एक बड़ा दायित्व है और वह राष्ट्र निर्माण का दायित्व है। हिन्दी भाषी जनता की संख्या भारत में सर्वाधिक है और भारत की सबसे बड़ी जाति हिन्दी जाति है। जब तक जातीय चेतना विकसित नहीं होगी, हिन्दी प्रदेश का विकास नहीं होगा और हिन्दी प्रदेश के विकास के बिना क्या राष्ट्र-निर्माण संभव है? राष्ट्र- निर्माण का कार्य अभी अधूरा है। भारत को "बिना राष्ट्र का राज्य" (ए स्टेट विदाउट नेशन) कहा गया है। बहुजातीय राष्ट्र होने के कारण भारतीय राष्ट्र का विकास तबतक संभव नहीं है जब तक भारत की सभी जातियाँ विकसित नहीं हो जाती और ये जातियाँ मिल कर ही राष्ट्र-निर्माण कर सकती हैं। इस जातीय भावना और जातीय चेतना को अनेक तरीकों से अवरूद्ध किया जाता है। धर्म और जाति (वर्ण, कास्ट) के नाम पर। नतीजा हमारे सामने है कि हिन्दी प्रदेश में जातीय चेतना विकसित नहीं हो सकी, लेकिन वर्णवाद, पिछले एक दशक में पूरी तरह फैला। आज राष्ट्र और राष्ट्रवाद पर चर्चा बहुतों की दृष्टि में फिजूल हैं। पर बिना राष्ट्र-निर्माण और चेतना के आज के नवऔपनिवेशिक तथा नवसाम्राज्यवादी देशों का मुकाबला भी नहीं किया जा सकता। यह ध्यान देना चाहिए कि **एशिया के दो मुल्क- जापान और चीन अपनी शर्तों पर ही अपने यहाँ का बाजार दूसरों के लिए खोलते हैं। भारत की तरह उनका रवैया घुटना टेक नहीं है। जापान और चीन की संस्कृति भी इन्हीं कारणों से बची हुई है। अपने देश के विकास की चाभी दूसरे देश को सौंपने का मतलब परनिर्भरता है और किसी भी राष्ट्र का विकास परनिर्भरता के इस सिद्धांत से नहीं हो सकता।** यह दासता को स्वीकारने का सिद्धांत है और यह दासता सामाजिक-राजनैतिक तथा आर्थिक- सांस्कृतिक सभी क्षेत्रों की है। भारत सरकार की नयी आर्थिक नीति दासता की नीति है और यह दासता महज आर्थिक क्षेत्र की न होकर सांस्कृतिक क्षेत्र की भी है। राष्ट्रीयता की बात न करें और राष्ट्र-निर्माण के लिए चिन्तित न हों तो साम्राज्यवादियों का खेल और आसान हो जाता है। भाषा वैज्ञानिक हिन्दी भाषा की पाँच उपभाषाएँ और अट्ठारह बोलियाँ मानते हैं। इनमें जो-जो बोलियाँ जिन क्षेत्रों में बोली जाती हैं, उन क्षेत्रों की अपनी संस्कृति है और ये संस्कृतियाँ एक दूसरे से भिन्न नहीं हैं, विशाल प्रदेश होने के कारण तथा प्रतिरोध की क्षमता को देखते हुए समय-समय पर इन बोलियों में टकराव उत्पन्न कराये जाते हैं और उनकी पारस्परिक एकता पर विविध रूपों से प्रहार किया जाता है- कभी क्षेत्रीय चेतना और जनपदीय चेतना को फूँक मारकर- और इससे जातीय चेतना विकसित नहीं हो पाती। यह जातीय चेतना क्रमशः कमजोर की गयी है। इकबाल ने जब अपने को 'हिन्दी हैं हम, वतन है हिन्दोस्तां हमारा' कहा तो अपने को 'हिन्दी' कहते हुए उन्होंने अपनी जातीय चेतना व्यक्त की थी, पर इकबाल जैसे उदाहरण नहीं के बराबर हैं। हिन्दी जाति का व्यक्ति हिन्दी कहने में कोई गर्व महसूस नहीं करता है। राष्ट्र निर्माण बिना हिन्दी की जातीय चेतना के विकास के नहीं हो सकता और यह जातीय चेतना शिक्षित जनों में नहीं के बराबर है। यह 'मानसिक गुलामी' है और हीनता की चरम स्थिति है। हीनता की इस चरम स्थिति में ला पहुंचाने का कार्य राजनीतिज्ञों ने किया है। आज आवश्यकता सांस्कृतिक विकास और नवजागरण की है। संस्कृति का व्यवसाय और संस्कृति का निर्माण दो अलग-अलग चीजें है। संस्कृति के निर्माता सामान्य जन हैं। उनसे कटकर जिस तरह भारतीय राजनीति दो कौड़ी की होकर रह गयी है, इसी प्रकार उनसे कटकर हमारा संस्कृति कर्म भी दो टके का होकर रह जायेगा और ऐसा संस्कृति कर्म राष्ट्र का ध्वंस ही कर सकता है, निर्माण नही। आज राष्ट्र निर्माण का सारा गुरूतर दायित्व संस्कृतिकर्मियों पर है, लेकिन जिस तरह अपसंस्कृति का प्रचार-प्रसार हो रहा है, उसमें बिना मुठभेड़ के कुछ भी असंभव है।

आजादी की स्वर्ण जयन्ती मनायी गई। राष्ट्र-चिन्ह और तिरंगे की बातें हुई लेकिन सबके चेहरे हमारे सामने हैं। आजाद हिन्दुस्तान के आधे शतक से अधिक का इतिहास हमारे समक्ष है और अब राष्ट्र-निर्माण का कार्य भ्रष्ट राजनेताओं के जिम्मे नहीं छोड़ा जा सकता। संस्कृतिकर्मियों को और विशाल आबादी वाले हिन्दी प्रदेश के संस्कृतिकर्मियों को जनता से अपने को जोड़ना होगा, तभी हिन्दी संस्कृति का विकास होगा, राष्ट्र-निर्माण संभव हो सकेगा। और अगर ऐसा नहीं होता है, तो आप ही बताइए रास्ता किधर से है?

DENSA

PHARMACEUTICALS PVT. LTD.

Mr. Devendra Kumar Singh
C. M. D.

022 - 8974777(O)
Fax : 8974777(F)
9525255285

Office :

Anurag Mansion, Shiv Vallabh Road
Ashok Van, Dahisar (East), Mumbai-400 068

Factory :

Plot No. 10, dewan&Sons, Udyog Nagar, Palghat,
Distt. - Thane, Mumbai (Maharashtra)

संस्मरण-रेखाचित्र : भ्रांति और स्थिति

❑ प्रो. डी.आर.ब्रह्मचारी

लंबा, चौड़ा, तगड़ा है बदन इनका। पेशानी चौड़ी, भवें बड़ी सघन और उभरी। आँखों के कोने में कुछ लाली और पुतलियों में कुछ नीलेपन की झलक, नाक असाधारण ढंग से नुकीली। दाढ़ी सघन, इतनी लंबी की छाती तक पहुँच जाए-वह छाती जो बुढ़ापे में भी फैली-फूली हुई। सिर पर हमेशा की तरह एक दुपलिया टोपी पहने होते और बदन में निमस्तीन। कमर में कच्छेवाली धोती, पैर में चमरौंधा जूता। चेहरे से नूर टपकता, मुँह से शहद झरता। भले मानसों के बोलने-चालने, उठने-बैठने के कायदे की पूरी पाबंदी करते वह।

-सुभान खाँ: बेनीपुरी।

उसकी मुखाकृति साँवली और सौम्य थी; पर पिचके गालों से विद्रोह करके नाक के दोनों ओर उभरी हुई हड्डियाँ उसके कंकाल-सहोदर बनाए बिना नहीं रहती। लंबा, इकहरा शरीर भी कभी सुडौल रहा होगा, पर निश्चित आकाशवृत्ति के कारण असमय वृद्धावस्था के भार से झुक आया था। उजली छोटी आँखें स्त्री की आँखों के समान सलज्ज थीं; पर एकरस उत्साहहीनता से भरी होने के कारण चिकनी काली मिट्टी से गढ़ी मूर्ति में कौड़ियों से बनी आँखों का स्मरण दिलाती रहती थीं। काँपते ओठों में से निकलती हुई गले की खरखराहट सुननेवाले को वैसे ही चौंका देती थी, जैसे बाँसुरी में से निकला हुआ शंख का स्वर।

-बदलू: महादेवी।

ये दोनों उदाहरण हैं संस्मरण-रेखाचित्र के जिनसे सिद्धहस्त शब्द शिल्पिता का मान होता है। साहित्य की साधना शब्दों की साधना है।

चाहे परीक्षार्थी उपाध्यर्थे अनुसंधान की अनुसंधित्सा छिटफुट उद्धरणों का संबल लेकर किसी चीज का उत्स ढूँढ़ते-ढूँढ़ते ऋग्वेद के ऋचा-सूत्रों तक पहुँच जाए किंतु, सत्य है कि जीवनी, आत्मकथा, यात्रावृत्त, संस्मरण, रेखाचित्र, रिपोर्ताज, इंटरव्यू, अभिनंदन ग्रंथ, समृतिग्रथ प्रभृति विधाएँ आधुनिककाल में पृथुल रूप से प्रकाश में आईं। अपने संस्मरणों को 'चरित लेख' का अभिधान प्रदान करने वाले जगदीश चंद्र माथुर ने भी इस तथ्य को अस्वीकार नहीं किया है- 'असल में आधुनिक पत्र-पत्रकारिता की अमूल्य देन है संस्मरण।' संस्मरण ही नहीं, ऊपर जिन विधाओं का उल्लेख है उनके पारस्परिक अंतर्संबंध को अनदेखा करना संभव नहीं। कभी-कभी तो कहानी और व्यंग्य भी इसकी परिसीमा में अंतर्मुक्त हुए से लगते हैं। असल में ये प्राचीनता की जगह आधुनिकता के फलक पर रेखांकित होते हैं जो हमारे जीवन में सभ्यता के विकास के साथ-साथ साहित्य और शिल्प के विकास के प्रत्येक जीवित जाति के नैसर्गिक नियम के सूचक प्रतीत होते हैं। विज्ञान जगत में दो नस्लों को मिलाकर तीसरी नस्ल के विकास की प्रविधि स्पष्टत: प्रचलित है।

अब तो सिद्धांत-निर्देश पर भी साहित्य-सृजन की प्रवृत्ति बढ़ी है, नहीं तो सामान्यत: लक्ष्य ग्रंथों की पुष्कलता के उपरांत ही लक्ष्य ग्रंथ तैयार होते रहे हैं, भाषा पहले व्याकरण बाद में। जीवनी-आत्मकथा -यात्रावृत्त -संस्मरण-रेखाचित्र- रिपोर्ताज- इंटरव्यू- अभिनंदन ग्रंथ -स्मृति ग्रंथ की पुष्कलता ही इस पर अलग से विचार करने का मार्ग प्रशस्त करती है, अन्यथा मात्रा की अल्पता के कारण ये स्थापित विधा-विशेष के रूप में विचार्य नहीं रहे।

हिन्दी साहित्य के इतिहास ग्रंथों में संस्मरण-रेखाचित्र के अन्तर्गत इन ग्रंथों का समावेश हुआ है-

लालतारा, माटी की मूरतें, गेहुँ और गुलाब, मील के पत्थर -**रामवृक्ष बेनीपुरी।**

अतीत के चलचित्र, स्मृति की रेखाएँ, पथ के साथी, स्मारिका, मेरा परिवार

-महादेवी वर्मा

टूटा तारा- राजा राधिका रमण प्र० सिंह।

एलबम- सत्यजीवन वर्मा।

लंका महाराजिन- ओंकार शरद।

प्राणों का सौदा, जंगल के जीव, वे गोजे कैसे हैं-

श्री राम शर्मा।

हमारे आराध्य, संस्मरण, रेखाचित्र, सेतुबंध

- बनारसी दास चतुर्वेदी।

पुरानी स्मृतियाँ, रेखाचित्र- प्रकाश चंद्र गुप्त।

रेखा और रंग- विनय मोहन शर्मा।

जिंदगी मुस्कराई- कन्हैया लाल मिश्र 'प्रभाकर'

वे दिन वे लोग- शिवपूजन सहाय।

अमिट रेखाएँ- सत्यवती मल्लिक।

रेखाएँ बोल उठीं- देवेंद्र सत्यार्थी।

रेखा और चित्र, मंटो मेरा दुश्मन, ज्यादा अपनी कम पराई- उपेंद्रनाथ अश्क।

स्मृति कण, चेहरे जाने पहचाने- सेठ गोविंद दास।

समय के पाँव- माखनलाल चतुर्वेदी।

बचपन की स्मृतियाँ, जिनका मैं कृतज्ञ- राहुल सांकृत्यायन।

स्मृतियाँ और कृतियाँ- शांतिप्रिय द्विवेदी।

दस तसवीरें, जिन्होंने जीना जाना- जगदीश चंद्र माथुर।

कुछ शब्द कुछ रेखाएँ- विष्णु प्रभाकर।

मैं भूल नहीं सकता- कैलाशनाथ काटजू।

रेखाचित्र- प्रेमनारायण टंडन।

मैं इनका ऋणी हूँ- इंद्र विद्यावाचस्पति।

प्रसाद और उनके समकालीन- विनोद शंकर व्यास।

कुछ स्मृतियाँ और कुछ स्फुट विचार-

संपूर्णानंद

नये पुराने झरोखे- हरिवंश राय 'बच्चन'

मेरे हृदय देव- हरिभाउ उपाध्याय।

जवाहर भाई: उनकी आत्मीयता और सहृदयता

-राय कृष्ण दास।

लोक देव नेहरू, संस्मरण और श्रद्धांजलियाँ

- दिनकर।

विकृत रेखाएँ : धुँधले चित्र- कुंतल गोयल।

चेतना के बिंब- नगेंद्र

घर के भीतर और बाहर- हरगुलाल।

चाँद- पद्मिनी मेनन।

व्यक्तित्व की झाँकियाँ- लक्ष्मीनारायण 'सुधांशु'

जिन के साथ जिया- अमृत लाल नागर

बीती बातें- परिपूर्ण नंद।

मेरे क्रांतिकारी साथी- क्रांतिकारी भगत सिंह।

हम हशमत- कृष्णा सोबती।

मेरे अग्रज: मेरे गीत- भारत भूषण अग्रवाल।

वन तुलसी की गंध- फणीश्वरनाथ रेणु।

रस गगन गुफा में- भगवती शरण सिंह।

इनके अतिरिक्त अन्यान्य भाषाओं से अनूदित तथा भिन्न-भिन्न पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित।

यहाँ ध्यातव्य है कि अमृत राय द्वारा संपादित **हंस** (1939) तथा बनारसी दास चतुर्वेदी द्वारा संपादित 'मधुकर' का रेखाचित्र विशेषांक (1946) बहुत पहले प्रकाश में आ चुका है।

संस्मरण- रेखाचित्र शब्द-युग्म से लगते हैं। यह सीमित शब्दों में अधिक से अधिक कहने की कला है। रेखाचित्र शिल्प है, संस्मरण या कहानी वस्तु। कहानी या संस्मरण शब्दों को फोड़कर वस्तु में प्रवेश को उत्सुक होता है, रेखाचित्र में कलात्मकता पर थोड़ा विरमना पड़ता है। इसलिए रेखाचित्र यात्रा, कहानी, संस्मरण सबके साथ घुलमिल जाता है।

कामेश्वर शर्मा के शब्दों में रेखाचित्र में जब कहानी के तत्व मिल जाते हैं तब वर्णन-प्रमुख, संस्मरण के तत्व मिलने पर स्मृति प्रमुख, निबंध के तत्व मिलने पर भाव प्रमुख नामक तीन भेद शैली-मिश्रण की दृष्टि से बन जाते हैं।

रेखाचित्र या शब्दचित्र के लिए अंग्रेजी में 'स्केच' चलता है। इसमें व्यक्ति, स्थान, दृश्य या वस्तु का शाब्दिक आकलन होता है। 'शब्द चित्र' से 'रेखाचित्र' शब्द अधिक व्यंजक है इसलिए रेखाचित्र ही अधिक प्रयोग में आता है।

12/6/1952 को इंटर लॉकेन, स्वीजरलैंड से अपने पुत्र देवेंद्र को लिखे पत्र में बेनीपुरी ने स्थान का रेखाचित्र प्रस्तुत किया है जो उनकी चित्रकारिता का एक प्रमाण है-और सुरंग पार कर जब जुंग-फ्राउ के निकट पहुंचे, चारों ओर ऊँची चोटियाँ और उनके बीच ग्लेसियर की सफेद चादर- जहाँ तक देखो। मैं तो भाव-मुग्ध होकर जुंग-फ्राउ की चोटी की तरफ दौड़ा-लेकिन लोगों ने मना किया, बर्फ पर मत दौड़िए कहीं-कहीं खड्डे हैं और प्राय: दुर्घटना हो जाती है। किंतु देवेंद्र ऐसी सफेद बेदाग चादर के नीचे सदा के लिए सो जाना क्या बुरा हो सकता है?

यहाँ 'साहित्य कोश' की यह टिप्पणी कि व्यापक रूप से संस्मरण आत्मचरित के अंतर्गत आता है प्रतिव्याप्ति से ग्रस्त है।

आत्मकथा,जीवनी और संस्मरण अलग-अलग विधाएँ हैं। संस्मरण के प्रसंग समतल धरातल में उन्नतोर्षण उत्पन्न करने में सक्षम होते हैं, जीवनी आत्मकथा के लिए उतना नहीं। विशिष्टता द्योतक अलग पक्ष है। आत्मकथा और जीवनी का प्रत्येक बिंदु स्मर्तव्य हो ही, आवश्यक नहीं, किंतु संस्मरण में इसका सचेष्ट ध्यान रखा जाता है।

ऐसे ही, रेखाचित्र-संस्मरण को लोग भ्रमवश कहानी कह डालते हैं जैसे हरिशंकर परसाई के 'भोलाराम का जीव'- विधाविशेष के रूप में प्रतिष्ठित व्यंग्य को कहानी।

केसरी कुमार ने स्केच या शब्दचित्र को 'वैयक्तिक निबंध और गद्यकाव्य की संधिभूमि की एक पौद' कहकर कहानी और स्केच में अंतर करते हुए लिखा है-

1. 'स्केच में घटना नहीं, बरन उस घटना से उत्पन्न प्रतिक्रिया की प्रधानता होती है जिससे उत्प्रेरित होकर लेखक अपने भावों को कथा के रूप में प्रकट करता है।

2. 'स्केच' में कहानी जैसा प्रवाह होता है, पर कथानक का प्राय: अभाव रहता है।

3. कहानी में घटनाएँ एकता का बोध कराती हुई चरम स्थिति की ओर द्रुतवेग से जाकर लक्ष्य प्राप्ति के बाद अंत को प्राप्त होती है, 'स्केच' में कथानक और चरम स्थिति के अभाव के कारण विहंखल-सी बनी रहती है।

4. गल्पकार को जहाँ अंतिम प्रभाव या प्रकाश पूर्ण क्षण का ध्यान रखना पड़ता है वहाँ स्केच-लेखक को आदि से अंत तक रोचकता का।

5. संस्मरणात्मक कहानियों में 'स्केच' की तरह घटना की प्रतिक्रिया रहती है पर 'स्केच' की घटना कल्पित होती है, संस्मरण की घटित।

इसके बावजूद वह लिखते हैं- (1) संस्मरणात्मक कहानियों में महादेवी वर्मा का संग्रह 'अतीत के चलचित्र' अद्वितीय है। तथा (2) 'माटी की मूरतें' 'स्केच' होकर भी कहानी-संग्रह में रखे जा सकते हैं, इसलिए कि ये सोलहो आने 'स्केच' नहीं।

'अतीत के चलचित्र' में ग्यारह संस्मरण- रेखाचित्र हैं- रामा, भाभी, बिंदा, सबिया, बिट्टो, बालिका माँ, घीसा, अभागी स्त्री, अलोपी, बदलू तथा लछमा।

इसमें लेखकीय वक्तव्य-'अपनी बात' की पंक्तियाँ भी भ्रम-सृजन में कम सहयोग नहीं देतीं:-1. समय-समय पर जिन व्यक्तियों के संपर्क ने मेरे चिंतन की दिशा और संवेदन को गति दी है, उनके संस्मरणों का श्रेय जिसे मिलना चाहिए उसके संबंध में

मैं कुछ विशेष नहीं बता सकती। कहानी एक युग पुरानी, पर करुणा से भींगी है। (2) प्रस्तुत संग्रह में ग्यारह संस्मरण कथाएँ जा सकी हैं।

जहाँ तक लेखिका द्वारा 'कहानी' या 'कथा' शब्द के प्रयोग की बात है तो विद्यापति ने भी अपनी 'कीर्तिलता' को 'कहानी' कहा है-'पुरिस कहानी हयो' कह जो तथा जायसी ने भी अपने 'पद्मावत' को कहानी ही कहा है- जो यह पढ़ै कहानी।' और मगही की इस कविता में भी 'कहानी' शब्द आया है- हम पढ़लिख के बुद्धू होलूँ। डगरा के बैगन होगेलूँ बहतोनी देके भीतो हाँकलूँ कोल्हू के घानी हम अप्पन की कहूँ कहानी हम।

क्या तीनों जगह प्रयुक्त 'कहानी' शब्द आज के ग्रथों में विधा-विशेष के संकेतक हैं? फिर महादेवी आगे भी तो लिखती हैं-यदि इन अधूरी रेखाग्रंथों और धुधली रंगों की समष्टि में किसी को अपनी छाया की एक रेखा भी मिल सके तो यह सफल है।

अपनी बात: अतीत के चलचित्र।

इस पंक्ति को नजरअंदाज करना कहाँतक उचित है? क्या इससे यह प्रमाणित नहीं होता कि ग्यारह शीर्षकों में लिखित 'अतीत के चलचित्र' को सभी रचनाएँ संस्मरण- रेखाचित्र के ही अंतर्गत आती हैं, संस्मरणात्मक कहानियों के अंतर्गत नहीं। यही नहीं प्रो० केसरी कुमार द्वारा निर्धारित निकष पर भी ये संस्मरण रेखाचित्र ही ठहरते हैं, क्योंकि इनमें घटना की जगह उससे उत्पन्न भावों का ही प्राधान्य है। प्रो० केसरी कुमार स्वयं कहते हैं- 'जहाँ तक 'अतीत के चलचित्र' की बात है, कला वस्तु का आधार घटना या प्रसंग नहीं, व्यक्ति है, हाँ उसका पूरा व्यक्त्वि।' यहाँ व्यक्तित्व भाव नहीं तो और क्या है जिसे उन्होंने 'स्केच' के लिए आवश्यक माना भी है, फिर भी वे 'कहानी' कहने का लोभ संवरण नहीं करते।

'बदलू' का समापन तो इन पंक्तियों में हुआ ही है 'मेरे घर के हर कोने में प्रतिष्ठित बुद्ध, कृष्ण, सरस्वती, बापू आदि की मूर्त्तियाँ पुराने चाकपर बेडौल घड़े गढ़ने वाले ग्रामीण कुंभकार का स्मरण दिलाकर मानो कहती ही रहती हैं- कला तुम्हारा ही पैतृक अधिकार नहीं, कल्पना तुम्हारी हो कित दासी नहीं।

'अतीत के चलचित्र' के इन संस्मरण रेखाचित्रों में कहानी के अनुरूप कथानक नहीं है। प्रसंगों में चरमस्थिति की ओर ले जानेवाली श्रृंखला बद्धता का अभाव रहने के बावजूद आद्यंत रोचकता से परिपूर्ण है। घटनाओं की प्रतिक्रिया के परिणामस्वरूप उत्पन्न होनेवाले प्रत्येक भाव का अपना महत्त्व है। इसी आधार पर संस्मरण-रेखाचित्र चरित्र प्रधान कहानियों के प्रस्थान बिंदु और लक्ष्य से अपना पार्थक्य बनाए रहता है।

'तीसरी कसम' के हीरामन 'रसप्रिया' के पँचकौड़ी या 'ढेस' के सिरचन का चित्रण करनेवाले रेणु की तूलिका 'जब भी कुछ लिखता हूँ, उनकी याद आती है' (कामता प्र०सिंह 'काम') में अधिक यथार्थ प्रत्यक्ष, अधिक सांद्र, अधिक व्यंजक और अधिक यथार्थ प्रस्तुत करती है।

'चलचित्र' के शिल्प के इसी वैशिष्ट्य के कारण कवयित्री महादेवी का स्थान आलोचकों की दृष्टि में संस्मरण- रेखाचित्र लेखिका के रूप में है, कहानी- लेखिका के रूप में नहीं।

बेनीपुरी ने कहानियाँ अवश्य लिखी हैं- 'चिता के फूल', उस दिन झोपड़ी रोई, 'वह चोर था' भिखारिन की थाती' 'जुलेखा पुकार रही हैं, 'कहीं धूप कहीं छाया' जो 'चिता के फूल' शीर्षक से उनके एक मात्र कहानी संकलन में संकलित है। शेष,'माटी की मूरतें' 'गेहूँ और गुलाब' तथा 'लाल तारा' संस्मरण-रेखाचित्र है जिसका शिल्प इनकी कहानियों से भिन्न है। 'सुमान खाँ' और 'सरयुग भैया' का शिल्प वही नहीं है जो 'कहीं धूप कहीं छाया' या 'उस दिन झोपड़ी रोई' का।

'सुभाष खाँ' में घटना है किंतु अंततोगत्वा प्राप्त उसका भाव ही है जो सुभान खाँ के व्यक्तित्व पर केंद्रित है- मेरा सिर सिज्दे में झुका है- करबला के शहीदों के सामने! मैं सप्रेम नमस्कार करत हूँ अपने प्यारे सुभान दादा को!

कहानी का नामकरण चाहे जिस आधार पर हो, संस्मरण-रेखाचित्र का नामकरण व्यक्तिवाचक होता है जिसका व्यक्तित्व उकेरना संस्मरण-रेखाचित्रकार का मूलभूत अभिप्रेत होता है।

'रूपा की आजी' 'सुभान खाँ' 'मंगर' 'बैजूमामा', 'सरयुग भैया' 'बलदेव सिंह' आदि शब्द चित्रकार बेनीपुरी के ही सधे हाथों का कमाल है। साहित्य कुछ स्थापित लोगों की जागीर नहीं, जन साधारण की भी वस्तु है जिसे स्वातंत्र्य संग्राम के इस सबल योद्धा ने सिद्ध कर दिखाया है। यहाँ मस्तराम कपूर का यह कथन कोई माने नहीं रखता कि बेनीपुरी को शब्द चित्रकार या शब्दों के चितेरे के रूप में कैटोगराइज किया गया। शायद मैथिलीशरण गुप्त ने उन्हें यह विशेषण दिया और बाद में आलोचक उसे ले उड़े।

-दैनिक जागरण 19 मई सन् 2000

यदि निराला मुक्त छंद के पुरोधा, माखनलाल बलिपंथिता के प्रतीक, रेणु आंचलिकता के उन्नायक के रूप में प्रतिष्ठित हो सकते हैं तो बेनीपुरी संस्मरण-रेखाचित्र के अग्रणी पुरस्कर्त्ता के रूप में चिहिन्त किये ही जाते हैं तो इसमें विचिकित्सा के लिए कोई अवकाश नहीं।

रेखाचित्र रंग रेखाओं के माध्यम से कथ्य को रेखांकित-निरूपित करने की कला है जबकी कहानी या संस्मरण या निबंध में इसकी अनिवार्यता नहीं।

स्पष्ट है कि कहानी और संस्मरण-रेखाचित्र अलग-अलग विधाएँ हैं, दोनों के स्वाद में अंतर है, दोनों के शिल्प में अंतर है, प्रस्थान और गंतव्य में तो अंतर है ही।

❑ **नक्कूथान, मोहनपुर,**
समस्तीपुर-248101

रेणु-जयंती पर आलेख-पाठ

रेणु-साहित्य में सामाजिक एवं राजनीतिक चेतना

❑ प्रो० (डॉ०) रामदेव प्रसाद

फणीश्वर नाथ रेणु, हिंदी कथा साहित्य के महान स्तंभ हैं। उपन्यासों की दुनिया में **आँचलिक उपन्यास** विधा के उपस्थापक हैं। ग्रामीण जीवन को आधार बनाकर लिखनेवाले साहित्यकारों में प्रेमचंद के बाद रेणु सर्वाधिक प्रमुख कथाकार हैं। भाषा और शिल्प दोनों ही क्षेत्रों में रेणु अद्वितीय हैं। प्रेमचंद के कथा-साहित्य में जहां उपेक्षित और पीड़ित पात्रों के आर्थिक शोषण का चित्रण है, वहां रेणु के कथा-साहित्य में सताए हुए शोषित पात्रों की सांस्कृतिक संपन्नता, मन की कोमलता, रागात्मकता तथा कलाकारोचित प्रतिभा का मार्मिक चित्रण है।

"साहित्यकार को चाहिए कि वह अपने परिवेश को संपूर्णता और ईमानदारी से जिये। वह अपने परिवेश से हार्दिक प्रेम रखे, क्योंकि इसी के द्वारा वह अपनी जरूरत के मुताबिक खाद प्राप्त करता है। वह परिवेश से प्रेम इसलिए करे कि वह उसके मूल्यों के साथ ही विषमताओं और असंगतियों से खुलकर और गहरा परिचय प्राप्त कर सके। दोनों प्रकार के चित्रण का औदात्य ही साहित्यिक ईमानदारी कहा जाएगा। लेखक के संप्रेषण में ईमानदारी है तो रचना सशक्त होगी-चाहे जिस विधा की हो।

साहित्य की पौध बड़ी नाजुक और हरी होती है। इसे राजनीति की भैंस द्वारा चर लिए जाने से बचाए रख सकें तभी-उसकी फसल हमें मिल सकती है।

मैला आँचल का प्रकाशक अगस्त 1954 ई० में और **परती परिकथा** का प्रकाशन सितम्बर 1957 ई० में हुआ।

आँचलिक उपन्यास की नई विधा के जन्मदाता रेणु ही हैं। गोदान के बाद यह दूसरा महान् उपन्यास है। बिहार के पूर्णिया जिले के एक छोटे से गाँव की कहानी, जिसमें आपको भारतीय ग्राम्य जीवन, देश की सामाजिक व राजनीतिक उथल-पुथल से झकझोरकर अपनी परंपरागत विषमताओं से आक्रांत लेकिन अपनी सीमाओं को तोड़कर ऊफनने के प्रयास में और नए युग के साथ कदम मिलाकर बढ़ने को अधीर, गर्म-ठंडी सांसे लेता हुआ स्पष्ट दीख पड़ेगा। जन-जीवन के अतिरिक्त इस उपन्यास का कोई नायक नहीं है। **मैला आँचल** की कथावस्तु के यथार्थ से आप पराभूत हो जाएंगे। **मैला आँचल** के इतने अधिक पात्रों के बीच लेखक कहां है रेणु कहते हैं कि उपन्यास में आजादी का जुलूस निकलने पर जो उनका नारा था-**यह आजादी झूठी है, देश की जनता भूखी है।** इस उपन्यास में रेणु भारत की असली आजादी के लिए संघर्ष करते दिखायी पड़ते हैं। लोग,जानवर से भी

साहित्य की पौध बड़ी नाजुक और हरी होती है। इसे राजनीति की भैंस द्वारा चर लिए जाने से बचाए रख सकें तभी-उसकी फसल हमें मिल सकती है।

बदतर हो गए हैं। अशिक्षा, अज्ञान, सांप्रदायिकता, जातिवाद ,रूढ़िवाद, भूख, बदहाली, विपन्नता क्या यही आजादी है **मैला आँचल** का डाक्टर प्रशांत देखता है कि सब रोगों की जड़ में भूख और गरीबी है और, वह महसूस करता है कि हर जानवरनुमा व्यक्ति को पहले आदमी बनाना होगा। रेणु की यह परिकल्पना कितनी पवित्र मानववादी है।

परती परिकथा भी हिंदी का एक श्रेष्ठ आँचलिक उपन्यास है। ग्रामीण जीवन में जो कुछ कुत्सित है, द्वेषपूर्ण है, संकुचित, कायाप्रिय, नीच-वृत्ति है, उसे रेणु ने अत्यंत सहानुभूतिपूर्वक व्यक्त करते हुए उनमें मानवता की खोज की है। आशावादी के स्वर में उनका विकास रहा है। यह भारतीय जनता की आत्मकथा है।

ये दोनों ही उपन्यास स्वातंत्र्योत्तर कथा-साहित्य की बहुत उपलब्धि है। इनमें राष्ट्रीय समस्याओं, बदलते राजनीतिक एवं सामाजिक मूल्यों का चित्रण है। मैलाआँचल में मिट्टी और मनुष्य से प्रेम है। इसीलिए डॉक्टर प्रशान्त के चरित्र में रेणु आस्थावान प्रतीत होते हैं। **परती परिकथा** में नव-निर्माण का स्तर है-जिससे समाज और देश के निर्माण की संभावना है। पलटू बाबू रोड में एक कस्बे को कहानी का आधार बनाया गया है तो **दीर्घतपा/कलंक मुक्ति** में पटना शहर के वर्किंग वुमेंस होस्टल को। इसमें शहरी लोगों की अनैतिक विसंगतियाँ चित्रित हैं। जुलूस में संघर्ष और क्रांति का स्वर है, जो अपने हक-हकूक की लड़ाई में ईमानदारी से आगे बढ़ते हैं। रेणु का उद्देश्य था लोक-सांस्कृतिक समाज की संरचना।

पलटू बाबू रोड और **दीर्घतपा** में यह स्वर धीमा हो चुका था, इसलिए **जुलूस** में रेणु पुनः उसी विशाल उद्देश्य की ओर उन्मुख हुए प्रतीत होते हैं। आजादी के लिए संघर्ष करने और बलिदान देनेवाले युवकों में सेवा, देश-प्रेम जगाने के उद्देश्य से **कितने चौराहे** की रचना हुई। भारतीय युवक अपने व्यक्तिगत संसार को छोड़कर देश के लिए आत्मोत्सर्ग करे। ऐसे युवकों के प्रति मानवीय संवेदना को उभारना इस रचना का मूल उद्देश्य है।

रेणु ने अपनी कहानियों में **आदमी** की तलाश की है। **पंचकौड़ी मृदंगिया** जो नाच-गाना सिखाकर अपना पेट पालता है, **हिरामन** (तीसरी कसम)-काला-कलूटा, चालीस साल,का गाड़ीवान-प्रेम से परिप्लावित, भोला-भाला, **हीराबाई**-मेले में नाचने वाली

पतुरिया, पर निश्छल, कोमल। **सिरचन**(ठेस), खाने को मुहताज पर अक्खड़, स्वाभिमानी कलाकार, **बिरजू की माँ**(लाल पान की बेगम) सर्वे सेट्लमेंट से प्राप्त थोड़ी सी धनहर जमीन पर ही लालपनि की बेगम की तरह दीखती, **हरगोबिन संवदिया**-मानवीय संवेदना से ओत-प्रोत, भावुक प्राणी, रात भर मिट्टी की गंध से मदमाता **करमा** आदि(रात्रि की महक)।गांव की संकीर्ण वर्णवादिता के आपसी ईर्ष्या-द्वेष को रोकने की खातिर अपने को बलिदान कर देनेवाला, एकला चलो रे के दर्शन को माननेवाला **किशन महाराज**, सांप्रदायिकता के खिलाफ संघर्ष करती **फातिमा**। हजारों पात्र। यही वे आदमी हैं व्यवस्था के सताए हुए, उपेक्षित, दलित, पर बेहद मानवीय, जमीन से जुड़े हुए सांस्कृतिक संपदा से संपन्न, प्रेम और राग में पगे हुए लोग जिनके जीवन से एकाकार होकर रेणु ने यह कहानियां लिखी हैं।

सामाजिक चेतना

ग्रामीण आदि की विपन्नता स्वयं रेणु उपनाम भी सामाजिक चेतना की देन है। संस्कृत में **रेणु** तत्सम शब्द है, जिसका अर्थ है धूलि। लेकिन फणीश्वरनाथ का **रेणु** उपनाम संस्कृत भाषा से आगत नहीं है, बल्कि तद्भव से तत्सम बना है, जो व्याकरण के लिए टेढ़ी खीर है। असल बात यह है कि जिस वक्त रेणु का जन्म हुआ है-पूरा घर कर्ज से, ऋण से लदा था, तो दादी ने प्यार से **रेनुवा** कहा और अधिक दुलार में **रनु**। यह रनु जब धूलि में खेलने लगा तो **रेणु** उपनाम हो गया। यह दशा समूचे औराही हिंगना गांव की थी। इसलिए उनका रेणु उपनाम भी सामाजिक चेतना की एक कड़ी है। इनके कथा-साहित्य में गरीबी, भुखमरी, बदहाली का चित्रण सर्वत्र है-इसलिए उनकी सभी रचनाओं में गरीबी की यह बदहाली से निजात पाने की कसक देखी जा सकती है।

रीति-रिवाज और लोक- संस्कृति-रीति-रिवाज किसी समाज का चिरकाल से चले आ रहे सामाजिक व्यवहार है। रेणु के उपन्यासों में रीति रिवाजों का भरपूर प्रयोग हुआ है परती-परिकथा में बिहार के प्राणपुर गांव के कुमारी लड़कियों, ब्याही लड़कियों, बेटा-बेटी वाली अधेड़ बूढ़ी, सब मिलकर शामा चकवा का त्योहार मनाती हैं। वर्षों से यह रीति चली आ रही है। वर्षा न होने पर इंद्र को रिझाने के लिए जाट-जाटिन का खेल खेलने का रिवाज है। विश्वास है कि इस खेल से इंद्र महाराज प्रसन्न होकर मूसलाधार वृष्टि करते हैं। महिलाएं खेल खेलती हुई गाती हैं-

सुनरी हमर जटिनियां हो बाबू जी,

पातरी बांस के छोकिनियां हो बाबू जी,
गोरी हमार जटिनियां हो बाबू जी,
चाँदनी रात के इंजोरिया हो बाबू जी,
नन्हीं-नान्हीं दतवां पातल ठोरवां...
छटके जैसन बिजलिया............।

रीति-रिवाज और अंधविश्वास:-रेणु की समस्त कृतियों में लोक संस्कृति मूलक रीति-रिवाजों का प्रयोग हुआ है। लोक कथा के रूप में **रानी डूबी** और **कोहवर राँड़ी की कथाएं**, **सुन्नरि की गीत कथा** लोक गीतों में पहाड़ी लोक गीत, बरसाती लोग गीत(परती-परिकथा) में आदि रीति रिवाज और लोक संस्कृति के अभिन्न अंग हैं।

लोकोक्ति और मुहावरे:- लोकोक्ति, मुहावरे और कहावत भी सामाजिक चेतना के अभिन्न अंग माने जाते हैं। रेणु के समस्त साहित्य में इनके सार्थक प्रयोग देखे जा सकते हैं। किसी विलक्षण अर्थ का बोध कराने वाले वाक्यांश को मुहावरा कहते हैं। भाषा की विशिष्टता में इनका भरपूर सहयोग रहता है। लोकोक्ति और मुहावरों से समाज के राजनीतिक, सामाजिक, ऐतिहासिक, धार्मिक तथा सांस्कृतिक मूल्यों का पता चलता है। जनता के बीच से आनेवाले रेणु के साहित्य में ये दर्शनीय हैं। लोकोक्ति अथवा कहावत किसी घटना से समन्वित रहती है। वस्तुत: लोकोक्तियां समाज के अनुभवों के सूत्रलेख हैं।

लोक-भाषा:-लोक भाषा से पूरा परिवेश चित्रित हो जाता है। रेणु ने जिस ग्रामीण परिवेश की बोली को अपनी रचनाओं में स्थान दिया है, वह उस क्षेत्र के पूरे सामाजिक परिवेश को प्रतिबिंबित करती है। यह भाषा न तो विशुद्ध हिंदी है और न तो हिंदी से दूर। रेणु की लोक भाषा पूरी कृतियों में जीवंत हो उठी है-दो ग्रामीण मूर्ख स्त्रियों के बीच के झगड़े को रेणु की लोक भाषा ने पूरी ईमानदारी से प्रस्तुत कर दिया है-

अरे, हाँ-हाँ, बेटा-बेटी केकरो, घी ढारी करे मंगरो। चलनी कहे सुई से कि तेरी पेंदी में छेद। हाथ में कंगना तो चमका रही हो, खलासी को एक पुरिया सिंदूर नहीं जुटता है।

मुंह संभालकर बात कर नेंगड़ी। बात बिगड़ जाएगी। खलासी हमारा बहन-बेटा है। बहन-बेटा लगाकर गाली देती हो। गाली हमारी देह में नहीं लगेगी। तेरे देह में तो लगी हुई है। अपने खास भतीजा तेतरा के साथ भागी तू और गाली देती हो हमको? सरम नहीं आती तुझको। बेसरमी, बेलज्जी! भरी पंचायत में जो पीठ पर झाड़ू की मार खाई थी सो भूल गई। गुअरटोली में कलरू के साथ रात भर भैंस पर रसलीला करती थी सो कौन नहीं जानता है? तू बात करेगी हमसे? "रे सिंधवा की रखेली। सिंधवा के बयान का बंबै आम का स्वाद भूल गई? तरबन्ना में रात-रात भर लूका-चोरी में ही खेलती थी रे! कुरअंखा बच्चा हुआ था तो कुरअंखा सिंधवा से मुंह-दिखौनी में बाछी मिली थी, सो कौन नहीं जानता।"

अनैतिकता का बोलबाला-ग्रामीण परिवेश में मठ और मंदिर पवित्रता का संदेश देनेवाले होते हैं। मैला आँचल में वर्णित मेरीगंज में स्थित मठ का महत्व सेवादास अंधा होकर भी रखेलिन रखता है। मुजफ्फरपुर के पुपरी मठ से आये साधु लरसिंह दास लक्ष्मी दासिन को पाने की फिराक में उसके स्नान करते समय उसे बाँस की टट्टी में छेद कर देखता है। सेवा दास का चेला रामदास भी कम नहीं है। उसने भी अपनी वासना पूर्ति के लिए रमपियरिया को रख लिया है। इनकी सभी रचनाओं में अनैतिकता का चित्रण है।

ग्रामीण परिवेश और भूत-प्रेत की अवधारणा-रेणु का कथा क्षेत्र प्राय: ग्रामीण परिवेश है। उस परिवेश की मूर्तता भूत प्रेत के चक्कर के पूजन से उजागर हो जाती है। मैला आँचल का कथा क्षेत्र है-मेरीगंज जो भूत-प्रेत के विश्वासों से जकड़ा हुआ है। डायन के अंधविश्वास ने ग्रामीण क्षेत्र के अनेक निरपराध नर-नारियों की हत्या कराई है। हीर का जवान बेटा मर गया। जोतखी काका ने पारबती की

माँ को डायन बताया और कहा कि वही तुम्हारे बेटे को खा गई है।

पूंजीवाद और सामंतवाद का दमण-चक्र- ग्रामीण परिवेश में सामंतवाद का शोषण अधिक होता है। रेणु का **मैला आँचल** एक तरह से सम्पूर्ण आँचलिक समस्याओं का जीवंत चिड़ियाघर है।

"भूख, गरीबी, बीमारी और अंधविश्वासों से पीड़ित लोगों को देखकर डॉ० प्रशांत रोगों की छान-बीन करने आया है। वह लोक-कल्याण करना चाहता है। मनुष्य के जीवन का क्षय करनेवाले रोगों के मूल का पता लगाकर वह नई दवा का आविष्कार करेगा-जिससे सब रोग दर हो जाएंगे। डॉक्टर देखता है कि कपड़े के बिना सारा गांव अर्द्धनग्न है। मर्दों ने पैंट पहनना शुरू कर दिया है और औरतें आंगन में काम करते समय एक कपड़ा कमर में लपेट कर काम चला लेती हैं। बारह वर्ष के बच्चे तो नंगे ही रहते हैं।"

राजनीतिक चेतना

पारिवारिक परिवेश और राजनीतिक **चेतना**- रेणु की राजनीतिक चेतना पर उनके पारिवारिक परिवेश का भी सहयोग रहा है। उनके पिताश्री पुराने कांग्रेसी थे। रेणु स्वयं समाजवाद के पक्के समर्थक थे। समाज और देश के लिए चार बार जेल गए।

मध्यवर्गीय किसानों/मजदूरों की समस्याएं: रेणु कहते हैं-"मैंने जमीन भूमिहीनों और खेतिहर मजदूरों की समस्याओं को लेकर बातें की। जातिवाद, भाई-भतीजावाद और भ्रष्टाचार की पनपती हुई बेल की ओर मात्र इशारा नहीं किया था, इसे समूल नष्ट करने की आवश्यकता पर भी बल दिया था।" आत्म-साक्षी के द्वारा राजनीतिक पार्टियों के आपसी कलह और जनता से अलगाव की ओर अपने पाठकों का ध्यान आकृष्ट किया था। अपनी अन्य कहानियों में मैंने निम्न मध्यवर्ग, पिछड़े लोगों, भूमिहीनों, खेतिहर मजदूरों तथा समाज के ऐसे लोगों का चित्रण किया है-जिन्हें **हरिजन** कहकर गौरवान्वित तो कर दिया गया, किंतु वे आजादी के बाद भी वे जमीन, पिछड़े और अछूत एवं आक्रांत होते रहे।

समाजवाद के लिए सरकारी प्रयास और ग्रामीण: समाजवाद पूरे प्रजातंत्र की रीढ़ है। देश आजाद हुआ। सामंतशाही और पूँजीवादी प्रवृतियों में कमी आई, सरकार की ओर से गैर सरकारी संस्थाओं की ओर से समाजवाद लाने के प्रयास हुए। ग्रामीण अर्थ-व्यवस्था के पुनर्निर्माण के लिए परंपरागत जमींदारी प्रथा का उन्मूलन हुआ। फिर भी तीन प्रकार के वर्ग थे-(क)बहुत अधिक जमीन के मालिक, (ख)मध्यवर्गीय किसान और (ग)भूमिहीन श्रमिक। मैला आँचल के जमींदार विश्वनाथ प्रसाद जमीन्दारी उन्मूलन विधेयक की सूचना पाते ही अपने क्षेत्र के संथालों को जमीन से हटा देते हैं। परिणामत: जमींदार के व्यक्तियों और संथालों में युद्ध होता है। संथाल जेल जाते हैं। जमींदार के पास और अधिक जमीन हो जाती है।

पिछड़ेपन के कारण: दरिद्रता-ग्रामीण परिवेश के लिए दरिद्रता ही सभी समस्याओं की जड़ है। उसी से अशिक्षा, बेरोजगारी, भुखमरी, बीमारी, अंधविश्वास, जड़ता आदि व्यापते हैं। मैला आँचल का डॉक्टर प्रशांत "इसे मध्यवित्त किसानों की अंदर हवेली और बेजमीन मजदूरों की झोपड़ियों में जाने का सौभाग्य या दुर्भाग्य प्राप्त हुआ है। रोगियों को देखकर उठते समय छींके पर टँगी हुई खाली मिट्टी की हंडियों से उसका माथा टकराया है। सात महीने के बच्चे को बथुआ और पालक साग पर पलते देखा है।"

कृषक और जमींदारों का संघर्ष: जमींदारी-उन्मूलन से जो समाजवादी समतामूलक व्यवस्था आनी चाहिए थी सामंती पकड़ के कारण वह सफल नहीं हो सकी। मैला आँचल में भूमि-समस्या की भूमिका है और परती-परिकथा में पूर्णिया जिले में बटायीदारी की समस्या को उजागर किया गया है। इनके दोनों उपन्यास स्वतंत्र भारत की आम आदमी की आशाओं और आकांक्षाओं की कहानी है, उनकी निराशा और हताशा की अभिव्यक्ति है। मैला आँचल में उन्होंने अपना दुख-दर्द और नये स्वतंत्र देश की हालत दिखलाई है। परती-परिकथा में कृषक और जमींदार का संघर्ष दिखलाते हुए आम आदमी के दर्द का वर्णन किया गया है, जहां उनका हृदय बंजर-सा हो गया है।

वर्ग एवं जाति-भावना: भारत के इतिहास में वर्ग एवं जाति-भावना का कुप्रभाव सब दिन से देखा जा रहा है और आज भी उसकी जड़ मजबूत है। रेणु की कृतियों में यह स्तर अधिक मुखर है क्योंकि रेणु इन दबे-कुचले शोषितों-पीड़ितों का उद्धार करना चाहते थे। मैला आँचल के मेरीगंज में बारहो बरन के लोग रहते हैं। गांव के अन्य जाति के लोग भी सुविधानुसार तीन दलों में बँटे हुए हैं-कायस्थ, राजपूत और यादव।

विभिन्न राजनीतिक दल और ग्रामीण परिवेश: रेणु ग्रामीण जीवन के लेखक हैं। उनका राजनीतिक जीवन भी महत्वपूर्ण है। महात्मा गांधी के द्वारा चलाये गए सत्याग्रह आंदोलन में उन्होंने भाग लिया। ये चार बार जेल गए। इनके पिता कांग्रेसी थे। स्वयं समाजवाद के पक्के समर्थक रहे। इसीलिए रेणु की कृतियों में प्रमुखत: तीन राजनीतिक दलों का वर्णन आया है-कांगेस, समाजवादी पार्टी और कम्युनिष्ट पार्टी। डॉक्टर प्रशांत की तरह बालदेव भी बाहरी पात्र हैं। बालदेव जी अनपढ़ कांग्रेसी हैं। कालीचरण पहले कांग्रेसी थे, बाद में समाजवादी पार्टी में आ गए। सारे दल के लोग अपने अधिकार और कर्तव्य के प्रति सजग हैं।

आजादी/प्रजातंत्र की दुर्दशा एवं रेणु: रेणु के शब्दों में "प्रजातंत्र का अर्थ है-देश में जो कुछ भला-बुरा हो रहा है, उसे जनता के सामने प्र[illegible] कराना।" लेकिन वे बेहद दुखी होकर कहते हैं कि "यह भी कोई प्रजातंत्र है? कलमबन्द, जुबानबन्द! पर आँखे खुलीं। इस अवस्था में आदमी पागल नहीं होगा तो क्या होगा? मानसिक उद्वेग को कैसे शान्त करेगा? मेरे जैसा आदमी या तो पागल हो जाएगा या आत्महत्या कर लेगा।"

आपातकालीन दुर्दशा पर आक्रोश व्यक्त करते हुए कहा था कि "इंदिराजी क्यों नहीं अपनी गद्दी बचाकर पूरे देश को एटमबम से उड़ा देती हैं? उनको एकछत्र राज्य ही तो करना है। न कोई बचेगा न विरोध होगा। कम से कम मेरे जैसे लोग तो विरोध करेंगे ही। या नहीं तो ऐसा करें-मेरे जैसे लेगों को चुन-चुन कर फाँसी पर लटका दें।

❑ प्राधानाचार्य
आर. एस. कॉलेज,
तारापुर, मुंगेर (बिहार)

पुनर्मिलन

❑ कमल किशोर दुबे 'कमल'

रतलाम स्टेशन पर प्रोफेसर डॉ० चंद्रिका प्रसाद ट्रेन आने का बैचेनी से इंतजार कर रहे थे। मई महीने की सुबह के पौने सात बजे थे। ग्रीष्म ऋतु में प्रातः की तेज चलती हवा से वे काफी-तरोताजा महसूस कर रहे थे। अनायास उनकी नजर दो बच्चों पर पड़ी। वे दोनों एक-दूजे का हाथ पकड़कर उद्‌देश्यहीन इधर-उधर भटक रहे थे। दोनों साफ-सुथरे कपड़े पहने थे और किसी भी दृष्टि से भिखारी या आवारा प्रतीत नहीं होते थे। लगभग 13 वर्षीय लड़का साथ की लड़की का हाथ पकड़कर घसीटते हुए चल रहा था। उनकी हरकतों पर संदेह होने पर उन्होंने उन्हें पास बुलाकर पूछा- क्यों बेटे, कहाँ जा रहे हो? तुम्हारे माता-पिता साथ में नहीं हैं क्या? अचानक यह सवाल सुनकर लड़का सकपका गया, बोला हमारे माँ-बाप मर गये हैं और चाचा-चाची ने मारकर घर से निकाल दिया। डॉ० प्रसाद को उनकी बात पर विश्वास नहीं हुआ और उन्होंने उस बच्ची से पूछा-क्यों बिटिया तुम्हारा नाम क्या है? क्या भैया सच कह रहा है? यह सुनते ही उस मासूम बालिका की आँखों में आँसू छलक आए, रोते हुए बोली- भैया आठवीं की परीक्षा में फैल हो गया, इसलिये पापा ने उसे बहुत मारा और मुझे भी डाँटा। इसी कारण हम घर से भागकर आए हैं। डॉ० प्रसाद का अनुमान सच निकला, उन्होंने टी-स्टाल से समोसे खरीद कर उन्हें खिलाए। ट्रेन का समय होते देखकर वे उन्हें स्टेशन मास्टर के दफ्तर में ले गए तथा स्टेशन मास्टर को वस्तुस्थिति बताकर उन दोनों बच्चों को उनके घर पहुँचाने का अनुरोध किया। स्टेशन मास्टर राम स्वरूप शर्मा ने उन दोनों को सकुशल पहुँचाने का आश्वासन दिया।

शर्माजी ने दोनों बच्चों को अपने कार्यालय में बिठाया तथा ड्यूटी समाप्त होने पर अपने साथ घर ले गए। रात में उन्हें खाना खिलाकर घर से भागने का कारण पूछा तथा प्यार से समझाया। ठाकुर शिवप्रताप सिंह एक सम्पन्न किसान तथा प्रभावशाली व्यक्ति थे। वे 60-70 एकड़ जमीन के मालिक और ग्राम पंचायत के सरपंच थे। आसपास के गांवों में उनका काफी मान-सम्मान था। उनका एक पुत्र विक्रम 13 वर्ष का तथा बेटी वीणा 8 वर्ष की थी। किसानी कामकाज तथा सरपंच के कार्यों की जिम्मेदारी के कारण वे बच्चों पर समुचित ध्यान नहीं दे पाए, अतः बेटे का रुझान पढ़ाई के बदले खेलकूद में अधिक रहता, इसी के चलते वह आठवीं में फेल हो गया? उन्हें यह नागवार गुजरा और उन्होंने विक्रम को खूब डांटा-फटकारा, बेटी को भी डांट लगाई। बच्चों के बालमन पर इसका विपरीत प्रभाव पड़ा तथा शाम को वे दोनों किसी को बिना कुछ बताए घर से भाग गए। रात्रि में जब देर तक बच्चे घर नहीं पहुँचे तो पहले ठाकुर साहब ने नौकरों से, आसपास मोहल्ले में ढूँढ़वाया फिर स्वयं उनके दोस्तों, रिश्तेदारों के घर तलाश किया। अंत में निराश होकर वे स्वयं को दोष देने लगे। उधर बच्चों की माँ ठकुराइन का रो-रोकर बुरा हाल हो गया वे किसी भी कीमत पर बच्चों को शीघ्र ढूँढ़ने की जिद करने लगीं। दोनों ने खाना भी नहीं खाया।

सुबह होते ही ठाकुर साहब शहर जाकर पुलिस थाने में रिपोर्ट लिखाने की तैयारी कर रहे थे। अचानक शर्माजी के साथ दोनों बच्चों को द्वार पर देखकर उनके उदास चेहरे पर प्रसन्नता की लहर दौड़ गई।

सुबह होते ही ठाकुर साहब शहर जाकर पुलिस थाने में रिपोर्ट लिखाने की तैयारी कर रहे थे। अचानक शर्माजी के साथ दोनों बच्चों को द्वार पर देखकर उनके उदास चेहरे पर प्रसन्नता की लहर दौड़ गई, दोनों बच्चों को गले लगाकर वे खूब रोए फिर शर्मा जी को सम्मान सहित बिठाकर हालचाल पूछा तथा अत्यधिक कृतज्ञता ज्ञापित की। शर्माजी दोनों बच्चों को ठाकुर साहब को सौंपकर तथा समझाकर लौट आए।

समय के साथ रामस्वरूप शर्मा की पदोन्नति स्टेशन प्रबन्धक के पद पर हो गई। प्रतिदिन प्रातः दस बजे समस्त अधीनस्थ पर्यवेक्षकों के साथ बैठक कर प्रतिदिन के कार्य की समीक्षा करना तथा उस दिन के लिए आवश्यक निर्देश देना शर्माजी का नियमित कार्य था। उस दिन भी वे अपने कक्ष में अधीनस्थों को आवश्यक निर्देश दे रहे थे। अचानक एक स्मार्ट नवयुवक आया। उसने दोनों हाथ जोड़कर नमस्कार किया फिर झुककर शर्माजी के चरण स्पर्श करते हुए बोला-"सर मुझे पहचाना, मैं विक्रमसिंह ठाकुर।" इस अप्रत्याशित घटना से हतप्रभ हुए शर्माजी ने इससे अनभिज्ञता जाहिर की। उस नवयुवक ने अपना सहायक स्टेशन मास्टर का नियुक्ति पत्र प्रस्तुत करते हुए दस वर्ष पूर्व की घटना का स्मरण कराते हुए संक्षेप में पूरा वृतांत सुनाया। उसने हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करते हुए कहा कि आपके अमूल्य मार्गदर्शन और उपकार ने ही मुझे इस योग्य बनाया है। यह जानकर शर्माजी की आँखों के सामने दस वर्ष पुरानी वह घटना किसी चलचित्र की भाँति सजीव हो गई और आँखों से अश्रुधारा बहने लगी। किंतु ये आँसू खुशी के थे और आनंद के इन क्षणों को महसूस कर शर्माजी गर्व तथा प्रसन्नता से गदगद हो गए। विक्रम पुनः श्रद्धा से उनके पैरों पर सिर रखकर रोने लगा। शर्मा जी ने उसे उठाकर अपने सीने से लगा लिया। वहाँ उपस्थित सभी लोग हर्षातिरेक से भावविभोर हो गए। सचमुच यह दो व्यक्तियों का नहीं बल्कि आत्मीय संबंधों का पुनर्मिलन था, जिसे देखकर कोई भी अभिभूत हुए बिना नहीं रह सका।

❑ अहमदाबाद, प० रेलवे, गुजरात

चाँदनी में लिपटा पलाश

❑ प्रो० लखनलाल सिंह 'आरोही'

कमल ने जब पहली बार उसे देखा था, तो उसमें कोई आकर्षण उसे दिखाई नहीं पड़ा। वह एक साधारण लड़की थी। एक चंचल देहाती लड़की। कमल के सामने अत्यंत छोटी।

कमल को क्या पता था कि यह देहाती-चंचल लड़की एक दिन उसके खंडहर जीवन पर चाँदनी बनकर छा जाएगी।

कमल का जीवन संघर्ष का अनंत सिलसिला था। पिता बचपन में ही खत्म हो गए थे। विधवा माँ के हाथों ही कमल का अभावग्रस्त बचपन रेंगता हुआ जीवन के अगले पड़ावों की ओर बढ़ा।

अभाव आदमी को तोड़ता है, परंतु यह कभी-कभी आदमी को ऊर्जस्वी भी बनाता है।

कमल ने अभाव से संघर्ष किया, पर वह कभी टूटा नहीं। अभाव और संघर्ष ने कमल के धैर्य और विश्वास को माँज दिया।

गांव के लोगों ने मुश्किल से कभी कमल के चेहरे पर मायूसी देखी होगी।

पढ़ने में कमल एक साधारण लड़का था। प्रतिभा कहीं से नहीं टपकती थी। परंतु पढ़ने के प्रति उसमें गजब की रुचि थी। एक बार क्लास में अगले बेंच पर बैठने के प्रयत्न में कमल को बुरी तरह अपमानित होना पड़ा था। कमजोर जाति का लड़का कमल अगले बेंच पर बैठने का दुस्साहस करे, यह कैसे हो सकता है! दूसरे दबंग लड़कों ने कमल को ठेलकर नीचे गिरा दिया। अन्याय किसे कहते हैं, कमल ने जीवन में पहली बार जाना था। मजबूत इरादा उसका अपराजेय मन अन्याय से संघर्ष करने के लिए संकल्पित हो गया। कमल के दुबले शरीर में इस्पात जैसा मन था। वह फूल की पंखुड़ी से तो कट सकता था परंतु अन्याय के प्रहार से और कठोर हो जाता था।

नियमित अध्ययन और अथक मेहनत साधारण को भी असाधारण बना देती है। कमल का जीवन इसका जीता-जागता उदाहरण था। वह अचानक दसवें क्लास की वार्षिक परीक्षा में प्रथम हो गया। कमल स्कूल से लेकर अपने गांव तक चर्चा का विषय बन गया। मिट्टी का ढेला सोना बन गया था। कमल की नसें अब भींग रही थीं। अब वह किशोर था। कमल! विधवा माँ की इकलौती संतान था कोई भाई-बहन नहीं। विधवा माँ का देहाती मन कमल की शादी करने के लिए मचल पड़ा। परंतु कमल की शादी की अपेक्षा पुस्तक में रुचि थी। लेकिन विधवा माँ का शादी के प्रति प्रबल आग्रह था, और कमल को माँ का आग्रह मानना पड़ा। वह माँ को उदास नहीं करना चाहता था। परंतु उसने जीवन में पहली बार अनुभव किया कि उस पर कुछ थोपा जा रहा है। कमल ने पहली बार रूढ़ि के सम्मुख समर्पण किया क्योंकि उसके लिए माँ का सुख उसके मन से ऊपर था।

> **कमल को क्या पता था कि यह देहाती-चंचल लड़की एक दिन उसके खंडहर जीवन पर चाँदनी बनकर छा जाएगी।**

जीवन का कारवाँ बढ़ता गया। कमल अपना कैरियर बनाने अपनी माँ से अलग दूसरी जगह चला गया।

कमल का कैरियर तो बना, परंतु वह अपनी माँ खो बैठा। विधवा माँ के लिए कमल का अलगाव असहय था। कमल की अनुपस्थिति में वह खाने-पीने और स्वास्थ्य के प्रति लापरवाह हो गई। वह भयंकर रूप से बीमार पड़ गई। मालूम होते ही कमल माँ की सेवा में दौड़ पड़ा। बेटे को देख विधवा माँ की आँखें छलक आईं।

परंतु दिन-रात की सेवा के बावजूद कमल माँ को न बचा सका। और एक दिन माँ वह को अकेला छोड़ चल बसी। अब कमल दुनिया में अकेला था। रिश्ते कितने औपचारिक होते हैं, यह उसे तब मालूम हुआ, जब रिश्ते में बँधे लोगों ने तरह-तरह का कर्ज उसकी माँ के पास बताना शुरू किया। दुनिया के नंगेपन से कमल का पहला साक्षात्कार हुआ। कमल ने गाय-बैल और घर में बचा अनाज बेचकर कर्ज देनेवालों के मुँह पर ताला लगा दिया। बेईमानों पर कमल ने तभी से थूकना शुरू किया।

अब क्या करे? वह मैट्रिक अच्छी श्रेणी से पास कर चुका था। कालेज की पढ़ाई करने पर वह असमर्थ था, परंतु विश्वविद्यालय की डिग्री लेने के लिए कमल संकल्पित था। वह कॉलेज से बाहर रहकर कॉलेज की डिग्रियाँ लेने का मन बना चुका था। अभाव और गरीबी के खिलाफ कमल अपने सपनों को लेकर खड़ा था कमल।

और एक दिन वह चिलचिलाती दुपहरिया में गर्म-पछिया हवा के बीच घर से निकल पड़ा। चट्टी का पुराना झोला कमल के सफर का साथी था।

कम वेतन पर एक देहाती स्कूल में कमल शिक्षक नियुक्त हुआ। वह अध्यापक की अपेक्षा छात्र अधिक था। अध्यापक उसके के लिए जीवन में आगे बढ़ने के लिए एक माध्यम मात्र था।

कमल एक के बाद एक ऊँची डिग्री लेकर जीवन के शिखर पर चढ़ता गया। अब वह एक डिग्री कॉलेज में प्रोफेसर था। परंतु जीवन की उँचाइयों का यात्री कमल हरियाली के बीच भी उदास था। उसकी पत्नी थी, उसके बच्चे थे, फिर भी वह एक खलीपन अनुभव करता था। रेत में खिले एक उदास फूल की मानिदे था वह। कमल का जीवन खंडहर सा वीरान था जिसपर उदासी और सन्नाटे का आलम था। जो कमल संघर्ष और अभाव में नहीं टूटा, वह एक ऐसी लड़की के

अभाव में रेत होने लगा, जो उसे पत्नी के रूप में अपने प्यार से सींच सके। उँचाइयों के यात्री कमल को एक मजबूत जीवन-साथी की जरुरत थी। जीवन-साथी, जो पलाश भी हो और चाँदनी भी। चाँदनी से लिपटा पलाश! तभी एक दिन माधुरी उदास पतझड़ में बसंत के समान कमल के जीवन में आई। रूढ़िवादियों ने कमल के खिलाफ ऊँगली उठाई। परंतु जीवन रूढ़ियों से ऊपर है। कमल जीवन का उपासक था, रूढ़ियों का नहीं। वह सदैव रूढ़ियों को रौंदता रहा था। उसने कभी रूढ़ियों के सामने हथियार नहीं डाले थे।

अब माधुरी कमल के लिए ताकत थी और कमजोरी भी। संघर्ष में माधुरी कमल का हथियार बन जाती थी और स्नेहपूर्ण क्षणों में कमजोरी। संघर्ष में तपकर इस्पात बना कमल का मन माधुरी की मुसकान की पंखुड़ी से कट जाता था।

परंतु भोली माधुरी पुरुष के मन को कभी कभी समझने में भटक जाती था। माधुरी के नादान व्यवहार से इसीलिए कभी-कभी कमल का मन आहत हो जाता। ऐसे क्षणों में कमल के चारों तरफ रेत का मैदान फैलने लगता। माधुरी भी टूटने लगती, परंतु जिस प्रणय-सूत्र सें बँधकर माधुरी और कमल एक हुए हैं- वह सूत्र विश्वास और प्रेम के मजबूत धागों से बना है।

जीवन का कोई झटका या आघात कमल और माधुरी को कुछ क्षणों के लिए हिला जाता है, परंतु ऐसे क्षणों से गुजरकर माधुरी और कमल का संबंध और निखर जाता है।

हर बरसात वृक्ष को हरा कर जाती है। उस दिन भी ऐसा ही हुआ। किसी बात पर पति-पत्नी एक दूसरे से उलझ पड़े। एक दूसरे को कोसने लगे। परंतु यह दुश्मनों का महाभारत नहीं-पति-पत्नी का नोंक-झोंक था जो आकर दांपत्य की एकरसता को दूर कर जीवन के स्वाद को बढ़ा जाता है।

कमल ने माधुरी के आँसू को पोंछा और उसके चेहरे को उठाकर उसकी आँखों में देखा। माधुरी की आँखों में आँसू से नहाया चाँदनी से लिपटा पलाश का एक गाछ था।

माधुरी की मुसकान से पलाश पर फैली चाँदनी और खिल उठी।

❑ ऋतंवर, खैरा, पत्रा० - पतसौरी खैरा
जिला-बांका, बिहार-813107

देख ली तेरी मुंबई नगरी

❑ वीरेन्द्र कुमार सिन्हा

मनुष्य की इच्छाएं अनंत हैं। बहुत लोगों को बहुत सारी इच्छाएं होती हैं। कुछ लोगों की इच्छाएं सीमित होती हैं। और, कुछ ऐसे भी लोग हैं, जिनकी केवल एक ही इच्छा होती है, जैसे भगवान के भक्त को भगवान के दर्शन की इच्छा होती है, एक मरणासन्न व्यक्ति को जीवन से मुक्ति की इच्छा होती है और एक विधायक को पहले मंत्री फिर मुख्यमंत्री की कुरसी पाने की इच्छा होती है, उसी तरह मेरी एक ही इच्छा थी- 'मुंबई घूमने की'। क्योंकि मैं यह अच्छी तरह जानता था कि-

"कभी किसी को मुकम्मल जहां नहीं मिलता, किसी को जमीं मिलती तो किसी को आसमां नहीं मिलता।"

मुंबई के बारे में इतना कुछ सुना था कि मुंबई घूमने के लिए मन तरस रहा था। हमेशा यह चिंता बनी रहती थी कि मुंबई देखने तक जिंदा रहूँगा भी या नहीं। क्योंकि हमारे देश में मरने की उम्र सीमा निर्धारित नहीं है। जो व्यक्ति मरने की उम्र में नहीं पहुंचा रहता है वह भी मर जाता है या फिर मारा जाता है। यहां किसी भी उम्र में कुछ भी हो सकता है। हमारे एम करुणानिधि को घिसटाकर जेल जाने की उम्र नहीं है, फिर भी उन्हें घसीटकर जेल ले जाया गया। नाबालिग का मंत्री बनने की उम्र नहीं होती। फिर भी बालिग को खुश करने के लिए बिहार में नाबालिग को मंत्री बना दिया जाता है। नन्हें-मुन्ने बच्चों की मरने की उम्र नहीं होती। फिर भी कुपोषण से या डॉक्टर की लापरवाही से या फिर जातीय नरसंहार से मासूम बच्चे मारे जाते हैं। मुझे भी यह डर बना रहता था कि जहाँ जीवन का कोई ठिकाना नहीं, वहां जितना जल्दी हो सके मुंबई घूम लूँ। एक बात स्पष्ट कर देना जरूरी है कि जिस तरह चुनाव जीतने के लिए बूथ कब्जा करने की जरूरत पड़ती है, उसी तरह घूमने फिरने के लिए रुपयें पैसों की जरूरत पड़ती है। सो, कुछ घर से और कुछ पास पड़ोस से रुपये- गहने चुराकर घूमने का प्रोग्राम बना लिया। इसमें बुराई भी क्या है? हमारे देश के बहुत से देशभक्त सरकारी खजाना लूटकर विदेशों में घूमने जाते हैं। मैंने रुपये चुराकर मुंबई घूम

लिया तो क्या गुनाह किया। बहुत से देशभक्त तो अपने देश का पैसा विदेशों में पहुंचा देते हैं। मैंने तो बस इतना किया कि बिहार का पैसा महाराष्ट्र में खर्च किया। मिलाजुलाकर देश का पैसा तो देश में ही रहा।

तो मैं अपनी मुंबई यात्रा के बारे में बता दूँ कि कुव्यवस्था और गंदगी के लिए प्रसिद्ध पटना जंक्शन से मैं पटना-कुर्ला ट्रेन में बैठकर मुंबई के लिए रवाना हो गया। भारतीय रेल की परंपरा के अनुसार हमारी ट्रेन मात्र चार घंटे बिलंब से तीसरे दिन कुर्ला टर्मिनल पर पहुंच गई। भगवान उस ट्रेन का भला करे जो बिना दुर्घटनाग्रस्त हुए टिकट-बेटिकट सभी यात्रियों को उनके गंतव्य तक पहुंचा देती है। हां, ट्रेन में पहली बार सफर करने पर इस बात का अहसास हुआ कि हमारा देश वास्तव में विभिन्नता में एकता का प्रतीक है। जिस तरह पटना जंक्शन पर टिकट चेकर सीधे-सादे यात्रियों से नाजायज पैसा नोचते-खसोटते हैं उसी तरह कुर्ला टर्मिनल पर भी टिकट चेकर गांव-देहात से आये यात्रियों से पैसा छीनते-झपटते हैं। खैर मेरे साथ वैसा कुछ नहीं हुआ। कुर्ला टर्मिनल पर उतरने के बाद यात्रियों के सामानों का बोझ उठानेवाले और कभी-कभी सामान लेकर चंपत होनेवाले कुली मेरे सामानों को उठाने के लिए झपट पड़े। परंतु मैंने समझा दिया- "भइया मेरे सामानों को लाबारिश सामान समझकर छोड़ दो। इन्हें हाथ मत लागाना, क्योंकि अपना हाथ जगन्नाथ।" ऐसे भी मैं अपना बोझ दूसरे को नहीं उठाने देता। यह चेतना इसलिए जगी कि मैंने सोचा जब हमारे नेता इतने विशाल देश का बोझ अपने दुर्बल कंधों पर लटकाए हुए हैं

तो मैं अपने दो-चार सामानों का बोझ क्यों नहीं उठा सकता। जिस तरह चुनाव में हारने के बाद हमारे नेता सड़क पर आ जाते हैं, उसी तरह अपने सामानों के साथ प्लेटफार्म पर करके मैं सड़क पर आ गया।

यहां का हाल मत पूछिए। पूरी सड़क टैक्सी से खचाखच भरी हुई थी। जिस तरह चुनाव के समय विभिन्न राजनीतिक पार्टियों के नेता मतदाताओं को पटाने में लगे रहते हैं उसी तरह हर एक टैक्सी ड्राइवर यात्रियों को पटाने में लगा हुआ था। भइया, लेकिन सावधान! यदि आप मुंबई गए होंगे तो तजुर्बा होगा। और, यदि नहीं गए हैं तो ध्यान रखिए। जबतक आप उसकी टैक्सी में सवार नहीं हुए हैं, तबतक भारत के विनम्र नागरिक की तरह पेश आएगा और ज्योंहीं टैक्सी में सवार हुए, ड्राइवर का तेवर देखते बनता है। यूं कहा जाए कि जिस तरह चुनाव जीतने के बाद नेता का रुख बदल जाता है, उसी तरह टैक्सी में बैठ जाने के बाद ड्राइवर की बातचीत का अंदाज बदल जाता है। मेरे भाइयो! मुंबई जाने वाले यात्रियो! जिस तरह बिना सोचे समझे आप किसी भी राजनीतिक पार्टी को वोट दे देते हैं और बाद में खामियाजा आप ही को भुगतना पड़ता है, उसी तरह बिना सोचे समझे किसी ड्राइवर के झांसे में आकर उसकी टैक्सी में बैठने का परिणाम आपही को भुगतना पड़ेगा।

भगवान ने मुझे सुबुद्धि दी। सूझबूझ से काम लिया। और, बिना ज्यादा परेशान हुए, मुंबई शहर पहुंच गया। जैसा सुना था वैसा ही पाया। शहर है या भव्य इमारतों का गढ़। इतनी ऊँची-ऊँची इमारतें जिन्हें मैंने अपने अब तक के जीवन में नहीं देखा था। मेरे भाग्य में तो नहीं, यदि आपकी किस्मत में हवाई जहाज पर सफर करना लिखा हो तो कम से कम एक बार हवाई जहाज पर चढ़कर आकाश से मुंबई शहर का नजारा अवश्य लीजिए। जिस तरह बाहर से देखने पर हर नेता ईमानदार ही ईमानदार नजर आता है-जबकि हकीकत कुछ और होता है उसी तरह हवाई जहाज से झांकने पर मुंबई शहर में इमारतें ही इमारतें नजर आएंगी, जबकि इमारतों के अतिरिक्त भी बहुत कुछ है।

वर्षों बाद मेरे अरमान पूरा होने जा रहे थे। सो मन में काफी खुशी थी। बाहर से आनेवाले यात्रियों को मुंबई घूमने के लिए मुख्यत: चार साधन उपलब्ध हैं-प्राईवेट टैक्सी, लोकल बस, लोकल ट्रेन या फिर टेम्पो। टैक्सी की सवारी सत्ताधारी पार्टी के चुनावी टिकट की तरह महंगी है, जिसे साधारण आदमी खरीद नहीं सकता। लोकल बस विपक्षी पार्टी के टिकट की तरह है जो थोड़ा भाग-दौड़ करने पर रियायती दर पर मिल जाता है। लोकल ट्रेन के बारे में मत पूछिए। उस राजनीतिक पार्टी की तरह है, जहां एक नेता दूसरे नेता को धकियाते हुए आगे बढ़ने की कोशिश में लगा रहता है। टेम्पो की सवारी तो उस राजनीतिक पार्टी की तरह है जिसके लिए ज्यादा क्षेत्रों में नो इंट्री रहता है। ओखल में सिर, तो फूटने से क्या डरना! मुंबई घूमने निकला ही था तो चाहे जैसे संभव हुआ खूब घूमा।

❑ प्रोटोकोल प्रभारी
(पटना हाई कोर्ट)
पटना हवाई अड्डा, पटना

विचार दृष्टि का विज्ञापन दर

आवरण पृष्ठ

आवरण अंतिम पृष्ठ	25,000 रु०
,, द्वितीय पूर्ण पृष्ठ	15,000 रु०
,, द्वितीय आधा पृष्ठ	8,000 रु०
,, तृतीय पूर्ण पृष्ठ	15,000 रु०
,, तृतीय आधा पृष्ठ	8,000 रु०
,, द्वितीय व तृतीय चौथाई पृष्ट	4,000 रु०

साधारण पृष्ठ

रंगीन पूर्ण पृष्ठ	10,000 रु०
रंगीन आधा पृष्ठ	5,000 रु०
सादा पूर्ण पृष्ठ	4,000 रु०
सादा आध पृष्ठ	2,000 रु०
सादा चौथाई	1,000 रु०
सादा पट्टी	500 रु०

नोट: वर्ष के चारों अंक में विज्ञापन प्रदान करने वालों को 20 प्रतिशत की छूट दी जाएगी।

विज्ञापन प्रबंधक
'विचार दृष्टि'
यू.-207, शक्करपुर,
विकास मार्ग, दिल्ली-92
फोन: (011) 2230652

तमिलनाडु हिंदी अकादमी का सम्मान समारोह सम्पन्न

दि न्यू इंडिया इश्योरेन्स कंपनी लिमिटेड को सर्वश्रेष्ठ राजभाषा शील्ड

तमिलनाडु हिंदी अकादमी, चेन्नै द्वारा चेन्नै स्थित दि साऊथ इंडियन फिल्म चैंबर ऑफ कॉमर्स हॉल में गत 30 दिसंबर, 2001 को इसके चतुर्थ वार्षिकोत्सव के अवसर पर सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। इसमें म०प्र० के राज्यपाल महामहिम **भाई महावीर** ने तमिलनाडु में राजभाषा में उत्कृष्ट कार्य करनेवाले केंद्र सरकार/ उपक्रमों के कार्यालयों को सम्मानित किया। समारोह की अध्यक्षता **हेमंत कुमार सिन्हा**,

सचिव तमिलनाडु, लोक सेवा आयोग ने की। अकादमी के अध्यक्ष **बालशौरि रेड्डी** ने मान्य अतिथियों का स्वागत किया। अकादमी के महासचिव **ईश्वर करुण** ने इस अवसर पर प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन अकादमी की उपाध्यक्ष **डॉ० मधु धवन** ने किया।

सर्वश्रेष्ठ राजभाषा शील्ड (प्रथम पुरस्कार) दि न्यू इन्डिया इश्योरन्स कंपनी लि० क्षे० का०, चेन्नै को प्रदान किया गया। द्वितीय पुरस्कार चेन्नै टेलिफोन्स को मिला। इंडियन ओवरसीज बैंक, चेन्नै द्वारा राजभाषा में प्रकाशित 'वाणि' को श्रेष्ठ पत्रिका घोषित किया गया। राज्यपाल ने दक्षिण में हिंदी के प्रचार-प्रसार एवं राजभाषा के रूप में इसके कार्यान्वयन पर अपनी प्रसन्नता व्यक्त की। इस अवसर पर पुस्तकों एवं पत्र-पत्रिकाओं की एक प्रदर्शनी भी लगाई गई। **डॉ० सुबह्मण्यम** 'विष्णुप्रिया' ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

प्रस्तुतिः ईश्वर करुण
महासचिव, तमिलनाडु
हिंदी अकादमी, चेन्नै

'वनवास झेलती भारती' का लोकार्पण समारोह

विगत 5 दिसंबर को सूड़ी समाज धर्मशाला दरभंगा में **हिंदी समाहार मंच** के तत्वावधान में महर्षि श्री अरविंद स्मृति पर्व समारोह सह-विमोचन कार्यक्रम संपन्न हुआ। विमोचित नाट्य कृति 'वनवास झेलती भारती' के कृतिकार शेखर कुमार श्रीवास्तव हैं।

कार्यक्रम का प्रारंभ नाट्य कृति के विमोचनकर्त्ता, मुख्य अतिथि एवं अंतरराष्ट्रीय साहित्य संस्कृत विकास संस्थान जबलपुर (मध्य प्रदेश) के निदेशक डॉ० विनोद कुमार सिन्हा के द्वारा अरविंद को माल्यार्पण एवं दीप प्रज्ज्वलन से किया गया।

डा० सिन्हा ने इस अवसर पर कहा कि अब से पहले साहित्यकार केवल साहित्य का ही सृजन नहीं करते थे, अपितु साहित्यकारों का भी सृजन करते थे। मुख्य वक्ता के रूप में बोलते हुए साहित्यकार शंभु अगेही ने आध्यात्मिकता एवं राष्ट्रीयता के विकास पर बल दिया। विद्वान प्राध्यापक एवं समीक्षक डा० कृष्णचन्द्र झा ने लोकार्पित पुस्तक का उल्लेख करते हुए आह्वान किया कि राष्ट्र के पुरोहित ही राष्ट्रीय चेतना का अलख जगा सकते हैं। अन्य वक्ताओं में निरंजन, हीरा लाल साहनी, डा० सतीशचन्द्र भगत आदि थे। विशिष्ट अतिथि स्थानीय राज. उच्च विद्यालय के प्रधानाध्यापक बुचरू पासवान ने अपने सारगर्भित विचारों से सभा को आप्लावित किया।

मंच के अध्यक्ष डा० ब्रह्मदेव प्रसाद कार्यी ने 'बनवास झेलती भारती' के शिल्प और संवाद पर प्रकाश डालते हुए कहा कि यह एकांकी शिल्प और विचार का मणिकांचन योग है। कार्यक्रम का संचालन आशुतोष चंचल ने किया।

कार्यक्रम के दूसरे चरण में आयोजित काव्यांजलि का प्रारंभ जानकी देवी के मधुर गीत से किया गया। अन्य कवियों में, बुचरू पासवान, शंभु अगेही, निरंजन, कपिलदेव प्रभाकर, विनोद विनीत, मोहन दरभंगिया, निधि कुमार सिंह, शेखर कुमार श्रीवास्तव, आशुतोष चंचल एवं ब्रह्मदेव प्रसाद कार्यी आदि थे।

कवि सम्मेलन का संचालन साहित्यकार शंभु अगेही ने किया एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में मैथिली कवि शंख पिया ने अपने संक्षिप्त भाषण एवं काव्य पाठ से श्रोताओं को रसाप्लावित कर दिया। धन्यवाद-ज्ञापन मंच के सचिव अमिताभ कुमार सिन्हा ने किया।

प्रस्तुतिः अध्यक्ष
हिंदी समाहार मंच
मुल्लोबाड़ा, दरभंगा

लेखिका साहित्य संस्थान, जयपुर

सम्मान समारोह

प्रस्तुतिः प्रो० राज चतुर्वेदी

'लेखिका साहित्य संस्थान', 'प्रज्ञा मंच' महारानी कॉलेज तथा 'इण्डो जर्मन सोसाइटी' के संयुक्त तत्वावधान में विगत 27-28 जनवरी को जयपुर में द्विदिवसीय साहित्यिक कार्यक्रम आयोजित किया गया।

पहले दिन 'लेखिका साहित्य संस्थान' ने अपने छठे सम्मान समारोह में देश की प्रख्यात लेखिका डा० मुदुला गर्ग को सम्मानित किया। इस अवसर के विशिष्ट अतिथि डॉ० विश्वंभरनाथ उपाध्याय तथा अध्यक्ष एवं राजस्थान विश्वविद्यालय के कुलपति के.एल. कमल थे।

सबसे पहले दूरदर्शन की पूर्व निदेशिका विमला मित्तल ने सरस्वती वंदना के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ किया। तत्पश्चात **लेखिका साहित्य संस्थान** की अध्यक्षा सुमन मेहरोत्रा ने आगंतुक महानुभावों का स्वागत किया। सम्मान समारोह में विशिष्ट साहित्यिक कृतित्व के लिए मुदुला गर्ग को 'वाग्मणि सम्मान' से विभूषित किया गया। दूसरी महिला समाजसेवी डॉ० कलावती त्रिपाठी को उनके सामाजिक उत्थान के कार्यों तथा महिलाओं के विकास संबंधी अभियानों के लिए 'कर्मश्री' सम्मान से सम्मानित किया। उल्लेख्य है कि डॉ० त्रिपाठी **अखिल भारतीय महिला परिषद्** की अध्यक्षा हैं।

इस अवसर पर अपने उद्‌गार व्यक्त करते हुए डॉ० त्रिपाठी ने जोर दिया कि देश की महिलाओं को यदि आगे बढ़ना है तो उन्हें शिक्षित व स्वस्थ रहना होगा। उन्होंने कहा-मुझे जो सम्मान दिया गया है वह उन सभी का सम्मान है जो नारी जागरण आंदोलन में मेरे साथ जुड़े हुए हैं।

विशिष्ट अतिथि डॉ० उपाध्याय ने मृदुला जी के लेखन को नवीनता के साथ-साथ वर्जना के विरोध में साहसपूर्ण कार्य करने वाली महिला बताया। आपने उनके 'अनित्य' नामक उपन्यास पर भी चर्चा की। डॉ० के. एल. कमल ने अध्यक्ष पद से बोलते हुए कहा कि साधारण आदमी अच्छा साहित्यकार नहीं बनता। जो संस्कृति अंदर झांकना सिखाती है, वही संस्कृति सुंदर होती है।

दूसरे दिन के कार्यक्रम में महारानी कॉलेज में 'रचना कर्म का मर्म' विषय पर व्याख्यान देते हुए अपनी सारगर्भित वक्तृता में डा० मृदुला गर्ग ने कहा- लेखक एक मामूली आदमी को गैर मामूली बना देता है। उसके चित्रण के बाद समाज की जिम्मेदारी है कि उस चरित्र का सामान्यीकरण करें और उसकी हालत सुधारने का प्रयास करें।

उन्होंने कहा लेखक समाज की हालत का बयान करता है और उस बयान किए हुए हालात को बदलने के लिए हम सबकी एक सामूहिक जिम्मेदारी बनती है। लेखक तो सिर्फ एक खाका भर बनाता है। अपनी विचार सरणि को आगे बढ़ाते हुए श्रीमती गर्ग ने कहा कि साहित्य पढ़ने की संवेदना हमारे भीतर होनी चाहिए। साहित्य एक मित्र की तरह का सुकून देता है। महारानी कॉलेज परिसर में संपन्न इस कार्यक्रम की अध्यक्षता राजस्थान विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग की अध्यक्षा प्रो० सुदेश बन्ना ने की तथा प्रतिष्ठित अंग्रेजी लेखिका प्रो० जसवीर जैन मुख्य अतिथि थी।

❑ **प्रांतीय अध्यक्ष, राष्ट्रीय विचार मंच, 23, चन्द्रपथ, सूरजनगर (पश्चिम), राजस्थान, जयपुर-6**

रचनाकारों से

1. **रचना भेजने के लिए कोई शर्त नहीं है, सभी रचनाकारों का हम हार्दिक स्वागत करते हैं। उदीयमान रचनाकारों को विशेष रूप से प्रोत्साहित किए जाने का प्रयास रहेगा।**
2. **राष्ट्रीय भावनाओं पर आधारित तथा वैचारिक रचनाओं को प्राथमिकता दी जाएगी।**
3. **रचना एक तरफ/कम्प्यूटर पर कम्पोज्ड अथवा सुवाच्य स्पष्ट लिखी होनी चाहिए।**
4. **रचना के अंत में उसके मौलिक अप्रकाशित व अप्रसारित होने के प्रमाण पत्र के साथ रचनाकार का हस्ताक्षर, नाम व पूरा पता अवश्य लिखा होना चाहिए।**
5. **रचना के साथ पासपोर्ट/स्टाम्प आकार की स्वेत एवं श्याम तस्वीर की दो प्रतियाँ अवश्य संलग्न करें।**
6. **अप्रकाशित रचनाएँ वापस नहीं की जाती, कृपया उसकी प्रति अवश्य रख लें।**
7. **प्रकाशित रचनाओं पर फिलहाल पारिश्रमिक देने की कोई व्यवथा नहीं है, हाँ, रचना प्रकाशित होने पर अंक की प्रति अवश्य भेजी जाऐगी।**
8. **किसी भी विधा की गद्य रचनाएं 1500 शब्दों अथवा दो पृष्ठों की मर्यादा में ही स्वीकार्य होंगी।**
9. **समीक्षार्थ पुस्तक की दो प्रतियां भेजना आवश्यक है।**
10. **रचनाएं कम्प्यूटर पर कम्पोज्ड कराकर उसे इन्टरनेट पर भेजें जिसका E-mail नं० है- vicharbharat@hotmail.com**

डॉ० शिवनारायण, कार्यकारी सम्पादक, **विचार दृष्टि**
'बसेरा' पुरन्दरपुर, पटना-1
दूरभाषः (0612) 228519

सिद्धेश्वर, सम्पादक, **विचार दृष्टि**
दृष्टि 6, विचार बिहार, यू-207, शकरपुर, विकास मार्ग
दिल्ली-92, दूरभाषः (011) 2230652

भारतीय साहित्य के महाकुंभ में अंग्रेजी लेखकों का उत्सव

❑ मनोज मेहता

अरावली की प्राचीन पहाड़ियों पर स्थित निमराना किला के महल में भारतीय साहित्य के अंतर्राष्ट्रीय महाकुंभ में अंग्रेजी लेखकों के तैरने की भरपूर व्यवस्था है, लेकिन हिंदी सहित अन्य भारतीय भाषाओं को इस महाकुंभ में डुबकी लगाने भर की जगह मुश्किल से मिली है। भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् द्वारा आयोजित भारतीय साहित्य के इस अंतर्राष्ट्रीय महोत्सव में भारतीय और भारतीय मूल के अंग्रेजी लेखकों की तुलना में अन्य भारतीय भाषाओं के लेखकों की स्थिति किसी कठोर वर्ण व्यवस्था वाले गांव में रहने वाले दलितों जैसी रही।

इस महोत्सव में हिंदी के लेखकों में से सिर्फ तीन, निर्मल वर्मा, कृष्णा सोबती और श्रीलाल शुक्ल को आमंत्रित किया गया था, जिसमें से निरमाना में सिर्फ श्रीलाल शुक्ल ही आ पाये। इस महोत्सव में अंग्रेजी के तीन आलोचकों डेविड हार्सपोल (सहायक संपादक टीएलएस), लिटरेरी रिव्यू (यूको) के संपादक नैन्सी शेल्डेक और नेशनल रिव्यू (यूएसए) के संपादक डेविड जोन्स को तो आमंत्रित किया गया, किंतु हिंदी के आलोचक डा० नामवर सिंह को नहीं। हिंदी के किसी कवि को भी शामिल न करके आयोजकों ने प्रकारांतर से इस पूरे आयोजन को अंग्रेजी लेखकों का उत्सव बन जाने दिया। यह कल्पना कर पाना अपने आप में बेमानी है कि भारतीय साहित्य की जहां चर्चा हो वहां महाश्वेता देवी, नामवर सिंह, नामदेव ढसाल, शरद कुमार लिंबाले, केदारनाथ सिंह, राजेन्द्र यादव, कुंवर नारायण आदि न हों।

इस उत्सव में किसी दलित लेखक को शामिल न किये जाने पर अपना विरोध प्रकट करते हुए प्रख्यात कन्नड़ लेखक यूआर अनन्तमूर्ति ने कहा कि भारतीय लेखक को आमंत्रित न किया जाना गलत है। हिंदी के श्रीलाल शुक्ल भी आयोजकों के रवैये से नाखुश दिखे। हिंदी के साथ अन्य भारतीय भाषाओं को उचित प्रनिनिधित्व नहीं दिया जाना उनके दुःख का कारण था। उन्होंने कहा कि इसमें कई भारतीय भाषाओं के लेखकों को बुलाया तक नहीं गया है।

महोत्सव में शामिल अंग्रेजी लेखकों ने भारतीय साहित्य की खामियां बताने से लेकर लेखन की भाषा के रूप में अंग्रेजी के महत्व पर जमकर प्रकाश डाला। नोबेल पुरस्कार प्राप्त वीएस नायपाल को भारतीय साहित्य में 'ह्यूमर' की कमी के साथ अधिक मात्रा में 'बायोग्राफी' का न लिखा जाना ग्वटका तो भारतीय अंग्रेजी लेखक खुशवंत सिंह को भारतीय साहित्य में 'साहित्य' की कमी महसूस हुई। अंग्रेजी लेखिका शशि देशपांडे की अंग्रेजी के मुकाबले अन्य भाषाएं कम कल्पनाशील लगीं। अंग्रेजी को 'बड़ी' और अन्य भारतीय भाषाओं को 'छोटी' बताने के बहुत सारे तर्क निरमाना महल के फर्श पर बिछे हुए थे। नयन तारा सहगल ने स्पष्ट किया कि भाषा का महत्व सत्ता, शक्ति और अर्थ से तय होता है। इसीलिए शशि देशपांडे ने अंग्रेजी को 'पावर' की भाषा बताया। साहित्य सत्ता और शक्ति से नहीं रची जाती। सुनील बंद्योपाध्याय ने कहा कि अपनी भाषा में लिखना ज्यादा सहज है। उन्होंने कहा कि बांग्ला के महान लेखक बंकिम चंद्र और विख्यात कवि माइकल मधुसूदन दत्त ने अपना लेखन अंग्रेजी में आरंभ किया, किन्तु अनुभूति और अभिव्यक्ति के बीच के फांक ने उन्हें बांग्ला को चुनने के लिए विवश किया। यू आर अनन्तमूर्ति ने इस विस्तार देते हुए कहा कि भारतीय लेखक अंग्रेजी में 'पावर' के लिए लिखते हैं। उन्होंने कहा कि भारतीय अंग्रेजी लेखक भारतीय परंपरा और संस्कृतिसे अनभिज्ञ हैं। अपनी जड़ों में बैठे बगैर महत्वपूर्ण साहित्य नहीं लिखा जा सकता। उन्होंने कहा कि भारतीय लेखकों की जड़ें उनकी अपनी भाषाओं में हैं न कि अंग्रेजी में। उन्होंने कहा कि एक भाषा के रूप में अंग्रेजी उन्हें प्रिय है, क्योंकि विलियम ब्लैक, डब्ल्यूवी यीट्स, शेक्सपीयर आदि की रचनाएं इस भाषा में हैं।

अपने आपको आंदोलनकारी नहीं बताते हुए सूटेबल ब्वाय विक्रम सेठ ने पाठ्य-पुस्तकों में किये जा रहे बदलावों पर कोई भी टिप्पणी करने से मना कर दिया।

राष्ट्रीय सहारा से साभार

MAHESH HOMOEOPATHIC
M-L LABORATORY
&
GERMAN HOMOEO STORES

Saket Plaza, Jamal Road,
Patna-800001

Ph: (0612) 238292, 230641 (o)
674041 (R)
Fax: (0612) 230641

Offers a wide range of mother Tinchers,
Dillutin Biochemic Tablets Patents, Globels

Dr. Mahesh Prasad
D.M.S. (Patna)

Dr. Arun Kumar
D.H.M.S. (Patna)

Spcialist in Chronic Diseases

रेड्डी ने अपने लेखन में कुछ नहीं छिपायाः कमलेश्वर

बालशौरि रेड्डी जिस तरह से एक किसान के घर पैदा हुए और जिस तरह से वे वहां से निकल कर आए उन प्रसंगों का जिक्र करते हुए वरिष्ठ कथाकार कमलेश्वर ने यहां कहा कि आज का आदमी जितना चीजों को छुपाता है उसके विपरीत बालशौरि रेड्डी अपनी रचनाओं में उस चीज को न छुपाते हुए हमारे सामने रख देते हैं- बगैर किसी लाग-लपेट और भीतर के विचलन के। यह बात उन्होंने आज यहां डॉ. बालशौरि रेड्डी के महत्तम योगदान के उपलक्ष्य में प्रकाशित अभिनव ग्रंथ 'अपने-अपने बालशौरि रेड्डी' के लोकार्पण के अवसर पर कही। उन्होंने कहा कि रेड्डी भारतीय संस्कृति और सभ्यता की अटूट परंपरा के उन्नायक हैं। कार्यक्रम का आयोजन अखिल भारतीय हिंदी संस्था संघ ने किया था।

साहित्य आकादमी, दिल्ली के सभागार में आयोजित अभिनंदन समारोह में अमित प्रकाशन, गाजियाबाद से प्रकाशित अभिनंदन ग्रंथ 'अपने-अपने बालशौरि रेड्डी' का लोकार्पण करते हुए राज्यसभा सदस्य और विधिवेत्ता डॉ. लक्ष्मीमल्ल सिंधवी ने कहा कि बालशौरि रेड्डी की जीवन-यात्रा अनुपम है। अद्वितीय कीर्तिमान उनकी जीवन यात्रा में शामिल है। रेड्डी को दक्षिण भारतीय भाषाओं और हिंदी के बीच का सेतु बताते हुए उन्होंने कहा कि डॉ. रेड्डी ने जीवन भर भाषा का, साहित्य का, संस्कृति का मार्ग बनाया। यें अपने अपने बालशौरी रेड्डी नहीं, 'सबके बालशौरी रेड्डी' हैं। इस नाम से एक और ग्रंथ प्रकाशित होना चाहिए।

इस अवसर पर कार्यक्रम के अध्यक्ष कमलेश्वर ने शॉल ओढ़ाकर बालशौरि रेड्डी का अभिनंदन किया। मुख्य अतिथि गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. धर्मपाल ने अपनी बात रखते हुए यह उम्मीद जताई कि डॉ. रेड्डी हिंदी और तेलूगू के बीच सेतु का काम करते रहेंगे। इस अवसर पर डॉ. गंगाप्रसाद विमल ने भी अपने विचार रखे। कार्यक्रम का संचालन साहित्य अकादमी के उपसचिव रणजीत साहा ने किया और धन्यवाद-ज्ञापन एन. के. मिश्र ने किया।

कौल भारत के नए सीएजी

भारतीय प्रशासनिक सेवा के वरिष्ठ अधिकारी **विजयेंद्र नाथ कौल** को भारत के नए नियंत्रक-महालेखापरीक्षक (Comptroller and Auditor-Generalof India) के पद पर नियुक्त किया गया है।

राष्ट्रपति के. आर. नरायणन ने राष्ट्रपति भवन के भव्य अशोक हॉल में आयोजित एक गरिमामय समारोह में कौल को पद की शपथ दिलाई । निरवर्तमान सीएजी बी. के. शिंगलू के मार्च के मध्य में सेवा निवृत होने के कारण श्री कौल को उनकी जगह नियुक्त किया गया है ।

बिन माँगे ही जिसके हाथों में एक पशस्त्रि पत्र थमा दिया

❑ प्रो० रामबुझावन सिंह

गुलाम भारत के विभिन्न गलियारों में चक्कर काटता हुआ मैं चन्द्रधारी मिथिला कॉलेज, दरभंगा के हिंदी विभाग में प्राध्यापक बनकर सन 1945 के मध्य में पहुँचा था, जिसके विभागाध्यक्ष पं० जगन्नाथ प्रसाद मिश्र थे, तथा प्राचार्य श्री विश्व मोहन कुमार सिंह थे। हिंदी विभाग में ही श्री रामलोचन झा 'कंटक' भी थे तथा अंग्रेजी विभाग में प्रो० कलक्टर सिंह केसरी भी इस प्रकार उन दिनों सी.एम. कॉलेज में एक प्रकार से हिंदी का एक प्रभा-मण्डल-सा उपस्थित हो गया था। जहां आए दिन प्राध्यापक- रूप में वहां अभी जन्म ही हुआ था, जिसको दूध के दांत भी नहीं उगे थे। तुतला-तुतलाकर बोलता था वह भी पं० मिश्र जी एवं **कंटक जी** के सामने तो बोलती ही बंद हो जाती थी, क्लास में जाते समय लगता था, जैसे फांसी के फंदे में झूलने जा रहा हूँ लगता है। हमें भी ऐसा ही लगता था। पर क्लास के बाहर आते ही हम छात्रों के साथ घुल-मिल जाते थे, दोनों के बीच उम्र की दूरी कम होने के कारण छात्र हमें शिक्षक कम, सहचर अधिक समझते-मानते थे। खासकर वे छात्र, जो हिंदी पठन-पाठन में औरों से अधिक रुचि रखते थे। वे एक प्रकार से हमजोली-से हो जाते थे और नजरों पर विशेष रूप से चढ़ जाते थे। आजाद भारत होते ही मैं बी. एन; कॉलेज में आ गया था- थोड़ा अनुभव प्राप्त कर यहां आने पर भी मेरी चिंता छात्रों की नजरों पर एक सफल अध्यापक के रूप में चढ़ जाने और कुछेक मेधावी छात्रों का अपनी नजरों पर चढ़ा लेने की स्वाभाविक थी। मैं उनकी नजरों पर कितना चढ़ा था, यह तो ज्ञात नहीं, पर जो दो-एक छात्र मेरी नजरों पर चढ़ गए थे उनमें एक इन्टरमीडिएट का ही छात्र रहा। वह भी कैसे और कौन-सा था वह छात्र? इन पंक्तियों को लिखते समय मैं 82वीं पतझड़ अपने जीवन का पार करने को हूँ और जिस समय की यह गाथा लिख रहा हूँ, वह मेरे जीवन का 30वां वसंत रहा होगा, और उस छात्र-विशेष का संभवत: वीसवां, कॉलेज की हिंदी सभा का नाम था श्री हरिश्चन्द्र सभा, जो आज भी है। आए दिन उसको मंच पर साहित्यिक आयोजन होते रहते थे, जिनमें शिक्षको एवं आमंत्रित व्यक्तियों के अतिरिक्त साहित्यानुरागी विशिष्ठ छात्र भी भाषण में जिस छात्र ने अपनी गरजन सुनायी, उसने छात्र-समुदाय से तो जमकर तालियां बटोरी ही, मेरे मुंह से भी बरबल, बेसाख्ता निकल पड़ा, इस बिहार नेशनल कॉलेज को ही नहीं, बिहार प्रदेश के हिंदी मंच के एक दूसरा नवयूवक जानकी वल्लभ मिल गया। कैसा विचित्र संयोग रहा कि वह प्रौढ़ कवि भी जानकी वल्लभ शास्त्री रहे, जिनकी मधुरी-काकली की अनुगूंज से केवल बिहार ही नहीं पूरे भारत के हिंदी एवं संस्कृत के कवि मंच गुंजित रहते रहे हैं। तो यह दूसरा वल्लभ गोपीवल्लभ रहा, जिसकी गीतों की अनुगूंज भी बिहार की सीमाएं पार कर गयी है। उस आयोजन के दूसरे ही दिन मैंने उस छात्र की पीठ थपथपायी और बिन मांगे ही उसके हाथ में एक प्रशस्त्रि पत्र थमा दिया जो किसी उदीयमान-गीतकार कवि की पहली पहचान कर लेनेवाली मेरी अपनी पहचान क्षमता का भी प्रमाण पत्र था।

❑ बाकरगंज बजाजा, पटना

'हमारी राजनीतिक विरासत' का लोकार्पण

पिछले दिनों पटना कॉलेज के सेमिनार हॉल में डॉ० राधाकृष्ण सिंह की सद्यः प्रकाशित पुस्तक **हमारी राजनीतिक विरासत** का लोकार्पण करते हुए दैनिक हिंदुस्तान के संपादक **गिरीश मिश्र** ने कहा कि इस पुस्तक में लोकतंत्र को गहराई से समझने का प्रयास किया गया है। श्री मिश्र ने कहा कि **हमारी राजनीतिक विरासत** पुस्तक जातीय ध

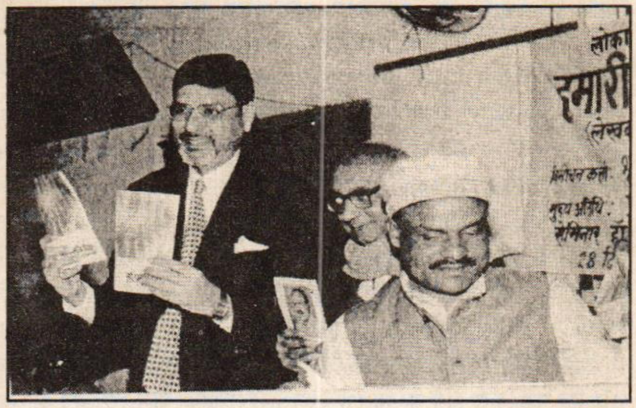

्रुवीकरण के अंतर्द्वंद्व को उभारती है। पिछड़े, दलितों के बीच चलनेवाले घात-प्रतिघात और अंतर्द्वंद्व जटिलता पैदा कर सामाजिक न्याय को प्रभावित करते हैं। आज समाज में जातीयता का जो महाजाल जलकुंभी की तरह फैला है, वह ज्यादा समय तक चलनेवाला नहीं है।

मुख्य अतिथि पद से पटना विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो० कमलकांत झा ने कहा कि आज की जाति पर आधारित राजनीति से सामाजिक एकता बिखर रही है।

समारोह के अध्यक्ष मधुकर सिंह ने कहा कि आज के अराजक दौर से गुजरते हुए राजपाट के खेल में संस्कृति, साहित्य और पत्रकारिता-मुक्ति की लड़ाई लड़ रहे हैं।

'राजमाया' के संपादक अमर्लेंदु ने कहा कि लेखक ने अपनी इस पुस्तक में चेतना की चिनगारी तो पैदा कर दी है, किंतु यह शोला नहीं बन पायी है।

डॉ० सच्चिदानंद सिंह 'साथी' ने कहा कि डॉ० सिंह ने भारतीय राजनीति में 'जातीय-संघर्ष' का निरूपण किया है। उन्होंने लोकतंत्र के कतिपय विसंगतियों का भी रहस्योद्घाटन किया है।

डॉ० राधाकृष्ण सिंह ने अपने लेखकीय उद्गार में कहा कि उनकी पुस्तक में राजनीति की यथार्थ तस्वीर खींचने का प्रयास किया गया है। शिखर राजनेताओं में कार्यकर्ताओं के प्रति मोह समाप्त हो रहा है। आज की घटनाएं ही कल की विरासत होती हैं।

प्रस्तुतिः प्रकाश चंद्र ठाकुर
अंश कालिक संवाददाता,
आकाशवाणी केंद्र, पटना

कविता ही मनुष्य को सही दिशा की ओर प्रवृत कर सकती है

शिवनारायण का एकल काव्य-पाठ

पटना विश्वविद्यालय के पटना ट्रेनिंग कॉलेज द्वारा 10 फरवरी, 2002 को कॉलेज-सभागार में 'कविता के माध्यम से शिक्षा' विषयक कार्यक्रम के अंतर्गत चर्चित कवि डॉ० शिवनारायण का एकल काव्य-पाठ हुआ। इस आयोजन की अध्यक्षता शिक्षाविद् डॉ० सच्चिदानंद सिंह 'साथी' ने की एवं संचालन किया पटना ट्रेनिंग कॉलेज के प्राध्यापक डॉ० राधाकृष्ण सिंह ने।

आयोजन का उद्घाटन करते हुए राष्ट्रीय विचार मंच के अध्यक्ष जियालाल आर्य ने कहा कि वर्तमान शिक्षा एवं शासन-व्यवस्था की दिशाहीनता तथा संवेदनशून्यता के कारण आदमी पशु से भी अधिक हिंसक होता जा रहा है, जिसके कारण समाज में भारी अराजकता फैलती जा रही है। ऐसे विस्फोटक समय में कविता ही मनुष्य को सही दिशा की ओर प्रवृत कर सकती है। डॉ० शिवनारायण की कविताएं केवल अपने समय का यथार्थ ही नहीं परोसती, उसकी सही समझ भी देती हैं।

संगोष्ठी के विशिष्ट अतिथि डॉ० कलानाथ मिश्र ने कहा कि सामाजिक परिवर्तनों के बारीकी एवं कलात्मक रूप से अपनी कविताओं में आत्मसात करने के कारण ही डॉ० शिवनारायण ने कविता के क्षेत्र में अपनी पहचान बनाई है।

अन्य अतिथि वक्ताओं में शिक्षा विभाग की अध्यक्ष डॉ० सरोजबाला सिन्हा, डॉ० कल्याणी सिंह, डॉ० राधाकृष्ण सिंह, डॉ० बी० एन० विश्वकर्मा, तलत जीवन, ध्रुव कुमार, सिद्धेश्वर, प्रो० रामजी गोस्वामी, डॉ० कन्हैया सिंह, डॉ० सुभाषचंद्र राय आदि ने भी संगोष्ठी को संबोधित करते हुए डॉ० शिवनारायण के काव्य-वैशिष्ट्य पर प्रकाश डाला।

आयोजन में डॉ० शिवनारायण ने गांव-कस्बों से लेकर देश-दुनिया के सामयिक यथार्थ से जुड़ी लगभग एक दर्जन कविताओं का पाठ किया।

अपने अध्यक्षीय भाषण में डॉ० सच्चिदानंद सिंह 'साथी' ने कविता को जन-जन से जोड़ने पर बल देते हुए पाठ्यक्रमों में कविता के माध्यम से मूल्यबोध को स्थापित करने पर जोर दिया। इस सारस्वत आयोजन का समापन बी० एड० के छात्र द्वय मो० अख्तार हुसैन एवं पंडित विनय कुमार के धन्यवाद ज्ञापन से हुआ।

प्रतुतिः सिद्धेश्वर
अवसर प्रकाशन
करबिगहिया, पटना

साक्षातकार

जनबल को जगाना चाहते थे लोहिया और जे.पी.

गीतकार गोपीवल्लभ सहाय से सिद्धेश्वर की बातचीत

समकालीन हिंदी गीत व हिंदी ग़ज़ल के सशक्त हस्ताक्षर गोपीवल्लभ सहाय प्रचार और तामझाम से दूर रहनेवाले ऐसे गीतकार हैं जिनके गीतों में जनाकांक्षा, आम आदमी का सपना और खेतों में खून-पसीना बहानेवाले धरती-पुत्रों-पुत्रियों के घायल स्वर सुनाई पड़ते हैं- *"सन्नाटा/ जिसने बोया उसने कब काटा/ गेहूँ उपजाते जो गूँथते नहीं आँटा। याचना यहीं, किस-किस को नहीं कबूल? मत माँगो पानी-मिट्टी खुशबू-फूल/अभी मत माँगो।"*

पटना के गर्दनीबाग, में 1 जनवरी, 1936 को जनमे गोपीवल्लभ की अब तक तीन सौ से अधिक गीत, नवगीत, नुक्कड़गीत, ग़ज़लें कविताएं, रिपोर्ताज, संस्मरण, यात्रा-वृतांत, समीक्षाएं, भेंटवार्ताएं तथा वैचारिक टिप्पणियाँ राष्ट्रीय तथा क्षेत्रीय पत्र- पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुकी हैं। इनके आंदोलनी गीत, ग़ज़ल और मुक्त छंद की कविताएं दिल्ली से 1993 में प्रकाशित इनके एक मात्र काव्य-संग्रह "**बंजर के बीज**" में हैं। इस काव्य संग्रह की अच्छी चर्चा हुई।

बिहार सरकार के पुलिस विभाग में जन-संपर्क पदाधिकारी तथा विभाग से प्रकाशित **आरक्षी** पत्रिका के संपादक के पद पर रहते हुए भी 1974 के जे०पी० आन्दोलन के वक्त गोपीवल्लभ ने नुक्कड़ गीतों के माध्यम से न केवल अपने जागरूक नागरिक के कर्तव्य-बोध का अहसास लोगों को कराया बल्कि आम जन-मानस को झकझोरा। इसी प्रेरणा से शाम को नुक्कड़ों, चौराहों पर आंदोलन के पक्ष में जनता को प्रशिक्षित करने के उद्देश्य से यह कवि कविता-पाठ में सम्मिलित होता था। 8 मार्च, 1974 को जब जे०पी० के नेतृत्व में स्थानीय गाँधी मैदान से मौन जुलूस निकला, तब उस दिन उन्होंने लिखा-"नासमझों ने तो गाँधी को एक बार मारा है/ हमने सोच-समझकर लेकिन लगातार मारा है/ गाँधी का यह देश गाँधियों से ही डरा-डरा है/ गाँधी नहीं मरा है।" इसी प्रकार से "जहाँ-जहाँ जुल्मों का बोल/बोल जवानों हल्ला बोल/ भूखे-प्यासे नंगे हम/ बोलो बम, बोलो बम/" और "नेताओं को करो प्रणाम, भज लो राम, भजालो राम" स्वतः उन दिनों के घटनाक्रम में कवि के कंठ से फूट पड़े। जब आंदोलन चरमोत्कर्ष पर था, इन गीतों को खूब सुना-सराहा गया।

पूरे उन्नीस महीनों की काल रात्रि जब देश में इमरजेन्सी बनकर घिरी ये पंक्तियाँ- *"नमक-मिर्च-चिनियाबादाम/खाओ, पिओ, करो, आराम/पाचक है जनता का नाम।*

पच जाता है देश तमाम/नमक पचाते नमक हराम/भज लो राम, भजा लो राम।" सच हो गयी। आपातकाल की सम्पूर्ण अवधि में यह गीत उत्तर भारत के साहित्य मंचों पर सुना गया।

पूरे आंदोलन को अपनी कविताओं से उठानेवाले हिंदी कवि गोपीवल्लभ का कहना है कि आज जो सत्ता पक्ष है, वही लोग 1974 में समाज, राजनीति और सरकार में व्याप्त मूल्य-हीनता, विषमता और जातिगत भेद-भाव के विरूद्ध सड़क पर उतरे थे। आज की राजनीति से क्षुब्ध गोपीवल्लभ का स्पष्ट मानना है कि जे.पी. ने जिन आदर्शों और मूल्यों को लेकर संपूर्ण क्रांति के रूप में देश के अंदर समस्याओं के पैदा करनेवालों पर चोट की थी

उसे उनके सहयोगियों ने भुला दिया। इस आंदोलन में फणीश्वरनाथ रेणु और नागार्जुन के साथ सत्यनारायण, बाबूलाल मधुकर एवं अन्य कवि तथा रचनाकार, रंगकर्मी और चित्रकार भी थे। उसी जनसंघर्षी सांस्कृतिक मंच के एक सक्रिय सदस्य **गोपीवल्लभ** भी थे। इनकी धारणा है कि इस देश में सांस्कृतिक क्रांति होती तो आज के अधिकांश व्यक्ति में जीवन के शाश्वत मूल्यों के प्रति गहरा लगाव होता। आदर्श तो बड़ी चीज है, आज के समाज से नैतिकता का भी भयानक लोप हो चुका है। आज चारों तरफ अंधेरा है, दिशाहीनता है और अपने ही सपनों और लक्ष्य से हटे और गिरे हुए लोगों का समूह है जिन्हें हम श्रीमान् कहते हैं। गोपीवल्लभ की एक ग़ज़ल है *"जाके हम देख चुके इन्कलाब की हद में/लोग सड़कों पे उठे और गिरे संसद में।"* अब इसे पढ़-सुनकर ऐसा लगता है कि उन्हीं लोगों के लिए यह रचना लिखी गयी है जो आज केन्द्र और राज्यों के शीर्ष पदों पर हैं।

11 अक्टूबर 2001 से लोकनायक जयप्रकाश नारायण की जन्मशती 11 अक्टूबर को समाप्त हागी। इसी ख्याल से ज.पी. आंदोलन के इस चर्चित कवि गोपीवल्लभ से बातचीत करना लजिमी समझा गया। उल्लेख्य है कि गीतकार गोपीवल्लभ, जिनके सस्वर कविता-पाठ से उनकी अलग पहचान बनी, का स्वर आज लड़खड़ा गया है और वे इधर कई माह से शारीरिक रूप से रूग्ण हैं। दिल्ली से प्रकाशित राष्ट्रीय चेतना की वैचारिक त्रैमासिकी **विचार दृष्टि** के बीते वर्ष तक लगातार गोपीवल्लभ परामर्शी तो रहे ही, उसके संपादक को भी उनसे निरंतर लिखने-पढ़ने तथा कुछ करते रहने की प्रेरणा मिलती रही है। प्रस्तुत है यहाँ संपादक सिद्धेश्वर से हुई उनकी बातचीत के प्रमुख अंश-

गीत लिखना आपने कब और क्यों प्रारम्भ किया?

बाहर जाते उपहारों पर दो चार पंक्तियां लिख देता था, दादा-दादी को अच्छा लगता था, उसे गाता तो और अच्छा लगता था, बस यहीं से शुरू हो गयी गीत-यात्रा। शायद परिवार में यह पहले नहीं होता था, इसलिए महत्व मिल जाता था, 1946-48 का समय था। तब मुश्किल से मेरी उम्र दस या बारह की रही होगी।

गीतों व कविताओं की भाषा को लेकर अक्सरहा सवाल खडे. किए जाते हैं। आपके ख्याल से इसकी भाषा क्या होनी चाहिए?

भाषा तो दोनों की निर्मल जल जैसी होनी चाहिए। जो कहना है, पढ़ने सुननेवाले समझ जाए। लेकिन कवितापन बना रहे।

1977 के जे.पी. आन्दोलन के वक्त आपके नुक्कड़ गीतों ने न केवल एक जागरूक नागरिक के कर्तव्य-बोध का अहसास कराया बल्कि आम जनमानस को झकझोरा। किंतु आज की राजनीति में चाटुकारिता और देश में घोटालों एवं भ्रष्टाचार का जिस रफ्तार से रहस्योद्घाटन हो रहा है, राजनैतिक दुराचारियों -घोटालाबाजों की संख्या में जिस रफ्तार से इज़ाफा हो रहा है, उसके मद्देनजर आम आदमी का यकीन पक्का होता जा रहा है कि अब इस देश में बेदाग चादरवाले राजनैतिक सदाचारियों की तलाश एक फिजूल की कसरत हो गयी है। क्या आप इस पर कुछ कहना चाहेंगे?

नहीं, मैं निराश नहीं हूँ। कुछ तो आज आदमी और उसका समाज बदला है। यही उपलब्धि है, आप जिसे जातिवाद कहते हैं, वही तो आज बदलने का समय है जो आज हो रहा है।

किसी अच्छे मूल्य की तलाश, किसी अच्छी चीज की, व्यर्थ नहीं है, वहां तक जाइयेगा कैसे! यही सब रास्ते में मिलेंगे घोटाला, भ्रष्टाचार और चाटुकारिता। अभी और समय लगेगा, अभी तो संबंध भी पैसा हो गया है, सब कुछ बदलकर बाजार हो गया है, इसे ही उदारीकरण या उपभोक्तावादी संस्कृति कहते हैं, इस देश में सांस्कृतिक आन्दोलन ठीक से कहां हुआ? संपूर्ण क्रांति कहां हुई?

आज आचरण और अनुकरण के सिवा मूल्यांकन और विचार की प्रक्रिया एकदम ठप पड़ गयी है। वैचारिक संकट आ खड़ा हुआ है और प्रबुद्ध जन मूकदर्शक बने बैठे तटस्थ हैं। आखिर यह सब क्या हो रहा है?

हम पहले से अधिक चुप कहां हैं? हम तो मुखर हैं, आज कितना शोर-शराबा है, हर तबका एक दूसरे को पराजित कर सामने आना चाहता है, आज जितनी जागरूकता है, वह पहले कहां थी, कहां हम तटस्थ हैं? मूकदर्शक तो हैं ही नहीं! आज जितनी हमारी कविता लड़ना चाहती है उतनी सक्रियता कहां पहले थी? यह सब तो चौहत्तर आंदोलन की वजह से संभव हुआ, आंदोलन चल ही रहा था, आपातकाल की घोषणा हो गयी। इस देश का दुर्भाग्य रहा है कि जब कोई सामाजिक आंदोलन हुआ है, तब कोई न कोई बाधा पहुंची है। गांधी, लोहिया और जे.पी. के साथ यही हुआ।

चौहत्तर आंदोलन के लोग सरकार में आते ही वह सब कुछ भूल गए जिनके लिए जे०पी० और जननायक कर्पूरी के नेतृत्व में उस समय भटकी हुई सत्ता से लड़े थे। आखिर उनके सहयोगियों ने ऐसा क्यों किया?

सत्ता अभी तक एकमुखी रही है, जो सत्ता पा जाता है, उसमें रहकर वह सब कुछ भूल जाता है जिसके विरुद्ध लड़कर वह सत्ता की भाषा, संस्कृति तथा सरोकार सब कुछ वही रहते हैं।

लेकिन कुछ तो लोग हैं जो पुराने दिन नहीं भूलते भले ही वह नगण्य हों।

जे. पी. की संपूर्ण क्रांति के अधूरे सपनों का क्या होगा?

संपूर्ण क्रांति के सपने अभी तक अधूरे हैं। सपने अधूरे रहेंगे। कुछ तो बदला है, बहुत कुछ बदलना है। अभी हम कमजोर हैं, हमारे बेटे और बेटियों की पीढ़ी जब तक नहीं बदलेगी, तब तक संपूर्ण क्रांति के सपने अधूरे रहेंगे। हमको बदलना था हम बदल गये, हमारी बेटियों और बेटों के रक्त में शायद वह तेजी और तनाव नहीं है जो चौहत्तर आन्दोलन में हम सब में था।

भ्रष्ट राजनीति एवं जातिवादी नेतृत्व और निहित स्वार्थों के बोझ तले कराहते हुए देश में नागरिकों के आंसू पोछनेवाला कोई नजर नहीं आता। इस पर आपकी क्या प्रतिक्रिया है?

राजनीति में अच्छे लोग जबतक नहीं आयेंगे तब तक गंदा साफ कैसे होगा! हर पांच साल पर (अब तो कम समय में) हमको चुनना होता है, तब तो भूल जाते हैं अच्छा या बुरा। हम क्या-क्या नहीं सोचते हैं? तब हम नहीं सोचते हैं कि हमें अच्छा चुनना है। एक बार

सही चुनाव से बार-बार की रगड़ खाने से बचा जा सकता है।

जब संस्कृति का सूरज विनाश के बादलों से घिर जाता है, समाज का उपवन जाति-पांति भेदभाव के पतझड़ों से भर जाता है और धर्म का सच्चा अर्थ जब धूमिल होने लगता है तब किसी महापुरुष का अवतार हुआ करता है। आपका क्या ख्याल है?

काल साक्षी है कि जब-जब सूरज निकला है, अंधेरा कम हुआ है, कुछ चेहरे रोशन हुए हैं, हां, धर्म और समाज के बारे में आपका सोचना सही है। सुख में नहीं सोचते हैं, दुख में ईश्वर को स्मरण करते हैं। जबतक हमारे जीवन में संतुलन नहीं आयेगा तो यह बराबरी कैसे आयेगी। जैसे धर्म में अच्छे लोग हैं, राजनीति में क्यों नहीं हैं? सांस्कृतिक सूरज तो कतई नहीं, जिसकी किरणें अंधेरों पर पड़ती हैं।

आज व्यक्तिगत नैतिकता के साथ-साथ सामाजिक दायित्व भी डूबता जा रहा है। लोहिया ने कहा था जब समाज की नैतिक चेतना मरने लगे तब चिन्ता की बात होती है। आप इस धारणा से कहाँ तक सहमत हैं?

हम कितने नैतिक हैं? समाज के प्रति कितने दायित्वबोधी हैं? हम तो मंच पर कुछ बोलते हैं और मंच से उतरते ही कुछ हो जाते हैं। जब हममें यह अंतर है तब आम आदमी में क्यों नहीं! कहनी और करनी में यहीं हम मर जाते हैं! हमें जनता से फिर जिंदगी मिलती है, इसी जन बल को जगाना लोहिया और जे.पी. चाहते थे।

रचना रचनाकार के अपने ही दर्द का अंकुरण है। यह उसका भोगा हुआ यथार्थ है। भोगा हुआ यथार्थ रचना को पुष्ट, प्रामाणिक और संवेद्य बनाता है। इस पर आपकी दृष्टि से अवगत होना चाहेंगे?

आपने कितने नेताओं को बनते- बिगड़ते देखा है। आप आस-पास के दूख-दर्द को कितना शब्द देते हैं? आप हाइकु लिखते हैं, जम कर लिखते हैं, अनुभव भी है, आप वर्षो से लिखते हैं, आप की दर्दीली रचनाओं का वही हस्त हुआ जो किसी संवेदनशील रचनाकार का होता है! लिखना और फिर लिखना चलता रहता है, समाज अपना काम करता है, हम अपना काम करते हैं,

क्या आपको ऐसा नहीं लगता कि कविता आज जन-सामान्य से ही दूर होती जा रही है?

जब हमारे कवि पांच सितारा होटल के सुसज्जित कमरे में विदेशी मुद्रा अपना कर जिंदगी की खुशी पाने में मग्न हैं, क्यों उनको जनता, गरीब जनता पढ़े, काल्पनिक सब कुछ हो जाय तो बात दूसरी है। ऐसे कवि भी सड़कों पर मिल जायेंगे जो गरीबी की ज़िंदगी जी कर भी एक-दो गरीब का पेट पालते हैं।

कविता में छंदबद्धता, लयात्मकता और रागात्मकता गौण हो रही है। छंदमुक्त कविता के नाम पर हर उबड़-खाबड़ को कविता मान लिया जाता है। ठीक इसी प्रकार छंद के नाम पर हर घटिया से घटिया तुकबंदी को गीत घोषित कर दिया जाता है। इस संदर्भ में आप क्या सोचते हैं?

बीच में छंदयुक्त कविताओं का दौर चला। हम धोखे में आ गये। अब स्थिति बदली है, उसी दौर से जो दमदार हैं उनके साथ नयी पीढ़ी भी लिख रही है। अरुण कमल, शांति सुमन, सत्यनारायण, आलोक धन्वा, रवींद्र राजहंस, परेश सिन्हा, राम वचन राय, अनिल विभाकर, मदन कश्यप, भगवती प्रसाद द्विवेदी के साथ आगे की पीढ़ी भी लिख रही है। इनके भाषा कथ्य और बिंब ताजा हैं।

जो नए लोग रचना के क्षेत्र में आ रहे हैं उन्हें आप क्या कहना चाहेंगे?

सबको मेरी शुभकामनाएं, खूब लिखें, सुनायें और छपें, मेरी मंगल कामनाएं हैं अभी तो यही कह सकता हूं।

गोपीवल्लभः जे.पी. आंदोलन के एक चर्चित कवि

❑ अरुण कुमार भगत

कवि गोपी वल्लभ सहाय हिंदी के ऐसे हस्ताक्षर हैं जिनकी रचनाओं ने सन् चौहत्तर के बिहार-आंदोलन और उसके बाद आपातकाल की संपूर्ण क्रांति के दौरान लोकचेतना जाग्रत् करने में अपने दायित्व का निर्वहण किया है। पद, पदार्थ और पुरस्कार के लोभ में कवि सहाय ने हृदय की अभिव्यंजना को न तो कभी तोड़ा-मरोड़ा और न ही किसी को प्रसन्न करने के लिए कविताएँ लिखीं। जब जी में जो आया, लिखा और एक हस्तसिद्ध कवि की तरह सामाजिक सरोकार को रेखांकित किया। उन्होंने इस बात की कभी परवाह नहीं की कि उनके कवि-कर्म के कारण उनकी सरकारी सेवा दाँव पर लग जाएगी। सन् 1975 ईस्वी में आपातकाल के दौरान उन्होंने सरकार के तानाशाही रवैये के खिलाफ न केवल लिखा अपितु पटना की नुक्कड़ कवि-गोष्ठियों में अपनी कविताओं को सुनाकर साहस का परिचय दिया।

भारतीय लोकतंत्र के इतिहास में पहली बार 26 जून 1975 ईस्वी को आपातकाल की घोषणा हुई थी। रातों-रात हजारों-हजार कलमकारों को जेल के सीखचों में बंद कर दिया गया। अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता छीन गई। रचनाकार कराह उठे। पुलिस-प्रशासन का आतंक सर्वत्र व्याप्त हो गया । जन-जीवन लहू-लुहान हो गया। सत्ता की तानाशाही सिर चढ़कर बोल रही थी। मानवीय संवेदना पर निरंकुश प्रहार की पीड़ा घनीभूत होकर विभिन्न रूपों में कागजों पर उतरने लगा था। उस समय जन-जीवन की मनोदशा को शब्द देनेवाले श्रेष्ठ रचनाकारों की श्रेणी में कविवर गोपीवल्लभ सहाय पांक्तेय हैं। इनकी कविताओं में सामाजिक दायित्व और राष्ट्रीय चेतना की अभिव्यंजन हुई है।

चर्चित रचनाकार गोपीवल्लभ सहाय मूलतः गीतकार हैं। यह सही है कि सुकंठ के कारण ही इन्होंने राष्ट्रीय ख्याति अर्जित की है किंतु इसका अर्थ यह नहीं कि इनकी रचनाएँ कमजोर हैं। एक समर्थ गीतकार के रूप में इन्होंने लोकप्रतिष्ठा आयत की है। डॉ० रामवचन राय ने इनके गीत की गुणवत्ता को इस रूप में रेखांकित किया है- ' पिछले दशक में हिंदी में कविता और गीत को लेकर एक अनावश्यक विवाद चलता रहा है और कवि के मुकाबले गीतकार को कुछ हीनत्तर माना जाता रहा है। इसके लिए संभवतः कुछ एक गीतकार भी

शेष पृष्ठ 27 पर..............

समीक्षा

गीत गोपीवल्लभ के!

❑ डॉ० नन्दकिशोर नवल

गोपीवल्लभ सहाय बिहार के समकालीन कवियों में जाने-पहचाने हुए हैं, भले माने हुए नहीं। माने हुए इसलिए नहीं कि उन्होंने कवि सम्मेलनों को जितना महत्व दिया है, उतना साहित्य जगत को नहीं। इसका एक प्रमाण तो यह है कि उन्होंने 1940 से ही लिखना शुरू किया, लेकिन उनकी कविताओं का पहला संग्रह **बंजर में बीज** अब जाकर प्रकाशित हुआ है, यानी करीब पचपन वर्षों के बाद। बिहार और बिहार के बाहर भी कवि-सम्मेलनों के श्रोता उनसे काफी कुछ परिचित हैं, लेकिन कविता के पाठक नहीं। ऐसा नहीं है कि श्रव्यता कविता का कोई दूषण हो, लेकिन यह निर्विवाद है कि वह समकालीन कविता का एकमात्र या सर्वश्रेष्ठ गुण नहीं है। ऐसी स्थिति में यदि साहित्य जगत में गोपीवल्लभ जी की उपेक्षा हुई है, तो मानना चाहिए कि इसके लिए एक बड़ी हद तक वे स्वयं भी जिम्मेवार हैं। कविता के गंभीर पाठक तब जिम्मेवार हो जाते हैं, जब वे यह धारणा बना लेते हैं कि जिस कविता को कवि-सम्मेलनों में दाद मिलती है, वह अनिवार्यतः अगंभीर होती है। कवि-सम्मेलनों में ही कवियों का कविता के प्रेमियों से सीधा साक्षात्कार होता है और वे कसौटी पर चढ़े हुए होते हैं। ताज्जुब नहीं कि निराला से लेकर नागार्जुन तक ने कवि-सम्मेलनों को उचित महत्व दिया और उन्हें अपनी कविता के मूल्यांकन का एक प्रतिमान माना।

बंजर में बीज का आद्यंत अवलोकन करने के बाद पता चलता है कि इसमें कई तरह की कविताएं संग्रहीत हैं। वे कविताएं गीत भी हैं, गजल भी, नुक्कड़ कविता भी और फिर गद्यात्मक कविता भी। गद्यात्मक कविताओं ने मेरा ध्यान सर्वप्रथम आकृष्ट किया, क्योंकि उनसे कवि की रचनात्मक मनोभूमि का ज्ञान होता है। वह रचनात्मक भूमि पूरी तरह से समकालीन है, भले उससे पैदा होनेवाली कविताओं में श्रेष्ठ समकालीन कविता की जटिलता और वक्रता न हो। गोपीवल्लभ जी ने कविता के कई दौर देखे हैं, इसलिए प्रतिध्वनियां तो उनमें नवगीत से लेकर धूमिल तक की कविता की सुनायी पड़ती हैं, लेकिन कविता उन्होंने दो ही तरह की लिखी है–

गीत और नुक्कड़ कविता, जो वस्तुतः गीत ही है। इनके बाद गज़लें आती हैं, जिनमें बीच-बीच में बहुत चुस्त और उम्दा शेर भी मिलते हैं। इन गज़लों की प्रेरणा दुष्यंत कुमार से आयी है, ऐसा संकेत स्वयं कवि के एक शेर से मिलता है। स्वभावतः यह संग्रह दो खंडों में बंटा हुआ है। पहले खंड में गीत या नवगीत है और दूसरे खंड में नुक्कड़ कविताएं। कुछ गद्यात्मक कविताएं और गजल दोनों खडों में हैं। इसका मतलब यह है कि गोपीवल्लभ जी में यह क्षमता है कि वे कविता के एक ही रूप का प्रयोग अपने भिन्न कथ्य के सम्प्रेषण के लिए भी कर सकते हैं।

मुझे यह कहने में कोई दुविधा नहीं है कि मुझे उनके संग्रह के पहले खंड के गीत कम पसंद आये हैं। कारण यह कि इन गीतों की अभिव्यक्ति में कविता के तत्व कुछ ज्यादा हैं, इस मात्रा में कि कविता काव्याभास बन जाती है। जिस तरह बहुत चुस्त और हमेशा नहले पर दहला जमाने वाला संवाद कृत्रिम होता है, उसी तरह यह कविता भी, जिसके प्रत्येक शब्द से कविता का रस टपकाने की कोशिश की जाती है। उदाहरण के लिए गोपीवल्लभ जी की ऐसी अभिव्यक्ति को देखा जा सकता है– 'अंखुआए रोम-रोम/सेमल जैसे फूटे/कदली जैसा कसाव/ परत-दर-परत छूटे/ रुई-सा बदन/धड़कन धुनी-धुनी हो गयी।.................. सुबह-सुबह दर्पण से/कहा-सुनी हो गयी।' यदि यह कहा जाये कि ऐसी कृत्रिमता का स्रोत कवि का अपना अनुभव नहीं, बल्कि नवगीत है, जिसके सांचे में श्रमपूर्वक उसने अपने को ढाला है, तो वह गलत न होगा। जहां कहीं उसने अपने अनुभव का भरोसा किया है, वह काव्याभास की जगह कविता की रचना

करने में सफल हुआ है, यथा इन पंक्तियों में: 'यह दिन भी/उड़ा फड़फड़ाकर डैना/ पिजड़े पर/चोंच मारती है मैना/दर्द से हुई दुहरी जिंदगी।'

पहले खंड की कविताएं जहां आत्मपरक हैं, वहां दूसरे खंड की वस्तुपरक या कहें राजनीतिक। गीत को प्राय: आत्मपरक काव्य रूप माना जाता है, लेकिन इसमें इतनी संभावनाएं हैं कि इसमें बहुत ही तेजस्वी और धारदार राजनीतिक कविताएं भी लिखी जा सकती हैं। यह बात आश्चर्यचकित ही नहीं, मुग्ध बनानेवाली है कि अपने व्यक्तिगत दु:ख से निकलकर गोपीवल्लभ जी 1974 से शुरू होनेवाले सम्पूर्ण क्रांति के आंदोलन में शामिल हुए, तो उनकी काव्य प्रतिभा ने जैसे अपनी अभिव्यक्ति का उपयुक्त माध्यम पा लिया। दूसरे खंड की कविताएं काव्याभास से मुक्त काव्य-गुण सम्पन्न कविताएं हैं, जिनमें कवि की अभिव्यक्ति में बेहद सफाई तो है ही, धार और मार भी है। साहित्य का यह क्या नियम है कि 'साहित्यिकता' छूटी और कविता सही मानी में साहित्यिक हो उठी। लेनिन ने कहा था कि यदि तुम्हारे भाव और भाषा उलझे हुए हों, तो जनता के पास जाओ, तुम्हारी अनुभूति और अभिव्यक्ति दोनों सुलझ जायेंगी। मुझे तो विश्वास ही नहीं हुआ कि जो कवि नवगीत के बनावटी भाव और भाषा दोनों में प्रशिक्षित हो, उसकी अभिव्यक्ति ऐसी भी हो सकती है-

खाई जिसने कभी कसम
साथ चलेंगे कदम-कदम
सड़कों पर जब आये हम
पर्दे में छुप गये सनम
मंच बने वे, खंभे हम
बोलो बम, बोलो बम।

मैं इस बंद की चौथी पंक्ति में प्रयुक्त 'सनम' शब्द को रेखांकित करना चाहूंगा, जो गोली की तरह छूटता है। 'हल्ला बोल', 'मंच बने वे, खंभे हम' और 'रोटी चाबुक, भूख गुलाम'-ये तीनों कविताएं गोपीवल्लभ जी की काव्य-शक्ति का प्रमाण हैं, क्योंकि इनमें एक-एक तुक को ही पकड़ कर दूर तक चला गया है और कहीं 'कविता' मात्र तुकबंदी के धरातल तक नहीं उतरी है। अधिकांश नुक्कड़ कविताओं में जनता की पीड़ा को वाणी दी गयी है और उनका रूप उसी के बीच से उठाया गया है। इन कविताओं में और भी बहुत कुछ है, जो इन्हें पढ़ते हुए काव्य-रसिक पाठक महसूस करेंगे। हिन्दी में पिछले दिनों जनवादी और नव-जनवादी कविताओं का शोर रहा है, लेकिन वे कविताएं काव्य-गुण की दृष्टि से गोपीवल्लभ जी की तेजस्वी और दर्दीली नुक्कड़ कविताओं के आगे कहीं नहीं टिकतीं। उनके रचयिता कवि जहां यह बात भूल गये हैं कि नारेवाली कविता भी चीखने से नहीं, हृदय की अनुभूति से ही बनती है, गोपीवल्लभ जी उसे याद रखे हुए हैं। बिना उसके ऐसी भयानक उक्ति संभव न थी- 'खून हम सब का है वजू के लिए/ अब इबादत यही सियासी है।' वक्तृता, सपाटबयानी, नारेबाजी आदि कविता से बाहर की चीजें हैं, **'बंजर के बीज'** के कवि ने एक बार फिर इस धारणा को गलत साबित कर दिया है। दिनकर जी ने समर्थ कवि की लेखनी की ओर संकेत करते हुए ठीक ही लिखा था- 'छू दे यदि लेखनी, धूल भी चमक उठे बन कर सोना।'

कविता में कई धाराएं एक साथ सक्रिय होती हैं। एक धारा की कविताओं से अपनी रुचि को अनुकूलित बना लेना न कविता के पाठक के लिए ठीक है, न आलोचकों के लिए। गोपीवल्लभ जी एक खास धारा के कवि हैं। उनकी कविताओं ने समकालीन कविता में किसी विशिष्ट स्तर का निर्माण किया है या नहीं, यह जानने के लिए उनका यह संग्रह देखना उपयोगी होगा।

सभीक्ष्य पुस्तक	:	**बंजर में बीज**
पुस्तक के कवि	:	गोपीवल्लभ सहाय
प्रकाशक	:	साहित्य केन्द्र प्रकाशन, ई 4/20, कृष्णानगर, दिल्ली-110041,
मूल्य	:	50 रुपये

पृष्ठ 25 का शेष...............

कम जिम्मेदार नहीं है, जिन्होंने गलदश्रु-भावुकता को गीत का विषय बना दिया और दूसरी ओर कविता बौद्धिक होती चली गई। गोपीवल्लभ ने इस खाई को पाटने का सफल प्रयास किया है और इन्होंने इस मिथक को झुठला दिया है कि कविता और गीत में छत्तीस का संबंध है।

संपूर्ण क्रांति के दौरान पटना के नुक्कड़ों-चौराहों पर जब गोपी वल्लभ काव्य-पाठ करते तो छात्र-नौजवान के नस-नस में खून खौलने लगता था और वे लोग व्यवस्था के खिलाफ संघर्ष के लिए उतावले हो उठते थे- उन्मत्त, उन्मादी और उद्धत। नेताओं के कुकृत्य को इन्होंने अपनी रचनाओं में बेनकाब किया और नौजवानों को दोहरी नीति-रीतिवाले ऐसे सफेदपोशों से दो-दो हाथ करने का आह्वान किया । **बंजर में बीज** नामक अपने काव्य-संग्रह में सन् चौहत्तर में लिखी उनकी रचना हल्ला-बोल शामिल है। उनकी यह रचना युवाओं के बीच काफी चर्चित हुई थी।

लोकतंत्र में जनमत के महत्व को कवि ने अनमोल माना है उससे खिलवार करनेवालों को इन्होंने सचेत किया हैं कि जनसेवा की कोई कीमत नहीं लगाई जा सकती हैं। इसमें तो मानवीय चेतना के उदात्त रूप के दर्शन होते हैं यह मानवीय व्यवहार का सबसे उत्कृष्ट विधान है। समाज सेवा का व्रत नेताओं के लिए यज्ञोपवीत संस्कार के समान होना चाहिए। इसमें छलकपट, झूठ, बेईमानी, भ्रष्टाचार, हिंसा, लूटपाट का कोई स्थान नहीं हैं किंतु आज के नेताओं की यह अपरिहार्य विशेषता हो गई है। आजादी के पूर्व नेता देश और समाज की सेवा के प्रति निष्ठा और समर्पण-भाव से जुड़े थे, किंतु 20-25 वर्षों में ही नेताओं के मानदंड बदल गए। सामाजिक मूल्यों में तेजी से ह्रास हुआ। सत्ता की कुर्सी पर बने रहने की तानाशाही प्रवृत्ति ने जनमत की अवहेलना की और अपने पतित व्यवहार को छिपाने के लिए देश पर आपातकाल लाद दिया गया।

सुप्रसिद्ध कवि गोपीवल्लभ सहाय की रचनाओं में विप्लव के स्वर अनुगूंजित होते हैं। कवि व्यवस्था में आमूल-चूल परिवर्तन का हिमायती है। वे ऐसा बदलाव चाहते हैं जिसमें पुरानी व्यवस्था का नामोनिशान नहीं रहे- परिवर्तन और एक यूगांतकारी परिवर्तन हो 7।

❑ ए-98, अशोक नगर,
फेज-1, दिल्ली-52

गोपीवल्लभ
दुख का गाता हुआ चेहरा

❑ मैथिली वल्लभ परिमल

एक चिट पर लिखी कुछ पंक्तियां- 'खूब अपने में सिमटे-सिकुड़े हो तुम! ऐसे ही रहना मुझे सिखला दो न! अगर अनन्तकाल तक मैं यहां न पहुंच पाऊं तो शायद तुम भी यहां से टसक नहीं पाओ.............यहीं न?' ऐसी हमदर्द पंक्तियां किसी सहपंथी मित्र की ही हो सकती हैं। अपने में सिमटे-सिकुड़े रहने की इस प्रवृत्ति से बहुत-से अपने लोग नाराज हैं। किन्तु उपर्युक्त पंक्तियों में जो एक टीस भरा उपालम्भ है, वह किसी अलमस्त दोस्त का ही हो सकता है।

पैंतीस वर्ष पूर्व की वह परिचय संध्या! पटना की एक अल्पजीवी किन्तु अप्रतिम भास्कर साहित्यिक संस्था 'निराला परिषद' की स्थापना हो चुकी थी। प्राय: रोज ही किसी न किसी के निवास पर साहित्यिक मित्र मिल बैठते और काव्य चर्चा और कविता पाठ से वातावरण गुंजित हो उठता। ब्रजकिशोर प्रसाद पंकज के निवास पर सधे स्वर में एक गीत गूंज उठा था-

'न कोई किसी का, किसी का न कोई

बहुत सांस भटकी, बहुत सांस रोई'।

गीत की मंत्र-मुग्धता टूटते ही मैं पूछ बैठा था- 'क्या नाम है प्यारे? 'संक्षिप्त किन्तु बेलौस उत्तर था- 'गोपीवल्लभ!'... 'और तुम्हारा?' मैंने भी अपना नाम कह दिया! नाम के ध्वनि साम्य की सांस्कारिता में उसी क्षण बांध दिया था हमें और तब से आज तक वह गीत गूंज रहा है स्मृतियों में!

इन पैंतीस वर्षों के दरम्यान गोपीवल्लभ उत्तरोत्तर ऊंचाईयों के सोपान चढ़ता रहा है। प्रकृति प्रदत्त अपनी कवि प्रतिभा के प्रति गोपीवल्लभ सजग और सचेष्ट है। अपनी रचनाशीलता के लिए उसका समर्पण भाव आज मित्रों के बीच ईर्ष्या का विषय बन गया है।

गोपीवल्लभ के कवि जीवन के प्रारम्भिक विकास में निराला परिषद् की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। बसन्त पंचमी 1962 ई०। प्रभाकर, पंकज और परिमल की आकांक्षाओं को आकार मिला। निराला परिषद् की स्थापना हुई। हिन्दी के लब्धप्रतिष्ठ गीतकवि राम गोपाल 'रूद्र' के परामर्श से जुझारू साहित्यकार ब्रज किशोर नारायण परिषद् के अध्यक्ष बनाये गये। नारायण जी की संगठन शक्ति और दबंग व्यक्तित्व के फलस्वरूप वर्ष पूरा होते न होते निराला परिषद् राष्ट्रीय स्तर की सम्मान्य साहित्यिक संस्था हो गयी।

परिषद् के अल्प जीवन काल में ही गोपीवल्लभ की प्रतिभा ने राज्य के बाहर भी अपना एक स्वतंत्र आयाम निर्मित कर लिया। चीनी आक्रमण सन्दर्भ की राष्ट्रीय कविताओं के सफल सस्वर प्रस्तुतीकरण ने गोपीवल्लभ को श्रोताओं की हथेली पर उतार दिया। कवि सम्मेलनों के मंच गोपीवल्लभ को पुकारने लगे। मुझे अच्छी तरह याद है, राष्ट्रकवि दिनकर और बिहार के राज्यपाल की मौजूदगी में खचाखच भरे हिन्दी साहित्य सम्मेलन के सभाकक्ष में गोपीवल्लभ के गीत को लगातार जोरदार तालियों के साथ सुना गया- **'एक नहीं, दो नहीं, हिमालय भारत का हर लाल है।'** धनबाद के मंच पर गोपीवल्लभ को सुनकर राधेश्याम प्रगल्भ (प्रसिद्ध कवि अशोक चक्रधर के पिता) ने 1964 मार्च में मेरठ के प्रसिद्ध नवचंदी मेला कवि सम्मेलन में बुलाया जहां निराला जी एक बार आये थे। लगभग एक महीना तक गोपीवल्लभ को उत्तर प्रदेश के विभिन्न नगरों में सुना गया-

'सबसे बड़ी अमन की आवाज है हिमालय
गणतंत्र गूंजता जिसपर साज हैं हिमालय
स्वाधीन जो जहां, सबकी लाज है हिमालय
दुश्मन इसी हिमालय से जूझने चले हैं
फिर आन पर अमन की, बरबादियां चमन की
बुलबुल के तराने में तूफान को पुकारे!'

बुलन्दशहर, खुजरा और दिल्ली में उसको सुनने के लिए गोष्ठियां आयोजित की गयीं। उसके दो गीतों ('फिर खून हिन्द का हिन्दुस्तान को पुकारे' ओर 'नेफा औ' लदाख वीरों के वलिदानों की सेज है') दिल्ली आकाशवाणी केन्द्र द्वारा रिकार्ड किया गया। आकाशवाणी के प्रतिभावान समाचार वाचक पटना निवासी नरेश कुमार सिन्हा ने गोपीवल्लभ को स्वयम् रिकार्ड किया।

उत्तर प्रदेश की सफल साहित्यिक यात्रा ने बिहार को साहित्यिक संस्थाओं के दरवाजे गोपीवल्लभ के लिए खोल दिये। गोपीवल्लभ कविता समारोह की सफलता का पर्याय बन गया। किसी भी छोटे-बड़े कवि सम्मेलन के आयोजक की पहली पसन्द हो गया गोपीवल्लभ। चीनी आक्रमण के संकट के समय में राष्ट्रीय स्वाभिमान से ऊंचा उठता

उसका स्वर निरन्तर सुना-सराहा गया-

'सर देंगे हम मगर सिर का ताज नहीं देंगे
दे देंगे जान पर अपनी लाज नहीं देंगे
अपना है देश, अपना है राज नहीं, देंगे
जय हिन्द है हमारी आवाज, नहीं देंगे।'

हिन्दी कविता के कुछ समालोचकों ने गोपीवल्लभ के शब्दों में कभी दिनकर, कभी नेपाली की ध्वनि सुन पड़ने का संकेत दिया। दिनकर ने तो कई अवसरों पर गोपीवल्लभ को सुना। गोपाल सिंह नेपाली बस एक ही बार उसे सुन सके। प्रेम की मांसल अनुभूतियों से उफनता उसका गीत **'बांहों में चांद चांदनी की, चांदनी चांद की बांहों में'** मेरे जैसे असंख्य युवाओं का कंठहार बन गया था। नेपाली जी ने जब इस गीत को सुना तो गोपीवल्लभ को बम्बई आने का आमंत्रण दे दिया।

अपने गीतों का पाठ करने में गोपीवल्लभ सबसे अलग था। अपने खूबसूरत पाठ से शब्दों के अर्थ को ध्वनित करने की कला वह अच्छी तरह जानता था। कभी-कभी गीत को गूढ़तम अभिव्यक्ति भी उसके पाठ की विशेषता बन जाती थी। कठिन से कठिन शब्दावालियां उसकी लय में सहज सम्प्रेषित हो जाती थीं। हिन्दी कविता का मंच गोपीवल्लभ के गीतों से गूंजने लगा। भोलानाथ बिम्ब और बालकवि वैरागी ऊंचे आरोह- अवरोह में कविता-पाठ करते थे। बिम्ब का एक गीत 'विश्वासी किरणों ने लूटा है मुझे, क्यों न करूं समझौता मैं अंधियार से' कवि सम्मेलनों में खूब जमता था। दोनों गीतकारों को सुनने के लिए भीड़ जुटती थी। दोनों गीत-मंच पर पहले से परिचित थे। गोपीवल्लभ बिल्कुल नया था, लेकिन जिस मंच पर उसका काव्य पाठ होता था, वहां के कवियों और श्रोताओं पर प्रभाव पड़ता था। बोल-चाल में संक्षिप्त और स्वभाव से संकोची गोपीवल्लभ उस समय भी विनम्र था, आज भी सहज सरल है। अपने गीतों से उसने मंच पर अपनी जगह बना ली थी, उसके कण्ठ में एक करिश्माई आवाज थी, उसके श्रोताओं की संख्या दिन-दिन बढ़ रही थी, बिहार से बाहर के बड़े कवि सम्मेलनों में वह लगातार बुलाया जाता था, लेकिन उसके रहन-सहन, व्यवहार और आचरण में कभी कोई बदलाव नहीं आया। मेरे साथ रोज सचिवालय से हार्डिंग पार्क जाता, नयी रचना सुनता-सुनाता और जब रचना का एक छन्द भी कण्ठ में समा जाता, तब बेंच या घास पर से उठते हम दोनों।

इस तरह हम में एक स्वस्थ रचनात्मक होड़ बनी रहती थी- कौन कितना नया लिखता है। गोपीवल्लभ को किसी नये गीत पर कवि सम्मेलन में प्रशंसा मिलती थी तो उसे वह मुझे जरूर सुनाता। उसके बयान में कभी-कभी शरारत भरी अतिशयोक्ति भी रहती जो झलक जाती थी। बाद में वह इसे कबूल लेता था। अपनी बड़ी से बड़ी खुशी वह छुपाता नहीं था, वैसे ही उसकी तकलीफ भी उससे छुपती न थी।

कवि सम्मेलन से लौटती यात्रा में बेहद खुल जाता था। उसके हर गीत की सफलता उसे नया गीत दे जाती थी। किन्तु, समय को कदाचित गोपीवल्लभ का यह उफान नहीं रूचा और उसके आंगन में एकाएक ऐसा तूफान उठा जो उसके घर की चमक को बुझाकर राख कर गया-

देहका कमल खिलकर आग के सरोवर
छोड़कर गया तटपर राख की धरोहर
धुआँ ही धुआँ उड़ा मजार पर शलभ के

यश के उल्लास और विकास के उफनते हुए दूध पर मानो किसी ने पानी का एक जबरदस्त छींटा मारा। किन्तु, आंच पर चढ़ा हुआ वह दूध और गाढ़ा होता गया, जिसने गोपीवल्लभ के गीतों को ऐसे सोंधिल स्वाद से भर दिया, जो हिन्दी-गीत-जगत् के लिए अनूठा कहा जायेगा-

गीत दो लिखे मैंने जन्म के, मरण के
एक तुम न सुन सकी, एक मैं न गा सका।

गीत का यह मुखड़ा कदाचित कवि के भावी जीवन का संकेत बनकर उतरा था। पत्नी के देहावसान के बहुत पूर्व ही कवि के मन में कौंधा था। गोपी ने कई बार मुझसे कहा कि अधूरा गीत पूरा नहीं हो रहा है। मैंने एक बार कहा-'मुझे दे दो न! मैं पूरा कर लूंगा!'........... कौन जानता था, अचानक कौंधी उस गीत पंक्ति में भवितव्य का कैसा दारुण संकेत था, जो अन्ततः कवि के जीवन में वज्रपात-सा टूट गिरा। बहुत दिन बाद गीत पूरा हुआ जब हम दोनों छपरा से सीवान कवि सम्मेलन में जा रहे थे। यह अजीब संयोग है कि जब इस गीत की आरम्भिक पंक्तियां कवि-मन में कौंधी थीं उस समय भी मैं उसके साथ स्टेशन से पैदल लौट रहा था और जब गीत पूरा हुआ, तब भी मैं उसके साथ था। इस गीत के पूरा होने पर कविवर रूद्र ने जो कुछ कहा उसे स्मरण कर आज भी मेरा मन उद्वेलित होता है-'गुलेरी जी को उनकी एक कहानी ने अमर कर दिया। डॉ० शम्भू नाथ सिंह को भी उनके एक गीत (**समय की शिला पर मधुर चित्र कितने, किसी ने बनाये, किसी ने मिटाये**) से चिरस्मरणीय ख्याति सुलभ हुई। उसी प्रकार यह एक गीत तुम्हें भी गीत-संसार में स्मरणीय बनाने की क्षमता पा गया है।' यह प्रशंसा गोपीवल्लभ की नहीं, उसके गीत की है। मेरी मान्यता है, गीत लिखे नहीं जाते, वे अवतरित होते हैं। गीत की रचना-प्रक्रिया का सम्बन्ध अध्यात्म से जुड़ा है। इस नाते गीतों का अपना भाग्य होता है जो व्याज से रचनाकार को यश का भागीदार बनाता है। गोपीवल्लभ के ऐसे कई गीत है-

'मर्यादा का बन्ध तोड़कर तुम तो सीता हो गयी
किन्तु उसी की रक्षा करते मैं बन पाया राम नहीं
अपनी सुधि से मुझे जोड़कर तुम तो गीता हो गयी
वेसुधि में भी कभी पुकारा तुमने मुझको श्याम नहीं'

गोपीवल्लभ के गीत उसकी झेली हुई अनुभूतियों से निस्सृत हैं। व्यष्टि जीवन की सच्चाई ही समष्टि-जीवन में स्पन्दित होती है। यही कारण है कि जब समय ने लोगों के दुख को देखा और सम्पूर्ण क्रान्ति की मशालों को थामनेवाली कलम की तलाश की तो इस जनान्दोलन के शिल्पकार लोकनायक **जयप्रकाश नारायण** की आवाज को बुलन्द करने वाली एक कलम गोपीवल्लभ की भी उठी जिसने आग को गीतों में ढाल कर जनता की बेचैनी को शब्द दिया। गोपीवल्लभ का कहना है- 'जो कविता जन-जीवन के दुख-दर्द को नहीं सहलाती वह चिरजीवी नहीं हो सकती।' समय के आह्वान पर गोपीवल्लभ

की कलम ने गर्म स्याही से गीत लिखे जिनसे लोक-आकांक्षा मुखरित हुई।

वह जो आंसुओं को पीकर फूलों की हंसी उगाता हो, काल के कुठाराघातों को अपने सीने पर झेलकर समय के धूल- धूसरित पांवों की थकान मिटाता हो और जो चौराहे पर भौंचक खड़े इतिहास को सही दिशा की ओर मोड़ता हो, उसे ही सच्चा कवि-धर्म मानना चाहिए। अपने आंसू से बहुत-से मुस्कुराते गीत-पुष्प खिलाये हैं और दूसरी ओर राजमार्ग पर भटके हुए विश्वासों को गीतों में दीक्षित किया है जो 'रोटी पर भूखे का नाम' लिख सके और नुक्कड़ों और गलियों की उदास धड़कनों में जीवन का संगीत भर सके। गोपीवल्लभ के गीतों में भाषा,भाव और शिल्प की यही नागरी निष्ठा है। जिसने कभी महसूस किया- **'सिरहाने आग और पांव पर कमल। कितने दिन और लिखूं राख पर गजल!'** उसी के बाद मशाल की चिनगारियां बनकर उड़ने लगे-

'भूखे-प्यासे नंगे हम, बोलो बम, बोलो बम!

नकली नारों के परचम साफ हो रहा है, मौसम
जो लिख रहे लहू से हम, बोलेगा सारा आलम'

और इस कवि के स्वर में मिलाकर सममुच सारा आलम बोलने लगा-

'जहां-जहां जुल्मों का गोल
बोल जवानो हल्ला बोल!'

कोरी नारेबाजी अथवा चनाचूरगरम भाजी जैसी तुकबन्दी और जनान्दोलन से सीधे जुड़नेवाली गीत-रचनाओं में बहुत बड़ा अन्तर है। जनता की पीड़ा, घुटन, आक्रोश और विद्रोह की भावना जब गांव की पगडंडी और शहर के फुटपाथों पर जीनेवाले साधारण जन की भाषा ढूंढेगी तो वह वैसी ही भाषा होगी, जिसमें गोपीवल्लभ के गीत बोलते हैं। चौहत्तर जनान्दोलन के कवियों के काव्य-संकलन **'समर शेष है'** के एक दूसरे प्रमुख कवि सत्यनारायण की भाव- संवेदना जब दुखी जनता के उबाल को छूने चली तो भाषा और शैली ने वही बाना पहन लिया-**'जुल्मका चक्कर और तबाही कितने दिन, कितने दिन?'**

कुछ लोग भले ही ऐसा सवाल उठावें कि गीत और कविता की भाषा की अपनी एक मर्यादा और प्रतिष्ठा है जिससे आन्दोलन की रचना-भाषा कुछ पदच्युत हुई है। बात ऐसी नहीं है। रचनाओं का जो एक ऐतिहासिक और समय-सिद्ध मूल्य होता है वह भाषा और शिल्प के झगड़े से पृथक होता है- लोकोन्मुख, सामाजिक और जनप्रिय! और इसीलिये गोपीवल्लभ के कवि-जीवन में आया 28 दिसम्बर 1976 का वह क्षण जब दानापुर में आयोजित एक कवि सम्मेलन में उसकी नुक्कड़ कविताओं और निर्भीक कविता पाठ के लिए राष्ट्रकवि की सम्मानोपाधि से सम्मानित किया गया। इसकी घोषणा पंडित राम नारायण शास्त्री द्वारा की गयी जिसे करतल ध्वनि से स्वीकार किया गया।

गोपीवल्लभ ने शुरू से अपने को किसी राजनैतिक दल की जकड़ से अलग रखा। फलत: आज भी उसके गीतों का स्वर उतना ही प्रखर, स्पष्ट और सही है जितना आपातकाल के भयावह दौर में था। तभी इस कवि का अहसास चीख पड़ता है -

'सिर्फ जल की सतह हिलती है
व्यर्थ फेंके गये ढेले हम!
झेलने को संग झेले हम
हो गये आखिर अकेले हम!'

या 'मुल्क रह गया है अपना सिर्फ राजधानी बनकर!'

गोपीवल्लभ के यश को अखिल भारतीय बनाने में उसके दर्दीले नुक्कड़ गीतों और उसके पाठ का मुख्य हिस्सा रहा है। मुझे भी गोपीवल्लभ के आन्दोलनकारी स्वर को सुनना अच्छा लगा है-**'नमक-मिर्च चिनिया बादाम। खाओ-पियो करो आराम। पाचक है जनता का नाम। पच जाता है मुल्क तमाम। नमक पचाते नमक हराम। भज लो राम, भजा लो राम!'**

लेकिन, गोपीवल्लभ के उस स्वर से भी मैं परिचित रहा हूं जिसमें वह पूछता है-

'कौन है अपना, पराया कौन है
चीखते हैं प्रश्न, उत्तर मौन है
सुनायें कब तक सुनायें मर्सिये!
कुछ नहीं, कुछ भी नहीं मेरे लिये
चले, चलते रहे, बस यूं ही जिये!'

मेरे लिये तो वह कवि कहीं अधिक अनन्य हैं, जो सर्प के डंसने पर सारा जहर पीकर गीत सुनाने को और भी विकल हो उठता है - 'जिन्दगी के जहर के प्याले का गीत सुनाऊं किसको?' जिसकी 'बांसुरी पर गुलाब की गजल नहीं गुंजर और 'लूट ली सर्द हवा ने सुगन्ध की पूंजी 'फिर भी जो 'आग, बरसात और पाले' का गीत सबको सुनाता है ('आग, बरसात और पाले का गीत सुनाऊं किसको?')

इसकी इच्छा रहती है कि इसकी एक एक धड़कन गीतों में अभिव्यंजित होती रहे/ 'विश्वास जिया जो ज्वाला में/जुड़ गया गीत को माला में/संघर्ष, सपन/अब अनिकेतन/ लो तुम्हें समर्पित क्षण-प्रति-क्षण।'

'सुन न सका सेनुर पायल, की पूजा आंचल भर गूंजी आंख बनी अंजुरी, कजरी न बन सकी काजर की पूंजी सौ सवाल घर के, आंगन के, क्षण का उत्तर एक नहीं। पल-पल प्रश्न जेठ-सावर के, अगहन का स्वर एक नहीं।' गोपीवल्लभ की मिट्टी गीत की है-

'अपना सुनसान देवता होगा/बन्धु, आवाज लगाकर देखो/आग-पानी-लहर समेट चुका, जिन्दगी जो जहर को भेंट चुका/ उसी का ध्यान देवता होगा/जहर का घूंट पचाकर देखो।'

गीत की ऐसी ही पावन-प्रशस्त भूमिपर आसन जमाकर बैठा है मेरा मित्र गोपीवल्लभ। उसके सम्बन्ध में जो कुछ भी कहा जाय वह उसकी रचनाओं की ही बात होगी। उसी का एक गीत है शायद किसी गीतकार की याद में लिखा गया था। प्रकारान्तर से इस गीत में मुझे गोपीवल्लभ ही नजर आता है-

'गोपीवल्लभ बोले न बोले, उसके गीत बहुत कुछ कहते हैं। उसके गीतों में दुखका एक गाता हुआ चेहरा भी है, जो मुझ जैसे बहुतों को अजीज है। यह चेहरा भीड़ में मिलकर भी अच्छा लगता है। उसे दूर से ही पहचान हेते हैं लोग। इसकी जिन्दगी का अपना अफसाना इतना कठिन है कि कोई नहीं बोलता, न धरा और न आकाश। यदि यह दर्दनाक अफसाना सुनना है तो गोपीवल्लभ को सुनिये-

'धरा बोलती न बोलते तारे नभ के
सुनो बन्धु, सुनो गीत गोपीवल्लभ के!
जन्म की सुबह हुई उजाले की चोरी
लोरी से बंधी नहीं पलने की डोरी
बांसुरी अभी तक मेरे मुख पर डभके!'

'जन्म-मरण गीतों में गूँजा!'

❑ सत्यनारायण

वह शायद 1952 का वर्ष था। तब बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन साहित्यिक हलचलों का प्रतिनिधि केन्द्र था। इसकी गूँज पूरे हिन्दी जगत में सुन पड़ती थी। उस वर्ष वहाँ कौमुदी महोत्सव पर एक भव्य कवि-सम्मेलन का आयोजन था। इसमें अनेक प्रतिष्ठित कवि आमंत्रित थे। मुझे ठीक याद है, कवि-सम्मेलन कदमकुआँ-स्थित सम्मेलन भवन की प्रशस्त छत पर हो रहा था। ऊपर खुला आसमान जहाँ दप-दप करता श्वेत कमल-सा खिला-खिला पूरनमासी का चाँद और नीचे कवियों-श्रोताओं को नहलाती दूधिया चांदनी। प्रायः सभी कविताएँ चाँद और चाँदनी पर केन्द्रित थीं। उस समय के एक अत्यन्त लोकप्रिय कवि श्यामनन्दन सहाय सेवक ने अपनी गीत-रचना **रिझाने के लिए नभ में कहीं से चाँदनी आई** का पाठ किया था। पं० हंस कुमार तिवारी को मैंने वहाँ सस्वर पढ़ते पहली बार सुना था। उनकी पंक्ति थी, **दूर है चाँद से चाँदनी, दूर है भानु से यामिनी**। इसी आयोजन में एक किशोर कविता पढ़ने मंच पर आया। कोई सोलह-सतरह की उम्र। सांवला, सलोना, छरहरा। अभी मंसें भी नहीं भींग पाई थीं। बिना किसी भूमिका के वह शुरू हो गया। समुद्र की लहरों से उठते संगीत-सी उसकी स्वर-लहरी चाँदनी नहाई रात में तिरने लगी--

बाँहों में चाँद चाँदनी की,
चाँदनी चाँद की बाहों में!
जब दीप रूप का जलता है
नयनों का जादू चलता है
मन किसका नहीं मचलता है
होती किसको न विकलता है
न्योछाबर कर देने को सब कुछ
जादू भरी निगाहों में।

मैं आज भी हुबहू याद कर सकता हूँ। श्रोताओं में बैठे आचार्य शिवपूजन सहाय विभोर थे। रामवृक्ष बेनीपुरी चहक रहे थे। पं० छविनाथ मिश्र पंक्ति-पंक्ति पर दाद दे रहे थे। स्वर का सम्मोहन और गीत की तलस्पर्शिता पूरी उपस्थिति को संवेदित कर रही थी। श्रोताओं की पिछली कतार में बैठा मैं हतप्रभ था। लगा जैसे कृष्ण की बाँसुरी उस नौजवान के कंठ में रची-बसी हो। जी हाँ, यह वही नौजवान था जिसे आज हम **गोपीवल्लभ सहाय** के नाम से जानते, पढ़ते और सुनते रहे हैं।

तब से गोपीवल्लभ ने पीछे मुड़कर नहीं देखा। तब मंच से कविता पढ़ना और श्रोताओं के बीच बैठकर कविता सुनना, दोनों समान प्रतिष्ठा की बातें थी। मंचों ने इस कवि को भरपूर लोकप्रियता दी, प्रदेश में भी और प्रदेश के बाहर भी। मैं खुद ऐसे दर्जनों अखिल भारतीय कवि-सम्मेलनों का साक्षी हूँ जहाँ गोपीवल्लभ ने औरों के मुकाबले अपना होना बढ़-चढ़कर प्रमाणित किया है। लगभग पाँच दशकों की अपनी काव्य-यात्रा में इस कवि ने अपने को केवल मंचों तक सीमित नहीं रखा। उन्होंने गीत, ग़ज़ल, नुक्कड़ गीत, छन्दमुक्त कविताएँ लिखी हैं और प्रचुर मात्रा में लिखी हैं।

किन्तु, मेरे लिए गोपीवल्लभ की अहमीयत उनकी गीतधर्मिता की वजह से है। वे हमारी पीढ़ी के सर्वथा सशक्त और समर्थ कवियों में है। उनकी गीत-चेतना राजधर्मी होकर भी मूलतः जीवनधर्मी है जो रूपशक्ति से जीवनाशक्ति तक जाती है। गोपीवल्लभ गीत लिखते नहीं, गीत जीते हैं।

टेक हो या अन्तरा, शब्द हों या शब्दों के बीच का अन्तराल, एक तरल अन्तरंगता अपने राग-विराग के साथ सहज ही देखी जा सकती है। गोपीवल्लभ ने लिखा है---

गा गाकर मेरे गीत जमाना थका नहीं
बस एक तुम्हीं जिसको अबतक भा सका नहीं।

मोठे तौर पर ये पंक्तियाँ व्यक्ति को सम्बोधित दिखती हैं। कवि की गीतधर्मिता इतनी सपाट नहीं है। **बस एक तुम्हीं जिसको अबतक भा सका नहीं** वस्तुतः किसी और को नहीं, स्वयं को सम्बोधित है। स्वंय अर्थात् गीत की चेतना से धड़कता गोपीवल्लभ का अन्तर्मन। यह वह सृजनधर्मी अन्तर्मन हो जो अपनी रचना पूरी कर लेने के बाद भी अतृप्त रह जाता है और यही अतृप्ति रचना-कर्म को निरन्तर देती है, उसे लगातार सृजनशील बनाए रखती है। इसी अर्थ में गोपीवल्लभ एक जीवन्त कवि हैं।

यहाँ मैं उनके रचना-काल के आरम्भिक दौर से लिखे गए गीतों की चर्चा करना चाहूँगा। ऐसा इसलिए कि पिछले पचीस वर्षों में उनके प्रंशसक और पाठक उन्हें ग़ज़ल और नुक्कड़ गीतों के कवि के रूप में ही ज्यादा जानते रहे हैं। मगर सच यह है कि गोपीवल्लभ का धरातल मूलतः गीत का धरातल है। प्रगीत, नवगीत, जनगीत के छोटे-छोटे दायरों के पचड़े में न पड़कर इस व्यक्ति ने गीत लिखे और पूरे मन से लिखे। अपनी गीत रचना के प्रारम्भिक दौर में भी जहाँ उनमें प्रेम की कोमल अनुभूति है वहीं सामाजिक और राजनीतिक चेतना से भरी जनभिमुख अभिव्यक्ति भी। प्रेम की नैसर्गिक अनुभूति से सजीव उनके दो पुराने गीत की कुछ पंकितयां सहज ही देखी जा सकती है...........

न कोई किसी का
किसी का न कोई
बहुत साँस भटकी
बहुत साँस रोई
कदम दो कदम साथ आए बहुत ही
कदम दो कदम साथ भाए बहुत ही
मगर घन घिरे जब, मुड़े सब, फिरे सब
बहुत साँस भटकी
बहुत साँस रोई।

एक दूसरे गीत की पंक्तियाँ------

यह रात जवानी की
यह रात जवानों की
नभ में गोरी बिजली की मान-भरी मोहक मुसकानों पर
बादल के दल बाबरे खेल जाते हैं अपने प्राणों पर
यह रात शमा पर मर मिटनेवाले परवानों की!

इन गीतों में छन्द का कसाव, शिल्प का विधान और अनुभूति की सघनता और अभिव्यक्ति की तरलता, सबको एक साथ देखा जा सकता है। पहले गीत में अन्तरा चार पंक्तियों का है जो कवि के काव्य-व्यक्तित्व की निजता को रेखांकित करती हैं।

इसके समानान्तर अपने समय की धड़कनों पर उंगली रखती उनके इस गीत की पंक्ति देखें------

अगर चाहते नया सबेरा लाना तुम
सिर्फ सूर्य ही नहीं, गगन को भी बदलो
उम्मीदें थी बाहर कि मौसम बदलेगा
नई-नई किरणों का नया उजाला ले एक
नया सूरज पूरब से निकलेगा
अगर चाहते हो बहार इस घरती पर
केवल माल नहीं चमन को भी बदलो!

यह गीत सन् 1963-64 में लिखा गया था। तभी गोपीवल्लभ ने यह महसूस किया था कि वास्तविक बदलाव मात्र सत्ता परिवर्तन से नहीं, व्यवस्था के आमूल-चूल परिवर्तन से ही सम्भव है। यही वह सोच है जो सन् 1974 के जयप्रकाश आन्दोलन में सम्पूर्ण क्रान्ति के रूप में सामने आया। ऐसे में गोपीवल्लभ के लिए उस जनान्दोलन से जुड़ना मात्र आकस्मिक नहीं था।

यहाँ स्थानाभाव के कारण गोपीवल्लभ के परवर्ती गीतों पर विस्तार से विचार कर पाना सम्भव नहीं है। बस इतना ही कि **जानें किस सर्प ने डॅसा है, नस-नस में जहर का नशा है** अथवा **धरा बोलती न बोलते तारे नभ के सुनो बन्धु, सुनो गीत गोपीवल्लभ के** या फिर **युग-युग के विष बुझे कण्ठ से** जन्म-मरण गीतों में गूँज को अपनी काव्यानुभूति देनेवाले इस कवि के लिए 'फिराक' की पंक्ति याद आती है,'शायर है एक चिराग हयात-ओ-अजल के बीच।'

यहाँ मुझे गोपीवल्लभ के गहरी पीड़ा की स्याही से लिखे उस गीत की याद आ रही है उसे मैं हिन्दी में लिखे एक शो-गीतों की एक महत्वपूर्ण कड़ी मानता हूँ। यह गीत सन् 1964 में उन्होंने अपनी पत्नी के निधन पर लिखा था। तब उनकी आयु पचीस वर्ष थी। पंक्तियाँ हैं---

बिखर जो गया स्वप्न मेरा तुम्हारा
न तुमने संवारा न हमने संवारा।
विदा लो, उसी हाथ से अब विदा लो
भरी माँग जिससे उसी से चिता लो
बिछुड़ते-बिछुड़ते पलटकर दुबारा
न तुमने निहारा, न हमने निहारा

सब जानते हैं कि पचीस वर्ष की उम्र में विधुर होनेवाले गोपीवल्लभ ने दुबारा विवाह नहीं किया और अपना सारा ध्यान अपनी एक मात्र संतान (बेटी) के लालन-पालन मे केन्द्रित कर दिया।

आज सड़सठ वर्ष की उम्र में चल रहे गोपीवल्लभ काफी अस्वस्थ हैं और

एक हद तक अकेले भी। किन्तु अपने गीतों में अपने को भरपूर जीनेवाले इस संवेदशील कवि के लिए मैं अपनी इन गीत-पंक्तियों में कहना चाहूंगाः-

तू है सहज, तू है सरल
तू यक्ष का बादल सजल
जो आँख नम तुझको दिखी
तू हो गया पारा सजल
मोती संजोना सीप में
तेरी अनूठी रीत है
तू नीर है बहता हुआ
सबके लिए तू प्रीत है।

❑ डी० ब्लाक,
कदमकुआँ, पटना- 800003

हमारे गोपी भैया

❑ इं०बाँके बिहारी साव

हम न तो कवि हैं और न ही लेखक। बस....., गोपी भैया जैसा कोई आदमी मिल गये तो कवि बन गये और सिद्धेश्वर भैया जैसा कोई आदमी मिल गये तो बिना समझे-बुझे संपादक बन गये। कुछ दिनों पहले एक पत्रकार मिल गये थे, तो हम पत्रकार बन गये थे। खूब बढ़िया स्टेटमेन्ट उनसे बनवाते और अखबारों में उन्हीं के दम पर छपवा लेते थे। उस वक्त भी हमारा खूब मन लगा। सुबह-सुबह जब अखबारों में अपना नाम देखते थे तो समझते थे कि हम अमर हो गये और मरेंगे या मरने के पहले जब मृत्यु की तैयारी करेंगे तो सारा देश उदास हो जायगा, मित्र-अमित्र सभी सुबह-सुबह देखने आयेंगे और हमारे कुकर्मों का बखान भी राम-कृष्ण लीला की तरह करेंगे।

लेकिन भैया....., गोपी भैया के बीमार पड़ने के बाद उनकी हालत देखकर हमने गीत-कविता और साहित्य से अपना मुँह मोड़ लिया। भला......., ऐसा भी समाज होता है और ऐसे भी दोस्त होते हैं। कम से कम उन्हें तो गोपी भैया को देखने आना चाहिये जो गोपी भैयों जैसे कवि या लेखक या गीतकार हैं और मरने पर दोस्तों का एक हुजूम रोते हुए देखने का शौक रखते हैं।

हमारी किताब **बिहारी हे-हे-हे** का लोकार्पण था। हम उनको बचपन से मानते थे। वैसे हम पटना में 1968 में अपनी शादी के बाद उत्पन्न हुए, इसलिये हम अपना बचपन 1974 ही मानते हैं। तब हम बामुश्किल छः या सात बरस के पटनियाँ थे और गोपी भैया का हल्ला बोल शुरू हुआ था।

हाँ..........। हम उनको अपने बचपन से मानते थे, सो अपनी किताब के लोकार्पण के अवसर पर उन्हें न्यौतने गये। उन्होंने वादा किया था कि वे अवश्य

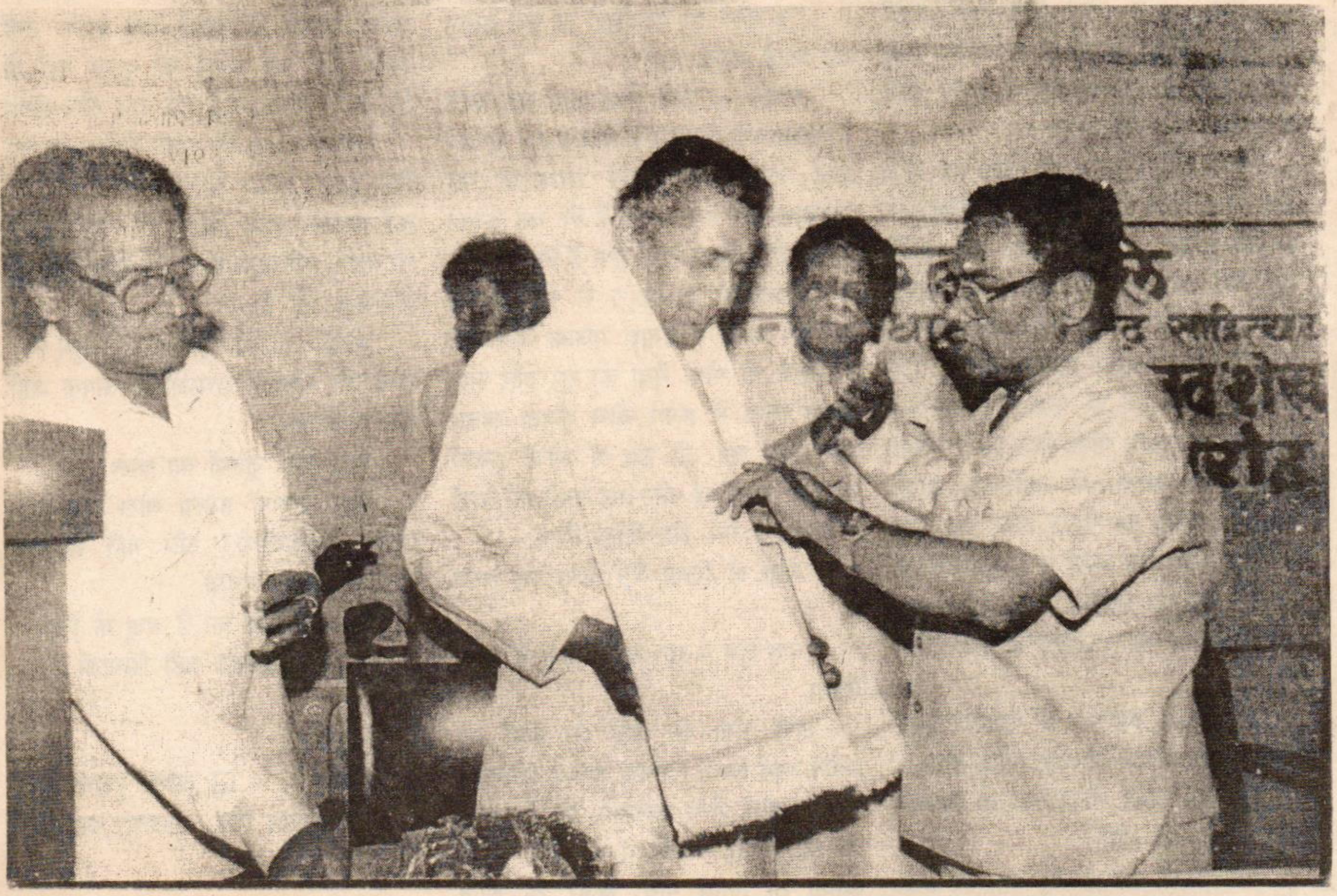

आयेंगे, लेकिन नहीं आये। डॉ० जितेन्द्र सहाय आये। कवि सत्यनारायण भैया आये, पिता तुल्य राम बुझावन बाबू आये, आर्या साहब आये, गुरूवर राजहंस जी आदि मेरे मित्र के०पी० एस० केसरी जी आये, विजय अमरेश जी आये लेकिन गोपी भैया नहीं आये। नहीं आये तो नहीं आये। थोड़े दिनों तक हम को खूब गुस्सा रहा, लेकिन फिर दिल पसीज गया यह याद करके कि हिन्दुस्तान का प्रत्येक बूढ़ा उस कचड़े की तरह होता जो पड़ा रहने पर बुरा लगता है, लेकिन पकाये जाने पर उजाला देता है।

लोकार्पण के बाद सिद्धेश्वर भैया आदि। इनको भी दिल्ली दिल दे बैठी है। जब सुनो, तब पता चलेगा कि ये दिल्ली गये हैं। यही कारण था कि खुद हमारे लोकार्पण की सारी तैयारी करवा कर ये दिल्ली फुर्र हो गये और यहाँ हम अकेले बलि के बकरे की तरह राम बुझावन बाबू से लोकार्पण का तिलक लगवाते रहे।

खैर......। ये आये और हमने उनसे रिक्वेस्ट (हिन्दी में आग्रह करने पर लोग कम मानते हैं) किया कि वे हमारे साथ गोपी भैया के यहाँ चलें।

सच कहिये तो हमारे जाने का शुद्ध अर्थ बस इतना था कि किताब दिखाकर हम इतना कह (हालाँकि नहीं कह सके) सकें कि क्या हुआ यदि आप नहीं आये। ये लीजिये और देखिये हमारी किताब और लोकार्पण का फोटो। लेकिन हमारा ऐसा सौभाग्य कहाँ। उन पर नजर पड़ते ही हम थर्रा गये। एकाएक गोपी भैया इतना बीमार पड़ेंगे, हमने सोचा भी नहीं था। कहाँ, हमारे लोकार्पण के पैदल आने का वादा किये थे, और अब कहाँ खड़ा हो पाने भी असमर्थ पड़े थे। मानिये या न मानिये...... ..., उनको देखकर हम दोनों खुद्दे चित हो गये।

उनको इस अवस्था में देखकर हमने अपना पुराना वाक्य दोहराहा गोपी भैया.... ....., एक तो नयकी भौजी लाते तो आपकी हालत ऐसी नहीं होती।

और पहली बार हमारी बात पर ठेका लगाते हुए उन्होंने कहा था- "बाँके मजाक करता है, लेकिन सच कहता है।"

तब से अब तक वे बीमार हैं। कभी चल पाते हैं और कभी एकाएक चित-पट करने लगते हैं। जुबान भी लड़खड़ा गई। लगता ही नहीं है कि बाँसुरी के सुरों व स्वरों वाले नहीं और गोपी भैया हैं।

1979 में जब हमारी नौकरी लगी तो इनसे और सत्यनारायण भैया से मुलाकात बढ़ गई। ये दोनों हमको मानते भी खूब हैं, काहे कि एक आफिसर और यूनियन का नेता होने के बावजूद भी हम इन दोनों को दूर से ही पुकारते थे- 'हो सत्यनारायण भैया -- हे हो गोपी भैया---।

और इसके बाद नजदीक आते ही हम पूछते-

गोपी भैयां का चेहरा लाल लग रहा है--, शादी कर लिये क्या--?

तब सत्यनारायण भैया (कवि सत्यनारायण) भी हुल-हुला कर कहते--

"ई बाँके का बस चले तो सब बुढ़वा का ब्याहे करवा दे।"

सच---, गोपी भैया बहुत बड़े कवि हैं। बहुत बड़े गीतकार हैं और इनको सुनकर कोई जाननेवाला आदमी स्वयं भी यह विश्वास नहीं कर सकता है कि वह उनको जानता है। लेकिन गोपी भैया हैं निरा भूरखा। ये जिन्दगी के क-ख-ग से भी परिचित नहीं है। कभी ये हमारा मजाक मान लेते तो आज भी गोपी भैया का सुर और स्वर ज्यादा जोश में हमारे बीच गुँजता रहता। मात्र तीस वर्ष की उम्र में भौजी इनको छोड़कर चली गई और बस उन्हीं की यादों में मस्त हो गये और लिख दिया:-

गीत दो लिखे मैंने जन्म के, मरण के

एक तुम न सुन सकी, एक मैं न गा सका।

गोपी भैया छः भाई थे। सबों को इन्होंने स्वयं लम्बा (अपनी लम्बाई घटाकर) किया। गोपी भैया खानदानी भी हैं। चाचा जी भी पुलिस विभाग में थे, और ये भी एक्को ठो लिख पाये। **बंजर के बीज** इनका एकलौता कविता-संग्रह है। इनकी जगह हम रहते तो कम-से-कम दो-तीन दर्जन कविता-संग्रह बीच बाजार में और नहीं तो बीच सड़क पर पड़ा हुआ मिलता।

बाप रे बाप...........। इतना बड़ा कवि. ....। इतना बड़ा गीतकार......। मंच पर गाये तो लड़की लपक पड़े। लेकिन ये जीवन भी कुर्त्ता-पाजामा पहने सड़क पर विधुरों (विधुर हैं भी) की तरह टहलते रहे। सब का अपना-अपना नसीब है। इनकी तकदीर में न ज्यादा किताब और न ही कोई संतान ही थी, तो हम क्या करते? लेकिन आदमी को चाहिये कि आज के मैं वाले युग में वह हम बनने की कोशिश करे और नहीं तो फिर एक टाँग की गाड़ी का इस जीवन में (सामान्य आदमी के) कोई महत्व नहीं है।

खैर........, भगवान करे उनकी लिखी सारी कवितायें, गीत, और ग़ज़ल उनके जीवन में ही किताब के रूप में पैदा होकर उनके सामने ही चलने लगे ताकि उन्हें अपने पीछे यह कहने का दु:ख नहीं हो कि वहाँ (घरती पर) मेरा नाम कौन लेगा।

भगवान करे कि गोपी भैया एक बार फिर स्वस्थ होकर 1974 वाली आग पैदा करें क्योंकि अभी बिहार की धरती उससे भी ज्यादा बहिष्कृत होकर चित्कार-चित्कार कर कह रही है:-

गोपी..........ऐ गोपी........... तुम फिर पटने की नुक्कड़ सभाओं में अपना वही गीत दोहराओ-

जहाँ जहाँ जुल्मों का बोल

बोल जवानों हल्ला बोल (कवियों, लेखक, बुद्धिजीवी) और नहीं तो हमें स्वयं ही कहना पड़ेगा

खून हम सब का है बजू के लिये
अब इबादत यही सिंयासी है।

❑ व्यंग्य रचनाकार,
कन्नूलाल रोड, मीठापुर,पटना-1

स्वस्थ समाज के बिना सबल राष्ट्र की कल्पना नहीं

मंच की राष्ट्रीय कार्यकारिणी में डॉ० रेड्डी के उद्गार

❑ अरुण कुमार भगत

समाज के स्तर पर व्याप्त तनाव को कम कर परस्पर भागीदारी एवं सद्भाव के वातावरण का निर्माण करना ही **राष्ट्रीय विचार मंच** का उद्देश्य है। इसके मद्देनजर एक स्वस्थ समाज का निर्माण करना हर जागरूक नागरिक का परम कर्तव्य है और बिना स्वस्थ समाज के निर्माण के एक सबल राष्ट्र की कल्पना नहीं की जा सकती है। इसलिए समय का तकाजा है कि मंच देश के विशाल किन्तु संकीर्ण दायरों और मान्यताओं के कारण विभाजित जन-समुदाय को भेद-भाव एवं पूर्वाग्रह से मुक्त कर एक साथ खड़ा करने का प्रयास करे जिससे कि सामाजिक न्याय, सहयोग एवं सौहार्द पर आधारित एक नई राष्ट्रीय चेतना का निर्माण हो सके। ये उद्गार हैं मंच के उपाध्यक्ष एवं सुप्रसिद्ध साहित्यकार डॉ० बालशौरि रेड्डी के, जिसे विगत 10 फरवरी को नई दिल्ली के पंडारा रोड में आयोजित **राष्ट्रीय विचार मंच** की नवनिर्वाचित राष्ट्रीय कार्यकारिणी की प्रथम बैठक को सम्बोधित करते हुए उन्होंने व्यक्त किए। चेन्नै से पधारे तमिलनाडु हिन्दी अकादमी के अध्यक्ष डॉ० रेड्डी ने मंच के कार्यकलापों पर प्रसन्नता जाहिर करते हुए कहा कि विगत तीन वर्षों के दौरान मंच के राष्ट्रीय महासचिव **सिद्धेश्वर** ने दक्षिण भारत के चारों राज्यों का दौरा कर न केवल भाषा के सवाल पर उत्तर-दक्षिण के बीच की खाई की भरपाई में हिन्दी का प्रचार-प्रसार किया है बल्कि इन राज्यों की राजधानियों में जाकर वहाँ के विभिन्न भाषा-भाषियों के प्रबुद्धजनों के बीच भारतीय भाषाओं की महत्ता को उजागर करते हुए राष्ट्रभाषा हिन्दी की उपादेयता पर बल दिया है। मंच की ओर से किए जा रहे ये कार्य सचमुच सराहनीय हैं।

पिछली बैठक की कार्यवाही की संपुष्टि करने के बाद राष्ट्रीय कार्यकारिणी ने अपने सात उपाध्यक्षों के कन्धों पर देश के सभी राज्यों में मंच के कार्यों का समन्वय एवं संवर्द्धन के लिए अलग-अलग राज्यों का दायित्व सौंपा जो इस प्रकार है- 1. डॉ० बाल शौरि रेड्डी: तमिलनाडु, आन्ध्र प्रदेश और उत्तरांचल 2. प्रो० नेहपाल सिंह वर्मा: आन्ध्र प्रदेश, केरल, छतीसगढ़ और मध्य प्रदेश 3. डॉ० रमाशंकर श्रीवास्तव: चंडीगढ़, पंजाब और जम्मू एवं कश्मीर 4. डॉ० भगवतशरण अग्रवाल: गुजरात और महाराष्ट्र 5. डॉ० साधुशरण: बिहार, झारखण्ड, प० बंगाल, असम तथा पूर्वोत्तर के राज्य 6. डॉ० एन० चन्द्रशेखरन नायर: केरल और कर्नाटक 7. डॉ० विजयनारायण मणि त्रिपाठी: दिल्ली, उत्तर प्रदेश एवं राजस्थान।

राष्ट्रीय कार्यकारिणी ने मंच के सात अंगों के संचालन हेतु अपने सात संयुक्त सचिवों के दायित्व का निर्धारण इस प्रकार किया-

1. साहित्य एवं प्रकाशन समिति: श्रीमती अलका सिन्हा-संयोजक तथा डॉ० राजेन्द्र गौतम, दीपक कुमार, अनिल दत्त मिश्र एवं डॉ० रामचन्द्र प्र० यादव सभी सदस्य 2. संसाधन समिति: वीरेन्द्र सिंह ठाकुर-संयोजक तथा ईश्वर गोयल, राजकुमार सामन्ता एवं सुरेश कुमार-सदस्य 3. सांस्कृतिक समिति: अमर नाथ 'अमर'- संयोजक तथा हामिद हुसैन, रत्नेश कुमार गौतम-सदस्य 4. समाज कल्याण समिति: दिलीप कुमार सिंह-संयोजक तथा चिन्तामणि बाल्मीकी, संजय कुमार-सदस्य 5. अध्ययन, शोध एवं सर्वेक्षण समिति: सुजीत कुमार- संयोजक तथा शिवेन्द्र कुमार झा एवं प्रो० संजीव राय-सदस्य 6. वैवाहिक सूचना केन्द्र: संयोजक संजय सौम्य-सयोजक तथा अत्यानन्द एवं सुधीर रंजन-सदस्य 7. जन संचार समिति: अरुण कुमार भगत-संयोजक तथा डॉ० मेदिनी प्र० राय एवं देवराज सिंह-सदस्य।

मंच के वार्षिक कार्यक्रम के तहत राष्ट्रीय चेतना जाग्रत करने हेतु देशभक्त महापुरुषों की जयन्तियों के आयोजन के साथ-साथ देश की ज्वलन्त एवं सामयिक समस्याओं के सवालों को लेकर समय-समय पर सामाजिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक एवं आर्थिक विषयों से सन्दर्भित संगोष्ठी, परिचर्चा, परिसंवाद एवं काव्य सन्ध्या के आयोजन करने का निर्णय लिया गया। इस क्रम में 7 अप्रैल को नई दिल्ली में आतंकवाद और उससे जुड़े राष्ट्रीय सवालों पर एक जीवन्त राष्ट्रीय संगोष्ठी तथा सभी राज्य इकाईयों से सलाह लेकर अगले चार-पाँच महीनों में एक राष्ट्रीय अधिवेशन का आयोजन कर मंच की गतिविधियों को राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर लोगों के बीच

पहुंचाने का निर्णय लिया गया। इसके साथ Featare Agency की स्थापना कर मंच के कार्यकलापों को जन-जन तक पहुँचाने का भी निर्णय लिया गया।

कार्यकारिणी ने एक पारित प्रस्ताव द्वारा सभी पदाधिकारियों को **मंच** तथा राष्ट्रीय चेतना की वैचारिक त्रैमासिकी **विचार दृष्टि** पत्रिका की आजीवन सदस्यता ग्रहण कर अगले 30 अप्रैल तक दस-दस साधारण सदस्य बनाने का अनुरोध किया गया।

मंच के युवा प्रकोष्ठ के गठन के क्रम में आगामी 7 अप्रैल को नई दिल्ली में युवकों के एक सम्मेलन आयोजित करने हेतु सुधीर रंजन, ज्ञानेन्द्र नारायण सिंह तथा शशिभूषण कुमार की एक तीन सदस्यीय उप समिति बनाई गई जिसका सहयोग संगठन सचिव ब्रजेश कुमार तथा सुजीत कुमार करेंगे। इसके साथ ही मंच के सक्रिय युवा सदस्य अनुज कुमार को कार्यालय सचिव के पद पर नियुक्त किया गया।

कार्यकारिणी की इस बैठक में मंच की राजस्थान इकाई की अध्यक्ष प्रो० राज चतुर्वेदी ने अपनी शाखा की प्रगति पर प्रकाश डाला। श्रीमती चतुर्वेदी के साथ बैठक में उपस्थित राजस्थान इकाई की संयुक्त सचिव सुश्री पल्लवी सिंह चौहान तथा जितेन्द्र सिंह राठौर ने भी युवक-युवतियों को प्रोत्साहित करने के सुझाव प्रस्तुत किए।

राष्ट्रीय कार्यकारिणी द्वारा समय-समय पर लिए गए निर्णयों को अमलीजामा पहनाने के लिए निम्नलिखित सदस्यों की एक निकाय के गठन का निर्णय लिया गया- 1. अध्यक्ष 2. राष्ट्रीय महासचिव 3. कोषाध्यक्ष (सभी पदेन) 4. अरुण कुमार भगत 5. डॉ० अनिल दत्त मिश्र 6. डॉ० मेदिनी प्र० राय 7. रत्नेश कुमार गौतम 8. डॉ० रमा शंकर श्रीवास्तव 9. ब्रजेश कुमार 10. डॉ० बालशौरि रेड्डी 11. प्रो०(श्रीमती) राज चतुर्वेदी 12. डॉ० साधुशरण 13. दिलीप कुमार सिंह 14. अमरनाथ 'अमर' तथा 15. राधेश्याम तिवारी।

मंच की आम सभा द्वारा अधिकृत आदेश के अनुपालन में राष्ट्रीय कार्यकारिणी ने विभिन्न क्षेत्रों के निम्नलिखित प्रबुद्धजनों को कार्यकारिणी के कुल रिक्त 18 सदस्यों में से 8 सदस्यों को मनोनीत किया:-

1. सुभाष सचदेवा, बी-50, बी०के०दत्त कॉलोनी, लोधी कालोनी, नई दिल्ली, दूर:4644820
2. सतीश शर्मा, 91-बी, सराय जुलैना, नई दिल्ली-25, दूर:6914444/6844646
3. जगदीश नारायण, सी-304, सरोजिनी नगर, नई दिल्ली-1 दूर:4671459
4. डॉ० कमाल ताउरी, भा०प्र०से०
5. सुरेश कुमार, मे० त्रिमूर्ति ज्वेलर्स, मेन रोड, चास, बोकारो, दूर:65769
6. संजय कुमार, इंजीनियर, मारूति उद्योग लि०, गुड़गांव, हरियाणा
7. बांके बिहारी साव,510 ए, आशियाना गैलेक्सी, एक्जीबीशन रोड, पटना-1
8. सुधीर रंजन, यू. 207, शकरपुर, दिल्ली-110092

मंच के अध्यक्ष ने अपने अध्यक्षीय भाषण में 1926 में प्रकाशित प्रेमचन्द के उपन्यास **'कर्मभूमि'** से उद्धरण प्रस्तुत करते हुए कहा कि जिस प्रकार प्रेमचन्द ने आज से लगभग 75 वर्ष पूर्व जीवन के हर क्षेत्र में आई गिरावट के निदान के लिए अपनी धारदार कलम चलाई थी उसी प्रकार आज के रचनाकारों को भी अपनी कृतियों के माध्यम से देश के सार्वजनिक जीवन में तेजी से आ रही गिरावट को रोकने तथा आमजन को मुख्यधारा से जोड़ने के लिए अपनी लेखनी चलानी होगी क्योंकि साहित्य ने तोड़ने के बजाए सदैव समाज को जोड़ने का काम किया है। इसलिए समय की मांग है कि मंच के सभी सदस्य राष्ट्रीय एकता की ताकतों को मजबूत करने हेतु जातीयता, भाषायी एवं क्षेत्रीयता विरोधी और देशद्रोही तत्वों का विरोध करने के लिए आगे आएं।

अन्त में मंच के सचिव रत्नेश कुमार गौतम ने बैठक में उपस्थित सभी सदस्यों सहित डॉ० बालशौरि रेड्डी तथा प्रो० राज चतुर्वेदी के प्रति मंच की ओर से आभार व्यक्त किया। तदुपरान्त अध्यक्ष ने बैठक समाप्ति की घोषणा की।

संयोजक, जनसंचार समिति,
रा०वि०मं०, दिल्ली

मंच की राजस्थान इकाई द्वारा वाचनालय की स्थापना

राष्ट्रीय विचार मंच की राजस्थान इकाई द्वारा जयपुर के शेखवाटी नगर, रोड न०6 में स्थापित एक सार्वजनिक वाचनालय का उद्घाटन पिछले 8 फरवरी को सुप्रसिद्ध गाँधीवादी चिन्तक तथा **विचार दृष्टि** के ब्यूरो प्रमुख डॉ० सत्येन्द्र चतुर्वेदी ने किया। अपने उद्घाटन भाषण में उन्होंने भारतीय स्वतन्त्रता से पुस्तकों को देशभक्ति के प्रसार का सशक्त माध्यम बताते हुए विश्व स्तर पर बौद्धिक जागरण के लिए आपने पुस्तकों को ही श्रेष्ठ आधार कहा। इस दृष्टि से मंच का यह प्रयास सार्थक व सराहनीय है। आपने इस वाचनालय को आर्थिक सहयोग तथा पुस्तकों एवं पत्र-पत्रिकाओं को मुहैया कराने हेतु **राजस्थान सरकार पुस्तकालय विकास समिति** के समक्ष एक प्रस्ताव प्रस्तुत करने का आश्वासन दिया।

इस अवसर पर उपस्थित **मंच की** अध्यक्ष तथा वाचनालय की संयोजिका प्रो०राज चतुर्वेदी ने वाचनालय की महत्ता व उपादेयता पर प्रकाश डालते हुए प्रतिमाह मंच द्वारा पुस्तकों एवं पत्रिकाओं की व्यवस्था करने की घोषणा की। संगठन मंत्री देवेन्द्र व्यास ने मंच के इस प्रथम रचनात्मक प्रयास की प्रशंसा करते हुए वाचनालय के संचालक जीतेन्द्र सिंह राठौर को अपनी शुभकामनाएं दी। प्रारम्भ में मंच की संयुक्त सचिव सुश्री पल्लवी सिंह चौहान के सरस्वती-वन्दना से कार्यक्रम की शुरूआत हुई थी। अन्त में जितेन्द्र सिंह राठौर ने मान्य अतिथियों के प्रति आभार व्यक्त किया।

❑ **प्रो० राज चतुर्वेदी 23, चन्द्रपथ, सूरजनगर (प०), जयपुर-6**

साहित्य से ही समाज में जन-चेतना संभव

विश्व बाजार और साहित्य की चुनौतियाँ पर संगोष्ठी

विगत 22 फरवरी को पटना के सिन्हा लाइब्रेरी परिसर में साहित्यिक संस्था **समय संवाद** की ओर से **डॉ० भगवतीशरण मिश्र के महाप्रभु वल्लभाचार्य** पर केन्द्रित एवं दो खण्डों में सद्य: प्रकाशित उपन्यास **पावक** और **अग्नि पुरुष** पर उनके सम्मान में एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसका विषय था **"विश्व बाजार और साहित्य की चुनौतियाँ।"** इस अवसर पर इन दोनों उपन्यासों की पृष्ठभूमि तथा कथानक पर प्रकाश डालते हुए डॉ० मिश्र ने कहा कि आज साहित्य के माध्यम से ही समाज में जन चेतना सम्भव है। इस दृष्टि से सारे साहित्यकारों को एकजूट होकर साहित्य की रचना करनी होगी।

संगोष्ठी के अध्यक्ष तथा **विचार दृष्टि** के सम्पादक सिद्धेश्वर ने निर्धारित विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत करते हुए कहा कि आर्थिक उदारीकरण भारत में सामाजिक परिवर्तन नहीं चाहता। मौजूदा आर्थिक उदारवाद राजनीतिक अर्थशास्त्र से संचालित है। विदेशों से हजारों करोड़ रुपये का कर्ज लेकर तमाम संसाधनों का निजीकरण किया जा रहा है जिसके कारण मौजूदा आर्थिक बुनियादी ढाँचा चरमरा गया है। विगत दस सालों में गरीबी का चक्का इतनी तेजी से घूमा है कि अच्छे खाते-पीते किसान किसानी छोड़कर कोई और रोजगार तलाशने लगे हैं। सरकार की उदारनीति की वजह से वे अपने ही बाजार से बाहर होते जा रहे हैं। दरअसल भारत ने बिना सोचे-समझे और बिना घर-संवारे 10202 वस्तुओं से प्रतिबन्ध हटाकर आयात के लिए अपने दरवाजे खोल दिए, जिसका नतीजा हमारे सामने है। आज हम पश्चिमी संस्कृति को भुगतने के लिए बाध्य हैं और हमारी संवेदनाएं तक फ्लॉपी में कैद हो चुकी हैं। समाज व देश हित में विश्व बाजार से उत्पन्न चुनौतियों का सामना करने के लिए साहित्यकारों को आगे आना होगा।

प्रारम्भ में **डॉ० राधाकृष्ण सिंह** ने विषय वस्तु को प्रस्तुत करते हुए कहा कि विश्व बाजार आज घर-परिवार में प्रवेश कर गया है जिसके परिणामस्वरूप हमारे साहित्य भी प्रभावित हैं। इसके पूर्व संगोष्ठी में पधारे अतिथियों का स्वागत डॉ० कलानाथ मिश्र ने किया। संचालन के क्रम में समय संवाद के महासचिव एवं कवि-समालोचक **डॉ० शिवनारायण** ने डॉ० भगवतीशरण मिश्र के लेखन पर विस्तार से चर्चा करते हुए कहा कि इनकी सम्पूर्ण कृतियों में मानव मूल्यों को रेखांकित किया गया है। उन्होंने संगोष्ठी के विषय पर अपनी प्रस्तावना में कहा कि विश्व बाजार में उत्तर आधुनिक संस्कृति एवं संरचनावाद के जरिये ग्राम से विश्वग्राम तक संवेदना, नैतिकता, मूल्यबोध , संस्कृति आदि सामाजिक बोध को ध्वस्त करने की साजिश चल रही है। ऐसे में साहित्यकारों के सामने विकट चुनौती है कि वह आनेवाली पीढ़ी को कौन-सा मार्ग दिखाए।

इस अवसर पर नृपेन्द्रनाथ गुप्त तथा पूर्व विधायक राधाकान्त यादव ने भारतीय भाषाओं की उपेक्षा पर क्षोभ प्रकट करते हुए विश्व बाजार के चलते अंगरेजी का वर्चस्व और बढ़ने की आशंका जाहिर की। डॉ० रामशोभित प्र० सिंह ने धन्यवाद-ज्ञापन के क्रम में पुस्तक-संस्कृति के विकास पर बल दिया।

❑ **मनोज कुमार**

लेखन के लिए सामाजिक,राजनीतिक एवं सांस्कृतिक चेतना आवश्यक है

जंगल के खिलाफ कहानी संग्रह का लोकार्पण

सामाजिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक चेतना किसी भी लेखन के लिए आवश्यक है। इसी चेतना की झलक जियालाल आर्य के कहानी-संग्रह **जंगल के खिलाफ** में मिलती है। ये उद्‌गार हैं चर्चित कथाकार मधुकर सिंह के, जिसे उन्होंने विगत 9 मार्च को पटना में आर्य सेवा फाउन्डेशन तथा राष्ट्रीय विचार मंच, बिहार के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित श्री आर्य की उक्त पुस्तक के लोकार्पण समारोह में व्यक्त किए। पुस्तक का लोकार्पण किया माननीय न्यायमूर्ति धर्मपाल सिन्हा ने।

इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त करते हुए प्रो० रामबुझावन सिंह ने कहा कि अनुभूतियों की डाल पर खिला हुआ पुष्प होती हैं कहानियाँ। श्री आर्य की प्राय: सभी कहानियाँ सीधे जीवन से जुड़ी है। और उन्होंने अपने भीतर कुछ छिपाकर नहीं रखा है। कथाकार ने समाज के कुलीन वर्ग के छद्म को बड़े मार्मिक ढंग से रेखांकित किया है। अपने लेखकीय उद्‌गार में कथाकार श्री आर्य ने इस रचना की पृष्ठभूमि पर प्रकाश डाला।

प्रारम्भ में **विचार दृष्टि** के सम्पादक सिद्धेश्वर ने आगत अतिथियों का स्वागत करने के क्रम में जियालाल आर्य के जीवन के कुछ खास पहलुओं को प्रस्तुत करते हुए उनसे प्रेरणा प्राप्त करने की बात कही। इस कार्यक्रम में श्रीरंजन सूरिदेव, कवि सत्यनारायण, बैद्यनाथ शर्मा, डॉ० कुणाल कुमार, डॉ० राधाकृष्ण सिंह, रामउपदेश सिंह **विदेह**, अरुण कुमार **सज्जन** तथा डॉ० शिवनारायण ने लोकार्पित कहानी-संग्रह पर अपने-अपने ढंग से टिप्पणी प्रस्तुत करते हुए इसके कथाकार की कलम को सराहा। अंत में राकेश आर्य ने सभी अतिथियों एवं सुधीजनों के प्रति आभार प्रकट किया।

दिल्ली की संगोष्ठी में आलेख-पाठ

लोकतांत्रिक व्यवस्था की घटती जवाबदेही

❑ सिद्धेश्वर

साम्राज्यवादी सत्ता द्वारा निर्मित और गठित भारतीय प्रशासन आज की परिस्थिति में जनता के प्रति पूरी तरह जिम्मेदार नहीं दिखता है। इस व्यवस्था में इतनी त्रुटियाँ हैं कि भ्रष्ट और कामचोर अधिकारियों-कर्मचारियों को दण्ड देने में वह असमर्थ हो रही है। इसलिए इस प्रशासनिक व्यवस्था को बदलने की आवश्यकता है अन्यथा लोकतंत्र अपना महत्व खो देगा। क्योंकि अपराधी केवल वह नहीं है जो भारतीय दण्ड विधान के अन्तर्गत अपराध करता हो। अपराधी वह भी है जो अपने कर्तव्यों और दायित्वों का पालन ईमानदारी से नहीं करता और जिसके कारण जनता के कष्ट बढ़ते ही चले जाते हैं।

लोकतंत्र को जनता का शासन कहा गया है जिसमें जनता ही सर्वोपरि होती है। किन्तु उनके ऊपर आज वे लोग हो गए हैं जिन्हें अपने प्रतिनिधि के रूप में जनता चुनती है और आखिरकार वे ही लोग सारी सुविधाओं के लिए लालाइत हैं। आज से लगभग 120 वर्ष पूर्व 1882 में अमेरिका के सिनेटर William L.Marcy ने कहा था- " To the victor goes the spoils of the enemy. आज के दौर में उसी Spoils को Patronage कहा जाता है। यानी लूट के माल को (Spoils) शासकों द्वारा संरक्षण दिया जाता है। लूट पद्धति (Spoils Systems) परम्परा से ही शासन की लोकतांत्रिक व्यवस्थाकी एक आकृति रही है। आज यह समस्या और भी गंभीर हो गयी है क्योंकि अब यह देश की एकता, अखण्डता और सुरक्षा के लिए भी खतरा बन गई है। काले धन के जनक आज तस्कर, करवंचक, नेता, अभिनेता, अफीम और हेरोइन बेचनेवाले मौत के सौदागर, रिश्वतखोर, उच्चपदस्थ अधिकारीगण और ऐसे लोग हैं, जो अपने धन को उन व्यापारों में लगाते हैं जिससे देश में भौतिकवादी संस्कृति का प्रचार-प्रसार हो रहा है। जब लोकतंत्र में चुनाव ही काले धन के सहारे होंगे तो यह विधायिका किसकी सेवा करेगी।

आज के परिदृश्य को देखें तो यह एक कड़वी सच्चाई है कि जनता तो दूसरे पायदान पर चली गयी है और पूरे तंत्र पर नेता व प्रशासक हावी हो गए हैं। जनता की भूमिका मात्र वोट तक सीमित हो गई है और वह भी पाँच साल के अन्तराल पर। बीच की अवधि में न तो नेता को जनता की फिक्र है और न प्रशासन से जुड़े अधिकारियों को। यही कारण है कि जनता आज न केवल शिक्षा, स्वास्थ्य, मकान, पेयजल जैसी मूलभूत जरूरतों से भी मरहूम है बल्कि बाढ़, सुखाड़ तथा अन्य प्राकृतिक विपदाओं से लोग जूझ रहे हैं तथा अपनी संपत्ति और परिजनों की बर्बादी अपनी आँखों के सामने देख रहे हैं। दरअसल आज दुनिया के 47 फीसदी कुपोषित बच्चे हमारे ही देश में हैं, 40 फीसदी गांवों में पीने का पानी नहीं है, आधी आबादी गरीब है या गरीबी जैसी हालत में जी रही है। हर साल सरकारी विभाग गरीबों की भलाई के नाम पर 40 हजार करोड़ रुपए खर्च करते हैं और ज्यादातर पैसा भ्रष्टाचारियों की तिजोरियों में पहुंच जाता है। हर साल 26 हजार करोड़ रुपये की बिजली की चोरी हो जाती है। सच तो यह है कि जनता की मूल समस्याओं की जड़ों को तलाशने का काम आज तक हुआ ही नहीं। मात्र अपनी राजनीतिक तथा प्रशासनिक भूख के कारण तात्कालिक समस्याओं को विस्तृत रूप दिया गया। धर्म, जाति तथा आरक्षण का उपयोग सीढ़ी के रूप में अथवा कुर्सी पर बने रहने या कुर्सी हथियाने के लिए किया जाता रहा है। सत्ता पर अपनी पकड़ बनाए रखने की खातिर केन्द्र से लेकर राज्यों तक कमोवेश एक सी स्थिति है।

जिस राष्ट्र में चरित्रबल नहीं होता, वह राष्ट्र अपनी रक्षा नहीं कर पाता। इसी तरह जो राष्ट्र आकंठ भ्रष्टाचार में डूबा रहता है और जिसकी सर्वाधिक आस्था चाटुकारिता पर रहती है वह राष्ट्र अन्ततः समस्याओं के गंभीर दल-दल में धँस जाता है।

भारतीय राजनीतिक और इस देश की प्रशासनिक व्यवस्था की स्थिति आज यह है कि इसमें चाटुकारिता और गणेश परिक्रमा को जमकर स्थान मिला और राजनीतिक एवं सांस्कृतिक जीवन में योग्यता, दक्षता, कर्मठता एवं ईमानदारी के लिए कोई स्थान नहीं बचा। जिस राष्ट्र में चरित्रबल नहीं होता, वह राष्ट्र अपनी रक्षा नहीं कर पाता। इसी तरह जो राष्ट्र आकंठ भ्रष्टाचार में डूबा रहता है और जिसकी सर्वाधिक आस्था चाटुकारिता पर रहती है वह राष्ट्र अन्ततः समस्याओं के गंभीर दल-दल में धँस जाता है। हमारे देश की आज यही स्थिति है। यहाँ समस्याएं केवल व्यवस्था के स्तर पर ही नहीं हैं बल्कि वे राष्ट्रीय जीवन के हर स्तर पर हैं और स्थिति दिनानुदिन तेजी से बिगड़ती चली जा रही है। भाजपा नीत राजग की सरकार से ऐसी उम्मीद की गयी थी कि स्थिति में सुधार आएगा और कुछ परिवर्तन होगा किन्तु वैसा कुछ हुआ नहीं क्योंकि भारत का आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक तथा सांस्कृतिक ढाँचा दिन-व-दिन खोखला होता चला जा रहा है। कारण है कि हमारी कथनी और करनी में अन्तर बढ़ता जा रहा है। राष्ट्रीय चरित्र में ह्रास और भारतीय राजनीति की नैतिकता में गिरावट जिस तेजी से हो रही है वह किसी भी लोकतांत्रिक देश के लिए चिन्ता का विषय है और निश्चित रूप से इसके लिए राजनीतिक नेतृत्व और प्रशासन उत्तरदायी है।

दरअसल हमारे देश में गरीबी उन्मूलन तथा देश के विकास की जो योजनाएं तैयार की जाती हैं उनके कार्यान्वयन में या तो लापरवाही बरती जाती है या फिर उसके कार्यान्वयन में लिप्त भ्रष्टाचारियों अथवा अक्षम

अधिकारियों को दण्डित नहीं किया जाता। अक्सरहा उन पर लगाए गए आरोपों की जाँच का आदेश दे दिया गया और जाँच रिपोर्ट आने तक लोग पूरे मामले को ही भूल जाते हैं क्योंकि तबतक याद करने लायक कई दूसरे मामले सामने आ जाते हैं। दूसरी बात यह है कि जाँच रिपोर्ट आने से लेकर दायित्व निर्धारण तक की प्रक्रिया भी लम्बा और उबाऊ रास्ता तय करती है। फलत: राष्ट्रीय तथा राज्य स्तर के प्राय: अधिकांश मामलों का जो हश्र हुआ वह सबों को मालूम है। जिस मामले पर खुलकर बेइमानी हुई और शासकीय धन का खुलकर दुरूपयोग हुआ, कोई भी इन कृत्यों के लिए आज तक दण्डित नहीं हुआ। बल्कि सच तो यह है कि सारे तथ्य मौजूद होने के बाद भी दोषी एवं भ्रष्ट लोगों के विरूद्ध कार्रवाई करने के बजाए पुन: जाँच के आदेश दे दिये गए। निश्चित रूप से जब तक नौकरशाही की अकर्मण्यता और संवेदनहीनता का पर्दाफाश नहीं किया जाता तब तक उसे सही रास्ता पर लाना मुश्किल ही होगा। सच तो यह है कि देश की समस्त नौकरशाही का कमोवेश एक जैसा ही हाल है। राजनीतिज्ञों ने नौकरशाही की अकर्मण्यता और संवेदनहीनता को बढ़ावा ही दिया है। उन्होंने ऐसा करके एक ऐसी स्थिति उत्पन्न कर दी है जिससे विकास योजनाएँ खोखली होती चली जा रही हैं। क्योंकि हमारे देश की नौकरशाही झूठे आंकड़े गढ़ने में माहिर हो चुकी है और इसी के चलते कागजों पर हर योजना सफल बता दी जाती है। चूंकि विकास कार्यों से जुड़ी योजनाएँ कागजों पर सफल करा दी जाती हैं इसलिए देश की समस्याओं का काई ठोस समाधान नहीं हो पा रहा है।

देश की अदालतों में लम्बित मामलों में भी स्थिति बहुत ठीक नहीं दिखती। उच्चत्तम न्यायालय ने अपने एक फैसले में चिन्ता व्यक्त करते हुए कहा है कि गुनाहगारों को सजा नहीं मिल पा रही है, क्योंकि अदालतों में आये 100 में से 90 से 95 मामलों में गुनाहगार पर जुल्म साबित नहीं हो पाता और दूसरी ओर देश की जेलों में लाखों लोग बिना सजा सुनाए बन्द हैं। जिन लोगों पर जुर्म साबित नहीं हो पाता वे लोग छूट जाते हैं। आम तौर पर वे इसलिए बचते हैं कि पुलिस अपना काम पूरा नहीं करती। हालाँकि पुलिस के काम को बारीकी से देखने की जिम्मेदारी अदालतों पर है। पिछले आठ सालों से चल रहे शेयर घोटाले की लम्बी जाँच का आखिर क्या हश्र हुआ। भारतीय न्यायिक प्रक्रिया की सुस्ती की वजह से धोखाधड़ी और भ्रष्टाचार के आरोपों में आकंठ डूबे **हर्षद मेहता** ने सजा का इंतजार किए बिना चैन से अपनी आँखें मूँद ली। सम्भव है शेयर घोटाले की जाँच अब खटाई में पड़ जाए। हर्षद मेहता की मौत सिर्फ एक हादसा भर नहीं बल्कि भारतीय न्यायिक व्यवस्था के लिए एक गंभीर प्रश्न यह उभरा है कि आखिर कब तक सजा पाए बिना आरोपी आजादी से रहेंगे। कहावत है कि **न्याय में देरी न्याय न मिलने** के समान है (Justice delayed justice denied)। न्याय प्रकिया के बिलम्ब होने से **मसूद अजहर** जैसे लोग कंधार वापसी की उड़ान भर लेते हैं। **मनु शर्मा** के खिलाफ रोज गबाह बयान से मुकर जाते हैं जिसके परिणामस्वरूप उन्हें जमानत मिल जाती है। **लालू** का अप्रत्यक्ष राजकाज जारी रहता है। **जयललिता** के सत्ता पर काबिज़ होने के बाद अभियोजन पक्ष की कमजोरी से वह आरोपों से बरी हो जाती हैं। यही नहीं अनेकों आरोपी अधिकारी जाँच की प्रक्रियाओं की आड़ में न केवल महत्वपूर्ण पदों पर बने रहते हैं बलिक उच्च पदों पर प्रोन्नति भी पा जाते हैं। इन संवैधानिक खामियों की वजह से अपराधियों और भ्रष्टाचारियों की एक तरफ चाँदी है तो दूसरी तरफ काफी तादाद में निर्दोष लोग जेलों में सालों-साल सड़ते रहते हैं। देश की अदालतों पर आज बड़ी जिम्मेदारी है क्योंकि अभी तक जनता को उन पर बहुत उम्मीद है। देर होने और परेशान करने के लिए अदालतों के बढ़ते इस्तेमाल के बाबजूद अदालतों का दरबाजा खटखटाना आदमी अंतिम रास्ता मानता है इसलिए आदालतों को यह भरोसा टूटने नहीं देना चाहिए अन्यथा लोकतंत्र के इस तीसरे महत्वपूर्ण स्तम्भ में आमजन का विश्वास जहाँ डगमगाने लगेगा वहीं सजा का भय समाप्त होने से भ्रष्टाचार और अपराधी का काला बाजार और भी मजबूत होगा।

सच तो यह है कि प्रभावशाली लोगों को जवाबदेह बनाने में उनकी दिलचस्पी नहीं है, जो देश चलाते हैं। सिर्फ जांच और छापों से भ्रष्टाचार नहीं मिटता, उसके लिए प्रशासन में पारदर्शिता, चौकसी और कड़ी कार्रवाई का विकल्प ही हमारे पास मौजूद है। यह स्थिति लोकतान्त्रिक व्यवस्था के लिए कतई अच्छी नहीं कही जा सकती। कहना नहीं होगा कि जवाबदेह प्रशासन किसी भी लोकतंत्र का मूल है। उसकी आधारशिला ही जवाबदेही के सिद्धान्त पर टिकी है। ऐसी स्थिति में भारत जैसे विशालत्तम लोकतंत्र में जवाबदेही के मामले में व्यवस्था का पूर्णत: चुस्त-दुरूस्त न होना कष्टदायक है। वैसे भी शासन पद्धति में अबतक लोकतंत्र को ही सर्वश्रेष्ठ माना जाता है क्योंकि इसमें प्रतिनिधित्व के आधार पर राजकाज की व्यवस्था होती है। हाँ इसमें जो खामियां हैं उसे दूर करने का प्रयास किया जा सकता है। इसलिए समय का तकाजा है कि व्यवस्था को जवाबदेह बनाने के लिए सभी उपलब्ध नियमों, कानूनों को प्रभावी बनाया जाय, यही प्रशासन में बैठे लोगों का सबसे परम कर्तव्य है और इसी की अपेक्षा जन सामान्य करता है। इसके लिए दृढ़ इच्छाशक्ति का होना आवश्यक है। व्यवस्था जिस दिन अपनी दृढ़ इच्छाशक्ति दिखलाएगी, जवाबदेह सरकार और प्रशासन का सपना साकार होगा।

एक दाम - सदा आराम
Kanchan
एक दाम की दुकान
फैंसी रेडिमेड वस्त्रों के बिक्रेता।
प्रो० गोपाल प्रसाद सिंह
Readymade Garments, Khas-Mahal More,
Chiraiyantand, Patna-1

रेणु ने अपनी कथाओं में आदमी की तलाश की

रेणु की 81वीं जयंती पर संगोष्ठी

ग्रामीण जीवन को आधार बनाकर लिखनेवाले साहित्यकारों में प्रेमचंद के बाद रेणु ही ऐसे कथाकार हैं जिन्होंने अपनी कथाओं में आदमी की तलाश की है। भाषा और शिल्प दोनो ही क्षेत्रों में रेणु अद्वितीय रहे। ये विचार हैं प्राचार्य डॉ. रामदेव प्रसाद के, जिसे उन्होंने पिछले 4 मार्च को **राष्ट्रीय विचार मंच** की बिहार इकाइ द्वारा पटना अमर कथा शिल्पी फणीश्वरनाथ रेणु की 81वीं जयंती के अवसर पर आयोजित एक साहित्यिक संगोष्ठी में **रेणु साहित्य में सामाजिक एवं राजनीतिक चेतना** विषय पर एक आलेख प्रस्तुत करते हुए। आलेख के अंश अलग से प्रकाशित किए जा रहे हैं।

संगोष्ठी मुख्य अतिथि प्रो. रामबुझावन सिंह ने कहा कि वर्तमान सामाजिक परिवेश में साहित्य की रचना मानवीय मूल्यों को परखने की सच्ची कसौटी साबित हो रही है। मंच के अध्यक्ष जियालाल आर्य ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि सामाजिक एवं राजनीतिक चेतना पैदा करना साहित्य के महत्वपूर्ण उद्देश्यों में से एक है। इस अवसर पर डॉ. रामशोभित प्रसाद सिंह तथा कवि सत्यनारायण ने जहां साहित्य एवं समाज में बढ़ती दूरी पर चिन्ता व्यक्त की वहीं डॉ. शिवनारायण, डॉ. राधाकृष्ण सिंह तथा डॉ. सच्चिदानंद सिंह 'साथी' ने रेणू की कथाओं पर विस्तार से चर्चा करते हुए कहा कि राष्ट्र के विकास का मार्ग तभी सुदृढ़ हो सकता जब साहित्य में राजनीतिक एवं सामाजिक चेतना को बढ़ावा दिया गया है।

प्रारंभ में सिद्धेश्वर ने विषय प्रवर्तन के क्रम में कहा साहित्य मानवीय मूल्यों की अभिव्यक्ति का सबसे अच्छा माध्यम है। इसके विकास से राष्ट्र की सभ्यता-संस्कृति का विकास जुड़ा है।

मंच का संचालन किया मनोज कुमार ने तथा अतिथियों के प्रति आभार व्यक्त किया प्रो. बी.एन. विश्वकर्मा ने।

प्रस्तुतिः मनोज कुमार

चुनाव नतीजों के दिलचस्प आँकड़ें

❑ अजीत कुमार सिन्हा

उत्तर प्रदेश विधान सभा के कुछ 403 सीटों के लिए हुए चुनाव में मतदाताओं की संख्या 9.97 करोड़ थी जिनमें 5.37 करोड़ ने मतदान किया। इस चुनाव में कुल 89 राजनीतिक पार्टियों ने अपने उम्मीदवार मैदान में उतारे। कुल मतदाताओं में 19.5 प्रतिशत मतदाता मुस्लिम थे जिनका राज्य के लगभग 40 प्रतिशत विधान सभा में वर्चस्व है।

इस चुनाव में कुल 5533 उम्मीदवारों में से सपा के 360, भाजपा के 319 राकां के 40, राक्रांपा के 333, इन्डियन नेशनल लोकदल के 97, अपना दल के 227 तथा निर्दलीय 2374 उम्मीदवार मैदान में थे। उ०प्र० के दो नेता ऐसे थे जो दो-दो विधान सभा क्षेत्रों से चुनाव लड़े थे और दोनों से उनकी जीत हुई। अतरौली और डिबाई से कल्याण सिंह तथा जहांगीरगंज और हरौड़ा से मायावती। उत्तर प्रदेंश के चुनाव नतीजे इस प्रकार रहे:-

सपा 143, बसपा 98, भाजपा 88, कांग्रेस 25, राष्ट्रीय लोकदल 14, राष्ट्रीय क्रांति पार्टी 4, अपना दल-3, लोकतान्त्रिक कांग्रेस 2, भाकपा 2, जद (यू)-2, जनता पार्टी-1, समाजवादी जनता पार्टी 1, लोकजनशक्ति पार्टी-1, अखिल भारतीय हिन्दू महासभा-1 तथा निर्दलीय - 14, उ०प्र० के 22 मंत्री चुनाव हार गए। पिछली विधान सभा के 60 प्रतिशत से ज्यादा सदस्यों को पराजय का मुंह देखना पड़ा। विधान सभा के पूर्व अध्यक्ष भाजपा के बरखू राम वर्मा, सपा के धनीराम वर्मा तथा कांग्रेस के वरिष्ठ नेता अम्मार रिज़वी और भाजपा के पूर्व मंत्री रवीन्द्र शुक्ल भी नहीं जीत पाए।

अब आइए अन्य तीन राज्यों के चुनाव नताजों पर नजर डालें। पंजाब की 116 सीटों पर हुए चुनाव में कुल 917 उम्मीदवार मैदान में थे, जिनमें कांग्रेस 105, अकाली दल (बादल) के 91 तथा भाजपा के 23, पाँच पंथक पार्टियों के पंथक मोर्चा के 91 और बसपा ने 86 सीटों पर अपने उम्मीदवार खड़े किए थे। पंजाब के चुनाव नतीजे इस प्रकार रहे- कांग्रेस 62, अकाली दल 41, भाजपा 3, माकपा 1, तथा निर्दलीय 9

उत्तरांचल के कुल 927 खड़े उम्मीदवारों में कांग्रेस के 36, भाजपा के 19, बसपा के 7, उत्तराखंड क्रांति दल के 4, राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के 1 तथा निर्दलीय 3 उम्मीदवारों ने जीत हासिल की।

मणिपुर में 368 उम्मीदवारों में कांग्रेस के 19, एफ पी०एम०के 13, मणिपुर स्टेट कांग्रेस पर्टी के 6, भाकपा के 5, भाजपा के 4, समता पार्टी के 3, राकांपा के 3, मणिपुर पिपुल्स पार्टी के 2, डी०आर०पी० के 2 तथा एम०एन०सी के 1 उम्मीदवार की जीत हुई। मणिपुर के पिछले 60 विधायकों में से 52 ने दलों की अदला-बदली की थी।

इस प्रकार चारों राज्यों की 650 विधान सभा सीटों के लिए हुए इन चुनावों में भाजपा को मात्र 114 सीटें मिली। कांग्रेस के खाते में 142 सीटें गयीं और बाकी 394 सीटें क्षेत्रीय ताकतों को प्राप्त हुई।

भारतीय रेल डेढ़ सौवें साल में

भारत में औद्योगिक क्रांति का आज एक मुख्य स्त्रोत

❑ सिद्धेश्वर

16 अप्रैल, 1853 को महाराष्ट्र के बम्बई से थाणे तक की 34 कि०मी० से अपनी यात्रा प्रारम्भ कर भारतीय रेल आज इस देश में औद्योगिक क्रांति का एक मुख्य स्त्रोत है। 16 अप्रैल, 2002 को इसने अपने डेढ़ सौवें साल में प्रवेश किया है। आज से 150 वर्ष पूर्व 1853 में जब भारतीय रेल ने इस देश में अपना कदम रखा था, यहां बोल्ट, नट अथवा पिन भी बाहर से आयात होते थे। 1927 में इसने बिहार के जमालपुर में देश की प्रथम मेकैनिकल इंजीनियरिंग संस्थान स्थापित किया, ज़हाँ यांत्रिक अभियन्ताओं के लिए छह साल का प्रशिक्षण प्रारम्भ हुआ और आज जब इसने अपने 150 वें वर्ष में प्रवेश की है, इसके द्वारा अपना रॉलिंग स्टॉक, 2188 पैसेन्जर कोच, 137 डीजल इंजन, 120 इलेक्ट्रीक इंजन और लगभग 2000 मालगाड़ियां प्रत्येक वर्ष बनती हैं और इसके लिए देश के दूसरे उद्योगों से 9000 करोड़ रुपयों की सामग्रियां खरीदी जाती हैं।

भारतीय रेल द्वारा इन दिनों 2810 इलेक्ट्रीक रेल इंजन, 4651 डीजल रेल इंजन, 41348 पैसेन्जर कोच तथा 2440 माल गाड़ियों के पूरे देश में फैले सैकड़ों कार्यशालाओं, शेडों, सिकलाइन्स तथा डिपो से शत प्रतिशत मरम्मत कार्य किए जाते हैं। आज की तिथि में भारतीय रेल देश में 63000 मार्ग कि०मी० से अधिक विशाल नेटवर्क को परिचालित करती है। प्रतिदिन एक करोड़ तीस लाख से अधिक यात्रियों को एक स्थान से दूसरे स्थान तक रेलों द्वारा पहुँचाया जाता है। 15000 कि०मी० से अधिक रेल खण्ड का विद्युतीकरण किया जा चुका है। आज विदेशों से आयातित प्राद्यौगिकी को अपनाकर विद्युत और डीजल के उच्च शक्ति के इंजनों का निर्माण भारतीय रेल कर रही है।

इस बात से अब कोई इनकार नहीं कर करता कि आजादी के बाद यात्री एवं माल यातायात के परिवहन के साथ-साथ भारतीय रेल ने न केवल अपनी सामाजिक सेवाओं को पूरा करने के दायित्व का निर्वहन किया है बल्कि भारत की औद्योगिक क्रांति की दिशा में देश के अन्य शहरों को जोड़कर एक सुदृढ औद्योगिक ढाँचा मुहैया कराया है। रेलवे पर सड़क यातायात के मुकाबले लम्बी दूरी का आतायात उपलब्ध हो रहा है। इसमें कतई सन्देह नहीं कि अपने 150 वें वर्ष में प्रवेश करने के वक्त भारतीय रेल देश का सबसे बड़ा आर्थिक व मानवशक्ति युक्त संगठन बन चुकी है। देश की आर्थिक सामाजिक एवं राजनीतिक विकास के लिए भारतीय रेल आज यातायात का एक प्रधान साधन है। इसके माध्यम से न केवल कृषि उपज को विदेशी बाजारों तक पहुँचाने में सहयोग मिला है बल्कि वन सम्पदा एवं व्यापारिक प्रतियोगिता के क्षेत्र में रेलों द्वारा नवीनता, आधुनिकता, गतिशीलता एवं एकरूपता में वृद्धि हुई। रोजगार प्रदान करने के सन्दर्भ में भारतीय रेल एशिया का सबसे बड़ा तथा विश्व का चौथा रेल संगठन है। इस प्रकार भारतीय रेल आज राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था का एक सुदृढ़ आधार है जिससे न केवल प्रगति एवं समृद्धि का मार्ग प्रशस्त होता है अपितु देश को अखाण्डता और एकरूपता में आबद्ध रखने में अपूर्व सहायता मिलती है।

सूचना प्रोद्यौगिकी के इस युग में भारतीय रेल ने भी अपने विस्तृत नेटवर्क में अपनी कार्य क्षमता को बढ़ाने के ख्याल से

कम्प्यूटरों के उपयोग का एक विस्तृत कार्यक्रम तैयार किया है जिसके तहत 1987 में नई दिल्ली में **रेल सूचना प्रणाली केन्द्र** की स्थापना की गई है। भारतीय रेलों में कम्प्यूटरों की उपयोगिता इंजीनियरींग, लेखा, कार्मिक अभिलेखों, परिचालन, माल परिचालन, दूरसंचार तकनीकी प्रारूपों, ड्राइंगों, सामग्री भंडारण, परिवहन, उत्पादन परियोजनाओं, कार्यशालाओं एवं आरक्षण आदि में है।

भारतीय रेल ने अपने राजभाषा निदेशालय के माध्यम से राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार तथा प्रयोग की दिशा में पहल कर उत्तर से दक्षिण तथा पूरब से पश्चिम के लोगों को एक दूसरे के साथ जोड़ने का सराहनीय प्रयास किया है जिसमें रेल मंत्रालय स्तर पर गठित **रेलवे हिन्दी सलाहकार समिति** की भूमिका भी अहम रही है। आज भारतीय रेलों के विभिन्न कार्यालयों एवं स्टेशनों पर किसी न किसी ख्याति प्राप्त साहित्यकारों के नाम पर 1000 से अधिक पुस्तकालय व वाचनालय स्थापित हैं तथा रेलवे प्राय: प्रत्येक क्षेत्रीय एवं मंडल कार्यालयों से राजभाषा हिन्दी में सुरूचिपूर्ण पत्रिए प्रकाशित की जाती हैं। इस प्रकार भारतीय रेल देश के विभिन्न भाषा-भाषियों को एकसूत्र में पिरोने तथा देशवासियों के अन्दर राष्ट्रीय एकता व अखण्डता का अलख जागाने में एक अहम भूमिका निभा रही है।

भारतीय रेल के 150 वें वर्ष को यात्री सुविधा वर्ष के रूप में मनाने की बात कही गई है। 2002-2003 के प्रस्तुत रेल बजट में 150 किलोमीटर लाइनों का दोहरीकरण तथा 214 किलोमीटर नई लाइनें बिछाने के साथ-साथ पाँच छोटी लाइनों को बड़ी लाइनों में बदलने का प्रस्ताव है। इसी प्रकार 35 नई रेलगाड़ियों के चलाने का प्रयास होगा तथा 16 जन शताब्दी इंटरसीटी एक्सप्रेस चलाने का प्रस्ताव भी एक सराहनीय कदम है। इस बजट में सुरक्षा कार्यों पर 2110 करोड़ रुपये खर्च किऐ जाएंगे। रेलवे की वर्तमान आर्थिक स्थिति को देखते हुए यात्री किराये में जो मामूली वृद्धि कि गई है उसे इस माने में अनुचित नहीं कहा जाएगा कि रेलवे से आम जनता की काफी अपेक्षाओं को देखते हुए नई लाइनों के विस्तार एवं उसकी सुविधाओं में बढ़ोत्तरी की आवश्यकता है जिसके लिए रेलवे को अतिरिक्त धन चाहिए।

दिल्ली मेट्रो रेल में अनूठी कान्टैक्टलेस स्मार्ट टोकन टिकट प्रणाली

राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में यात्रियों की सुविधा के लिए मेट्रो रेल इसी वर्ष दिसम्बर से शुरू हो रही है जिसमें पहली बार विश्व की अनूठी कान्टैक्टलेस स्मार्ट टोकन टिकट प्रणाली विकसित की गई है। इस मेट्रो रेल में सफर करनेवाले यात्रियों को टिकट के तौर पर माइक्रोचिप लगा हुआ एक ऐसा प्लास्टिक कार्ड दिया जाएगा, जिससे किसी तरह की छेड़खानी नहीं की जा सकेगी। इस टिकट के जरिए यात्री न केवल रेल के सभी रूटों पर यात्रा कर सकेंगे बल्कि इस कार्ड से ट्रेन के स्वचालित दरवाजों को खोलने और बन्द करने से लेकर टोल ब्रिजों, विपणन केन्द्रों और बैंको में भी भुगतान के लिए इस्तेमाल किया जा सकेगा। यही नहीं इसके जरिए रेल के साथ-साथ दिल्ली परिवहन निगम की बसों से भी यात्री यात्रा कर सकेंगे। यानी यह कार्ड बहुद्देशीय होगा।

फ्रांस की कंपनी थेल्स ई. ट्रांसैक्शन द्वारा निर्मित रेल के अतिआधुनिक दरवाजों को इस तरह डिजाइन किया गया है , जिससे यात्रियों को ट्रेन में चढ़ने और उतरने में सुविधा हो। मेट्रो स्टेशनों के गेट पर लगाई जानेवाली टिकट ऑफिस मशीन के जरिए यात्रियों को 200 और 500 रुपये मूल्य के ये कार्ड उपलब्ध हो सकेंगे।

दिल्ली के मेट्रो रेल की प्रगति और स्टेशनों की सुरक्षा

केन्द्र सरकार ने 1996 में दिल्ली मेट्रो रेल निगम की स्थापना कर राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में मेट्रो रेल के निर्माण की योजना बनाई थी जिसके तहत मेट्रो परियोजना 2005 तक पूरी हो जानी है। पहले चरण के अन्तर्गत करीब 55 किलो मीटर लम्बे मेट्रो मार्ग पर कुल 45 स्टेशन का निर्माण किया जा रहा है, जिसमें दिल्ली विश्वविद्यालय से केन्द्रीय सचिवालय तक का मेट्रो गलियारा भूमिगत होगा। अद्यतन जानकारी के मुताबिक आगामी दिसम्बर तक शाहदरा और तीस हजारी के बीच मेट्रो रेल प्रारम्भ हो जाएगी जिसकी पूरी तैयारी हो चुकी है।एक करार के तहत लगभग 240 वातानुकूलित मेट्रो रेल ट्रैक आस्ट्रेलिया से आयात किए जाएंगे।

राजधानी में बढ़ती आतंकवादी गतिविधियों से चौकस मेट्रो रेल प्रबन्धन ने मेट्रो स्टेशनों की सुरक्षा की जिम्मेदारी अभी से दिल्ली पुलिस को सौंप दी है। दूसरी ओर सीमा सुरक्षा बल मेट्रो रेल के लिए चार स्निपुर कुत्तों को प्रशिक्षित कर रहे हैं जिन्हें संवेदनशील मेट्रो स्टेशनों पर तैनात किया जाएगा। इसके अतिरिक्त सभी 45 स्टेशनों पर क्लोज सर्किट टीवी कैमरे लगाए जाएंगे तथा यात्रियों का प्रवेश और निकासी स्माटे कार्ड से नियंत्रित होंगे।

झारखण्ड में रेल ढॉचे के विस्तार की छह परियोजनाएं

पिछले 19 फरवरी को रेलवे और झारखण्ड सरकार के बीच हुए एक समझौते के तहत झारखण्ड में रेल ढॉचे के विस्तार के लिए 2004 करोड़ रुपये की लागत से बनी हैं जिसमें झारखण्ड सरकार दो तिहाई तथा भारतीय रेल एक-तिहाई पैसा खर्च करेगी। इन छह परियोजनाओं में 1002 करोड़ की लागत से राँची-बरकाकाना-हाजारीबाग के बीच 185 कि०मी०, 200 करोड़ की लागत से देवघर-दुमका के बीच की 60 कि०मी०, 64 कि०मी० की दुमका-रामपुर हाट के बीच 154 करोड़ की और कोडरमा- गिरिडीह के बीच 35 कारोड़ की 105 कि०मी० की तथा कोडरमा को तिलैया से जोड़ने की 20 कि०मी० 81 करोड़ रुपये की लागत से ये सभी बड़ी लाइनें होंगी और राँची से लोहरदगा छोटी लाईन को तोरी तका बढ़ाकर 113कि०मी० की छोटी लाईन को बड़ी लाइन में बदलने की 216 करोड़ रुपये की योजना शामिल है। वर्ष 2002-2003 में इन परियोजनाओं पर कार्य प्रारम्भ हो जाएगा और पाँच वर्ष के अन्दर पूरी हो जायेगा। झारखण्ड द्वारा 66.66 फिसदी बहन किए जाने वाले खर्च में जमीन का खर्च शामिल है। मजे की बात यह है कि दो-तिहाई खर्च के बावजूद रेल परियोजनाओं पर रेलवे का स्वामित्व होगा और उसके संचालन की जिम्मेदारी तो रेल निभाएगी ही। आजादी के बाद यह एक पहला अवसर है जब कोई राज्य सरकार अपने यहाँ रेल तन्त्र का विस्तार करने के लिए इतने अधिक खर्च के लिए राजी हुई है। इससे एक ओर जहाँ दूसरे विकासशील राज्यों को अपने यहाँ रेल विस्तार करने की प्रेरणा मिलेगी वहीं बिहार सरकार वित्तीय मामलों की अपनी बहहाली के चलते आँसू बहाएगी।

केन्द्रीय कर्मचारियों के लिए स्वैच्छिक सेवानिवृति योजना लागू

❑ सीताराम सिंह

कर्मचारियों की संख्या कम करने के इरादे से केन्द्र सरकार ने विभिन्न विभागों के अतिरिक्त स्थायी कर्मचारियों के लिए स्वैच्छिक सेवानिवृति योजना (VRS) लागू कर दी है। इस योजना के अनुसार सरकारी विभागों में वैसे अतिरिक्त स्थायी कर्मचारियों को इसके लाभ मिलेंगे जो इस योजना को स्वीकार करेंगे और यह लाभ उनके द्वारा सरकारी सेवा में पूरे किए गए प्रत्येक वर्ष के लिए 35 दिन के वेतन एवं मंहगाई भत्ते और सेवावधि के शेष बचे प्रत्येक वर्ष के लिए 25 दिन का वेतन बतौर अनुग्रह राशि दी जाएगी किन्तु यह राशि 25000 रु० अथवा 250 दिन के वेतन एवं भत्ते इनमें से जो भी ज्यादा हो, से अधिक नहीं होगी और कुल अवधि 33 साल से अधिक नहीं होगी। इसके अतिरिक्त वर्तमान नियमों के तहत सेवानिवृति लाभ भी मिलेंगे और अनुग्रह राशि के एक हिस्से पर आयकर से छूट भी दी जाएगी जिसकी अधिकतम 5 लाख रु० रहेगी।

इस योजना को स्वीकार नहीं करने वाले कर्मचारियों को पुन: एक साल का प्रशिक्षण देकर कहीं और समायोजन किया जाएगा किन्तु उनकी छंटनी नहीं की जाएगी। दरअसल चुनाव के दबाव और कुछ सहयोगी दलों की नानुकुर की वजह से अंतिम घड़ी में वीआरएस न स्वीकार करनेवाले फालतू कर्मचारियों को चलता करने का निर्णय टालना पड़ा। यों तो व्यय सुधार आयोग की सिफारिशों के तहत बाबुओं की फौज कम करने के लिए केन्द्रीय मंत्रिमण्डल की एक राय बन चुकी थी और पत्रकारों को इस फैसले की जानकारी दे दी गयी थी लेकिन बाद में इसे वापस ले लिया गया।

मजे की बात यह है कि जैसे ही चार राज्यों के चुनाव समाप्त हुए केंद्र सरकार ने फालतू घोषित कर्मचारियों को चेतावनी दे डाली। फालतू घोषित सरकारी कर्मचारीयों ने, अगर तीन महीने के अंदर विशेष स्वैच्छिक सेवा निवत्ति नहीं ली तो उनको अनुकम्पा के तौर पर मिलनेवाली अतिपूर्ति की राशि भी नहीं मिलेगी।

जिन कर्मचारियों को पहले ही फालतू घोषित किया जा चूका है उनकी तीन महीने की अवधि की उलटी गिनती 28 फरवरी 2002 से शुरू हो चूकी है। खर्च सुधार आयोग ने अभी तक 42,200 पदों की पहचान फालतू के रूप में की है। इनमें से 12,200 पद मार्च महीने के अंत तक समाप्त किए जाने थे।

डी० एन० कॉलेज, मसौढ़ी की *किसलय* पत्रिका का लोकार्पण

विगत 3 मार्च को द्वारकानाथ महाविविद्यालय, मसौढ़ी (पटना) के प्रांगण में कॉलेज से पहली बार प्रकाशित **किसलय** पत्रिका के लोकार्पण के अवसर पर **आतंकवाद के परिप्रेक्ष्य में पत्रकारिता की भूमिका** विषय पर एक विचार संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी के विशिष्ठ वक्ता तथा **विचार दृष्टि** के सम्पादक **सिद्धेश्वर** ने इस विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत करते हुए कहा कि पिछले दो दशकों से भी अधिक समय से आतंकवाद का दंश झेल रहे इस देश में पत्रकारिता की भूमिका इसलिए भी अहम हो गयी है कि अब सेक्स तथा राजनीति के गरमागरम खबरों की जगह देश के सभी समुदाय तथा क्षेत्र के लोगों को धार्मिक कट्टरता व उन्माद के खिलाफ एकजूट होने तथा सद्भाव का वातावरण बनाने की जरूरत है क्योंकि आतंकवाद ने हमारे विकास की गति को निश्चित रूप से अवरूद्ध किया है।

डी०एन०,कॉलेज, मसौढ़ी की इस **किसलय** पत्रिका का लोकार्पण करते हुए बिहार विधानसभा के सदस्य **दिनेश चौधरी** ने स्वीकार किया कि आज भारतीय राजनीति के साथ-साथ बिहार की राजनीति और उसके नेताओं के आचरण दृष्टिकोण तथा उनकी नैतिकता में तेजी से गिरावट आयी है। ऐसी स्थिति में लोकतंत्र के चौथे स्तम्भ **पत्रकारिता** की भूमिका अहम हो जाती है।

संगोष्ठी के अध्यक्ष तथा मसौढ़ी के अनुमण्डलाधिकारी **विनय कुमार**, भा० प्र० से० ने आतंकवाद के साए में पत्रकारिता के दायित्व को बड़े मार्मिक एवं अकाट्य शब्दों में रेखांकित करते हुए विभिन्न तबकों के सदस्यों को भी अपनी सामाजिक प्रतिबद्धता एवं कर्तव्य-बोध के प्रति सचेत होने की सलाह दी। संगोष्ठी के मुख्य अतिथि तथा बिहार विधानपरिषद् के सदस्य **नवल किशोर यादव** ने जहाँ आतंकवाद के अतिरिक्त समाज के हाशिए पर खड़े लोगों की व्यथा-कथा को सामने रखा वहीं विशिष्ट अतिथि **डॉ० राधाकृष्ण सिंह** ने समाज के समक्ष खड़ी चुनौतियों से सामना करने के लिए पत्रकारों को अपनी जबावदेही का अहसास कराया। आलोचक तथा **नई धारा** के सौजन्य सम्पादक **डॉ० शिवनारायण** ने आतंकवाद के वैश्वीकरण पर पत्रकारिता के दायित्व को रेखंकित किया।

इस अवसर पर जिन अन्य प्रबुद्धजनों ने अपने विचार व्यक्त किए उनमें प्रो० जहिरूद्दीन, डॉ० अमर नाथ सिंह, प्रो० नवविन्द सिंह, अधिवक्ता जय प्रकाश सिंह तथा राजेश्वरी शर्मा का नाम उल्लेखनीय है। प्रारम्भ में कॉलेज के प्राचार्य डॉ० डी एन सिंह ने जहां मान्य अतिथियों का अभिनन्दन किया वहीं कॉलेज शासी निकाय के सचिव रूप बिहारी सिंह ने उनके प्रति आभार व्यक्त करते हुए **किसलय** पत्रिका के प्रकाशन की पृष्ठभूमि की चर्चा की।

आज के अंग्रेजी राज के लिए नेहरू जिम्मेदार : नामवर सिंह

आजादी के बाद नेहरू द्वारा अंग्रेजी को अपनाने और हिन्दी को चौदह वर्ष का वनवास देने के फैसले के कारण ही हिन्दी की दुर्दशा हुई है। हिन्दी के शीर्षस्थ आलोचक **नामवर सिंह** ने आज देश में जारी अंग्रेजी राज के लिए भारत के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू को जिम्मेदार बताते हुए कहा कि उन्होंने यदि उक्त फैसला नहीं किया होता तो देश में हिन्दी ही राज कर रही होती।

केन्द्र सरकार के विभागों एवं उपक्रमों यथा कृभको, ओएनजीसी, इफको, भारतीय सर्वेक्षण विभाग तथा विज्ञान तकनीकी मंत्रालय आदि के हिन्दी अधिकारियों के लिए **भारतीय भाषा एवं संस्कृति केन्द्र** द्वारा आयोजित एक दिवसीय कार्यशाला को मुख्य अतिथि के रूप में सम्बोधित करते हुए नामवर जी ने प्रधान मंत्री वाजपेयी द्वारा अंग्रेजी में भाषण दिएं जाने पर भी चुटकी लेते हुए कहा कि प्रबुद्ध कवि की छवि वाले वाजपेयी अब अंग्रेजी बोल रहे हैं। उन्होंने वैश्वीकरण की चुनौतियों और उससे निपटने की तैयारियों की विस्तार से चर्चा की।

संत रैदास को पाठ्यक्रमों में शामिल किया जाए

विगत 27 फरवरी को पटना के होटल आनन्द रिजेन्सी परिसर में **हेल्पिंग हैंड फाउन्डेशन** की ओर से संत रैदास की जयंती पर **साहित्य में दलित चेतना** विषय पर आयोजित संगोष्ठी का उद्घाटन करते हुए शिक्षाशास्त्री डॉ० सच्चिदानन्द सिंह 'साथी' ने कहा कि संत रैदास कर्म, ज्ञान और भक्ति के त्रिवेणी थे। सभी स्तर के पाठ्यक्रमों में इनके साहित्य को शामिल किया जाना चाहिए।

विचार दृष्टि के सम्पादक सिद्धेश्वर ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि संत रैदास ने सामाजिक जड़ता और धार्मिक कट्टरता पर कड़ा प्रहार किया। गीता के मूल तथ्य **कर्म ही धर्म है** को इन्होंने अक्षरस: पालन किया।

संगोष्ठी के मुख्य अतिथि प्राचार्य डॉ० रामदेव प्रसाद ने जहां रैदास के साहित्य के गहन अध्ययन और विश्लेषण की आवश्यकता पर बल दिया वहीं डॉ० शिवनारायण ने कबीर की तरह रैदास की खोज की आवश्यकता जताई। उन्होंने कहा कि निर्गुण भक्ति काव्य-परम्परा में कबीर, रैदास सहित सारे कवि कारीगरी संस्कृति के कवि थे, जो श्रमरत रहते हुए ही उसमें मुक्ति की कांक्षा रखते थे। डॉ० राधाकृष्ण सिंह ने कहा कि सम्पूर्ण भक्ति साहित्य दलित चेतना का उद्‌गम स्रोत है। प्रारम्भ में **फाउन्डेशन** के सचिव ललन चौबे ने अतिथियों का स्वागत करते हुए संत रैदास को महान दार्शनिक एवं चिंतक बताया। कवि नीलांशु रंजन के एक काव्य-पाठ से कार्यक्रम का समापन हुआ।

प्रस्तुतिः ललन चौबे
ए-5, होटल आनन्द रिजेन्सी
कॉम्प्लेक्स, पटना जं०, पटना-1

सुलभ इन्टरनेशनल ने अपना 32वाँ स्थापना वर्ष मनाया

स्वच्छता विश्वविद्यालय स्थापित करने की घोषणा

बिन्देश्वर पाठक द्वारा वर्ष 1970 में स्थापित **सुलभ इन्टरनेशनल** ने अपनी 32वीं वर्षगांठ नई दिल्ली में मनाई।

इस अवसर पर संस्थापक डॉ. पाठक ने एक स्वच्छता विश्वविद्यालय की स्थापना की घोषणा करते हुए कहा कि यह विश्वविद्यालय मानव अस्तित्व के स्वास्थ्य तथा स्वच्छता के साथ-साथ मस्तिष्क तथा आत्मा को भी शुद्ध रखना इस विश्वविद्यालय की सीख होगी। उन्होंने पुनः कहा कि भारत के 70 करोड़ से भी अधिक लोगों के घरों में स्वच्छता (शौचालय) सुविधा नहीं है। सुलभ अबतक भारत भर में 10 लाख से भी अधिक स्वच्छता सुविधाओं का निर्माण कर आज भारत का सबसे बड़ा और विश्व का 7वाँ सबसे बड़ा गैर-सरकारी संगठन बन बैठा है। सुलभ इन्टरनेशनल द्वारा निर्मित 10 लाख शौचालयों का प्रयोग प्रतिदिन एक करोड़ से भी अधिक लोग कर रहे हैं।

सच कहा जाए तो भंगी मुक्ति आन्दोलन को मूर्त रूप देकर सुलभ इन्टरनेशनल ने 32 वर्षों की अवधि में बापू के सपने को साकार किया है जिसका सारा श्रेय डॉ० बिन्देश्वर पाठक को जाता है। बिहार से प्रारम्भ इसके कार्यकलाप आज देश-विदेश के विभिन्न क्षेत्रों में फैले हैं। आखिर तभी तो अपने माथे पर मैला ढोते आज कहीं कोई भंगी नहीं दिखता। यह बात दीगर है। कि उसकी आर्थिक स्थिति आज भी जस की तस है कारण कि शराब की लत ने उसे कहीं का नहीं छोड़ा है ओर सरकार भी उस दिशा में उदासीन दिखती है।

संत रविदास: कर्म ही धर्म है

मध्य युगीन भारत के संत रविदास का जन्म संवत 1433 में माघ पूर्णिमा को रविवार के दिन काशी के मांडुर गांव में एक चमार परिवार में हुआ था। उन दिनों जब वैदिक विचारधारा पर आधारित सामाजिक व्यवस्था में कुछ कट्टरपंथियों एवं रूढ़िवादियों ने उसे विकृत कर समाज में वर्ग 'विभेद का वातावरण बना रखा था, संत रविदास ने अन्य संत भक्तों के साथ भारतीय समाज को सामाजिक समरसता और सम्भाव का न केवल संदेश दिया बल्कि निराशापूर्ण, चिंताजनक और अव्यवस्थित परिरिस्थतियों के घोर संकटापन्न काल में अपने सहज और सरल वाणियों और प्रवचनों द्वारा ईश्वर भक्ति की पावन गंगा बहायी। **कर्म ही धर्म है**- गीता के इस आदेश को उन्होंने अक्षरस: पालन किया। गृहस्थ के बंध नों में जकड़े रहने के बाद भी इस संत ने परिवार के भरण-पोषण का मुख्य जरिया जूता बनाना बनाया और निर्लिप्त भाव से अपने जातीय पेशे को कायम रखते हुए बचपन से ही अपना ज्यादा समय साधु-संतों की संगति में बिताया और कबीर की तरह भजन-कीर्तन करते रहे।

संत रविदास ने धन और सांसारिक ऐश्वर्य को बड़प्पन का कभी चिन्ह नहीं माना और धार्मिक कट्टरता और सामाजिक बंध न को ढीला करने का अथक प्रयास किया। इसी काल में धार्मिक सुधार का काम पूरे भारत में एक साथ चला जिनमें उत्तर भारत में रामानुज, उड़ीसा में जयदेव, बंगाल में चैतन्य महाप्रभु, उत्तर भारत में रामानन्द, कबीर, तुलसी, रविदास, दादू, महाराष्ट्र में नामदेव, रामदास, तुकाराम और पंजाब में गुरुनानक का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

स्थानीय निकायों के चुनाव की सरगर्मी

बिहार

बिहार में 23 वर्षों के बाद पंचायतों के चुनाव लगभग छह माह पूर्व सम्पन्न हुए पर उन्हें उनका वास्तविक हक आज तक नहीं मिल पाया है। पंचायती राज के तीन स्तरीय संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने अपने अधिकारों को हासिल करने के लिए आन्दोलन करने की धमकी तक दे डाली है।

इसी बीच स्थानीय निकायों के चुनाव की अधिसूचना निर्गत होने के बाद नगर निगम तथा नगरपालिका के पार्षदों के लिए नामांकन के वक्त जो सरगर्मी देखी गयी उससे प्रशासन को चौकस होना लाजिमी दिखता है। यद्यपि चुनाव आचार संहिता लागू हो गयी है किन्तु प्रत्याशियों में अधिकतर वैसे लोगों की संख्या अधिक है जिन्हें आदर्श चुनाव आचार संहिता के बारे में कुछ भी पता नहीं है। झकाझक कुर्ता-पजामा पहने, माथे पर बड़ा-सा तिलक लगाए और फूलों की मालाओं से लदे प्रत्याशियों के साथ चल रही समर्थकों की भीड़ ने सड़कों व गलियों को भी उत्सवी माहौल में सराबोर कर दिया है। नामांकन के वक्त तो प्रत्याशियों के साथ न केवल समर्थकों की भारी भीड़ देखी गयी बल्कि इनके साथ हाथी-घोड़े और बैंड-बाजे की भी व्यवस्था थी।

28 अप्रैल को होनेवाले मतदान में बाहुबलियों व धनबलियों के साथ-साथ कई समाजसेवियों, पत्रकारों के सगे-सम्बन्धियों का फैसला होना है। इसके अतिरिक्त इस चुनाव में लगभग 100 किन्नर (हिजड़े) भी अपनी किस्मत अजमा रहे हैं। ललन नामक एक किन्नर ने बताया कि वे राष्ट्र की मुख्यधारा में शामिल होकर कुछ करना चाहते हैं।

उल्लेख्य है कि पटना नगर निगम के प्राय: सभी 57 वार्डों में हिजड़े उम्मीदवार मैदान में है। दरअसल बिहार के मतदाता नेताओं से इस कदर मायूस हो चुके हैं कि वे किन्नरों की उम्मीदवारी को भी गंभीरता से ले सकते हैं। किन्नर प्रत्याशियों का कहना है कि वे स्थानीय निकायों को भ्रष्टाचार से मुक्त करने का प्रयास करेंगे। एक किन्नर उम्मीदवार जानकी ने कहा-बाल-बच्चे तथा परिवार के न रहने की वजह से वे मुक्त होकर समाज का कल्याण कर सकते हैं। पटना के वार्ड न०-10 के एक दूसरे किन्नर उम्मीदवार काली ने कहा- **हम तो जन्मजात हिजड़े है लेकिन हमसे समाज को कोई खतरा नहीं है। असली हिजड़े तो वे है जो अपनी अकर्मण्यता और स्वार्थ सिद्धि से पूरे देश समाज को नपुंसक बनाने में लगे है। परिवारवाद की राजनीति करने वालों हमारी उम्मीदवारी एक तमाचा है।**

इसी प्रकार स्थानीय निकायों के इस चुनाव में महिलाएं भी काफी संख्या में मैदान में उतरी हैं। इसकी वजह है महिलाओं के लिए आरक्षित सीटें। ऐसी ही एक महिला उम्मीदवार ने कहा कि औरत को अपने हक के लिए स्वयं ही उठना होगा और इसके लिए वे काबिल और सक्षम हैं। महिलाओं के सामने आज तमाम तरह की चुनौती है जिसका मुकाबला उसे खुद करना है।

यह कहने की आवश्यकता नहीं कि आज समाज में औरतों की भूमिका बदली है और इस बदली भूमिका के तहत उसे आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होना निहायत जरूरी है जिसके बलबूते वह अपना निर्णय ले सकती है। उसे किसी दूसरे पर मोहताज नहीं रहना पड़ेगा।

दिल्ली

दिल्ली नगर निगम के 134 वार्डों के लिए होने वाले चुनावों में भाजपा तथा कांग्रेस के साथ ग्यारह सौ से ज्यादा उम्मीदवार मैदान में है। देश के इस सबसे बड़े महानगर निकाय के चुनाव परिणाम पर देश की जनता की निगाहें हैं क्योंकि पिछले दिनों चार राज्यों के विधानसभा चुनावों में भाजपा की पराजय के बाद यदि

दिल्ली नगर निगम के चुनाव में भाजपा की जीत नहीं हो पाती है तो आने वाले दिनों में केन्द्र की भाजपा नीत सरकार पर भी संकट के बादल मंडाराएंगे।

दिल्ली नगर निगम में इस समय भाजपा का शासन है किन्तु इस बार दिल्ली भाजपा में जितनी फूट है, उतनी शायद पहले कभी नहीं रही है। भाजपा के प्रमुख नेता मदनलाल खुराना ने भी चुनाव प्रचार अभियान से मुंह मोड़ लिया है। भाजपा के दूसरे प्रमुख नेता विजय कुमार मलहोत्रा को तो किसी तरह मना लिया गया है लेकिन खुराना अभी भी क्षुब्ध बैठे है। नाराजगी का कारण स्पष्ट है। राजधानी की अनाधिकृत वस्तियों व कॉलोनियों को नियमित करने के केन्द्रीय मंत्रिमंडल के फैसले के तहत 550 रुपये प्रति गज की दर से उस वस्ती व कॉलोनी के लोगों को विकास शुल्क देना होगा। क्या यह गरीब व्यक्ति के लिए सम्भव है? ऐसी स्थिति भाजपा के उम्मीदवार वोट माँगने उनके सामने कैसे जाएंगे?

वैसे भी उम्मीदवारों के झुठे एवं कोरे वायदों सुनसुनकर जनता आजिज हो चुकी हैं क्योंकि चुनाव जीतते ही वायदों की अनदेखी की गयी है। सच कहा जाए तो ये हमारी लोकतान्त्रिक परम्परा की खामियां है। धन-बल लगानेवाला चुनाव जीतने पर पहले स्वार्थों की सिद्धि करता है, जनकल्याण की भावना उसके मनसे दूर हो जाती है। यही कारण है कि चुनावों के प्रति जनता की उदासीनता बढ़ती जा रही है।

अहमदाबाद

गुजरात में घटी हाल की घटनाओं के मद्देनजर मार्च में होने वाले अहमदाबाद नगर निकाय के चुनाव अब अप्रैल में होंगे। दंगा से पीड़ित इस नगर के लोगों में इस चुनाव को लेकर उहापोह की स्थिति है क्योंकि इस घटना से लोगों में उत्साह की कमी स्वाभविक है।

संविधान के 73वें एवं 74वें संशोधन के उपरान्त नगर निगमों, नगर पालिकाओं तथा पंचायतों के चुनाव निर्धारित अवधि पर कराने की संवैधानिक बाध्यता की व्यवस्था के साथ महात्मा गाँधी के सत्ता के विकेन्द्रीकरण के सपने कहां तक साकार हो जाते हैं यह तो समय बताएगा किन्तु एक तिहाई सीटों पर महिलाओं के लिए आरक्षण की व्यवस्था कर देश की आधी आबादी को सही मायने में शासन में भागीदारी की शुरूआत हुई है।

महानगरों के निगम, नगरपालिकाओं तथा ग्रामीण क्षेत्रों के पंचायतों के चुनावों ने हमारी लोकतान्त्रिक व्यवस्था से जुड़े भ्रष्ट तन्त्र को भी उजागर किया है। आखिर तभी तो बिहार जैसे राज्यों में 23 वर्षों के बाद स्थापित पंचायती राज को उनके अधिकार से आज तक वंचित रखा जा रहा है।

कुल मिलाकर इन चुनावों पर एक नजर डालने पर ऐसा लगता है कि भाजपा के खाते में जहाँ नाकामियाँ ज्यादा हैं वहीं विपक्ष की भूमि में कांग्रेस भी कमजोर नजर आ रही है जिसके परिणामस्वरूप क्षेत्रीय पार्टियाँ कुछ सीटें घसीट ले जा सकती हैं।

25/3876, Regerpura, karol Bagh. New Delhi-5, Tel.:5842778,5825210

हैवानियत पर भारी पड़ा इंसानियत

विचार कार्यालय, अहमदाबाद

सूरत की तरह अहमदाबाद के ग्रामीण क्षेत्र वाला खेड़ा की मेहमदाबाद तहसील के अन्तर्गत **झिझंना** गांव में भी इस बार दंगा के दौरान ऐसी ही एक कहानी है जहां स्वार्थी नेताओं की साजिश असफल हो गयी।

हुआ यूँ कि झिंझना गांव जहां ज्यादातर मुसलमान और बीस घर हिन्दुओं के हैं को एक मार्च को करीब 5 हजार हिन्दू-मुस्लिमों ने मिलकर दूर से भी ही पथराव शुरू कर दिया, जिससे भीड़ वापस लौट गयी। इसके बाद दो मार्च को गांववालों ने इसकी जानकारी महमदाबाद पुलिस स्टेशन के उपनिरीक्षक गोयल को दे दी। दो मार्च की शाम को कुछ स्वार्थी नेताओं ने गांव के हिन्दू लोगों से संपर्क किया और कहा वे उन्हें गांव में घुसने दें। उन्हें कुछ नहीं कहेंगे, अपना काम करके लौट आएंगे। लेकिन हिन्दू ग्रामीणों ने कोई स्पष्ट जवाब नहीं दिया। इसके बाद उसी रात को गांव में टेलीफोन डेड हो गए।

गांव के सरपंच अय्यूबद्दीन के मुताबिक दूसरे दिन लगभग 12 बजे करीब चार-पाँच हजार लोगों ने पुनः उस गांव को घेरना प्रारम्भ कर दिया किन्तु यह देख उस गांव के अन्दर न घूसने देने का निश्चय किया। इसी बीच गांव में कच्चे रास्ते से उपनिरीक्षक गोयल भी वहां धमके। उधर दंगाइयों ने गांव के चारो ओर लगी फसल को न केवल बरबाद करना शुरू कर दिया बल्कि खेतों में बनी झोपड़ियों में आग लगा दी तथा गांव के बाहर के 17 ट्यूबेवलों को नष्ट कर दिया। गांववालों ने जोर से आवाज देकर उन्हें रूकने को कहा और उधर पुलिस गोयल ने वायरलेस पर पुलिस नियंत्रण कक्ष को संदेश देकर पुलिस फोर्स भेजने का आग्रह किया। ठीक इसी समय वायरलेस पर संदेश सुनकर अहमदाबाद पुलिस महानिरीक्षक (ग्रामीण क्षेत्र), जो उस समय पास के ही क्षेत्र से गुजर रहे थे, तुरन्त ही अपने स्टाफ के साथ उस गांव में जा धमके और गांव में प्रवेश कर रही दंगाई भीड़ पर उनकी पुलिस टीम ने फायरिंग शुरू कर दी और पुलिस ने इस मामले में तलवारों, भाले, पेट्रोल से लैस करीब 40 लोगों को गिरफ्तार कर लिया। इस तरह उस गांव में रह रहे एक हजार लोगों की जान बच गयी। गांववालों ने एक मत होकर कहा कि उन्हें मंदिर-मस्जिद से कुछ लेना-देना नहीं है।

इंसानियत जिंदा है आज भी

हैवानियत का भूत भले ही गुजरात के कई दंगाईयों पर सवार हो किन्तु वहां भी **अब्दुल चाचा** जैसे लोग हैं जिनके चलते इंसानियत जिंदा है आज भी। पन्द्रह साल की गोपीपुरा (सूरत) इलाके की निवासी **पूजा** यह सोचकर कि उसकी दसवीं की परीक्षा दरवाजे पर दस्तक दे रही है और शहर में शांति है, ट्यूशन के लिए अपने घर से निकली। नानपुरा जाने के लिए जब वह बड़े खान चकला के पास पहुँची तो एक पत्थर उसके स्कूटर पर आ गिरा। दूर दो समुदाय के लोग एक दूसरे पर पत्थर फेंक रहे थे। तभी एक दरवाजा खुला और दूसरी तरफ से अब्दुल चाचा ने पूजा को बचाने के लिए घर के अन्दर चाचा और उनकी पत्नी सकीना ने जल्दी उससे घर आ जाने को कहा ताकि वह भारी पथराव से बच सके। सहमी पूजा को अब्दुल चाचा के घर में न सिर्फ सुरक्षा मिली बल्कि उसके परिवार वालों ने भी उसे स्नेह दिया। अब्दुल चाचा ने पूजा के पिता, जो एक बैंककर्मी हैं को फोन पर बताया कि उनकी बेटी सुरक्षित है। बाद में वह उसे अपने साथ ऑटोरिक्सा पर बिठा कर घर ले गए। अपनी बेटी को सुरक्षित देखकर पिता ने आँसू भरी आँखों से अब्दुल चाचा का हाथ चूम लिया। सूरत की यह कहानी हिंसा फैलाने वालों के लिए सबक साबित हो सकती है। यह कहानी है अब्दुल चाचा जैसे लोगों की, जो इंसानित को जीवित रखने की मिसाल बन रहे हैं।

विचार संवाददाता, अहमदाबाद से,

अरुंधती को अदालत की अवमानना पर कैद

प्रतिष्ठित बुकर पुरस्कार से सम्मानित लेखिका अरुंधती राय को उच्चत्तम न्यायालय ने अदालत की अवमानना पर एक दिन की

सांकेतिक कैद तथा 2000 रुपये जुर्माने की सजा दी। 2000 रु० नहीं अदा करने पर तीन माह की कैद भुगतनी होगी। उल्लेख्य है कि दिसंबर 2000 में न्यायालय के गेट के सामने प्रदर्शन के दौरान सर्वोच्च न्यायालय के खिलाफ नारेबाजी के आरोप में उनके खिलाफ नारेबाजी के आरोप में उनके खिलाफ अवमानना की कार्वाई की गयी।

अदालत की पीठ ने अपने फैसले में कहा कि अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता से किसी व्यक्ति को न्यायालय के खिलाफ अनर्गल बोलकर उसकी गरिमा को ठेस पहुँचाने का अधिकतर नहीं मिल जाता और यदि ऐसा होता है तो आम आदमी का न्यायपालिका से विश्वास उठ जाएगा जो लोकतंत्र का महत्वपूर्ण स्तम्भ है।

कम खर्च में निष्पक्ष चुनावः एक सुझाव

❑ भारत ज्योति

(1) कम खर्च में निष्पक्ष चुनाव कराया जा सकता है। इसके लिए मेरे प्रस्तुत किये गये सुझावों के अनुसार लम्बे-चौड़े मतपत्र की जगह मात्र 3 गुणे 2 इंच आकार के मतपत्रों का उपयोग किया जायेगा। सुविधानुसार इसे और भी छोटा किया जा सकता है। इसे 2.5 गुणे 1.75 इंच का भी किया जा सकता है। इसी आकार का काउन्टर-फाइल भी होगा। मतपत्र एवं काउन्टर-फाइल पर ऊपर से नीचे क्रमशः मतपत्र का क्रमांक,मतदाता के अंगूठे का निशान और पीठासीन अधिकारी के हस्ताक्षर होंगे। काउन्टर फाइल पर इसके अलावा दो से चार के क्रम में निर्वाचन केन्द्र संख्या, मतदान केन्द्र संख्या एवं मतदाता सूची में मतदाता का क्रमांक के कॉलम होंगे। मतपत्र एवं काउन्टर फाइल का दूसरा भाग सादा होगा। मतपत्र की छपाई रुपये छापने वाली सुरक्षा के समान कड़ी सुरक्षा के अन्तर्गत एक जगह चुनाव आयोग की निगरानी में होगी।

(2) **मतदान यंत्र**- यह एक रबड़ प्लेट पर एक साथ ही सभी उम्मीदवारों के चुनाव चिन्हों एवं मोनोग्राम के साथ होगा। इसे रैक्सिन या प्लास्टिक पर भी तैयार किया जा सकता है। उसमें एक उम्मीदवार को 3 गुणे 2 इंच बराबर 6 वर्ग ईंच आयताकार स्थान देने का प्रावधान रखा गया है। इस प्रकार यदि 100 उम्मीदवार का यंत्र बनाया जाय तो मात्र 30 गुणे 20 इंच के रबड़ प्लेट या रैक्सीन पर तैयार हो जायेगा। हर उम्मीदवार के कॉलम में चारों कोने पर उनका चुनाव चिन्ह चटकीले रंग में छपा होगा जो साफ दिखाई देगा। बीच में उसी चिन्ह का थोड़ा ऊपर ईंक रौलर या स्वयं स्याही प्रत्याग (Self ink Discharging) विधि से रंग लगाने की व्यवस्था होगी।

(3) **मतदान कराने की विधिः** मतदान कराने के लिए मतदाता, मतदान अधिकारी को मतदान केन्द्र में अपने मतदाता सूची का क्रमांक बतायेंगे। पूर्व विधि के अनुसार मतदान अधिकारी मतदाता सूची में मतदाता का नाम/क्रमांक चिन्हित करेंगे और पीठासीन अधिकारी मतपत्र के काउन्टर फाइल पर निर्वाचन क्षेत्र संख्या, मतदान केन्द्र संख्या मतदाता सूचीवाला मतदाता का क्रमांक अंकित करेंगे और मतदाता के अंगूठे का निशान काउन्टर फाइल और मतपत्र पर लेकर मतपत्र काटकर मतदाता को देंगे। मतदाता पर्दे के पीछे रखे मतदाता-यंत्र के पास जायेंगे और अपने मनोनुकूल चुनाव-चिन्ह के मोनोग्राम पर मतपत्र का सादा भाग चिपकायेंगे। जिससे मतपत्र पर चुनाव चिन्ह छप जायेगा। जिसे बगल में रखे मतपत्र पेटी में आसानी से डाल देंगे।

(4) **मतपत्रों की गिनती** - मतपत्रों की गिनती बिल्कुल आसान हो जायेगी। ताश की पत्ती की तरह कुछ घंटों में मतपत्रों को गिना जा सकता है।

(5) **जाली मतपत्र की जाँच** - इस विधि में जाली मतदान को भी रोका जा सकता है। आदमी, कम्प्यूटर या ऑटोमेटिक फिगंर-प्रिंट कम्प्रेटर का सहयोग लेकर कई विधियों से जाँच की जा सकती है। जाँच के लिए मतदाता को दूसरे रंग के समान आकार वाला शिकायत कार्ड पहले से या आसानी से उपलब्ध कराने की व्यवस्था होगी। शिकायत कार्ड पर निर्वाचन क्षेत्र संख्या, मतदान केन्द्र संख्या एवं मतदाता सूची में मतदाता का क्रमांक और मतदाता के अंगूठे के निशान के साथ-साथ शिकायत कार्ड जमा/प्रस्तुत करने वाले के हस्ताक्षर का कॉलम होगा, जिसे कार्यकर्त्ता मतदान के बाद घर-घर घूम कर सभी सही मतदाताओं के शिकायत कार्डस जमा करने का प्रयास करेंगे और उसे सुविधानुसार खुद या फैक्स के सहयोग से जाँच कार्यालय तक पहुँचायेंगे, जिसे काउन्टर फाइल पर उपलब्ध अंगूठे के निशान से जाँचा जा सकता है। यदि सभी मतदाताओं का नाम, पता, फोटो, मतदाता सूची में क्रमांक एवं अंगूठे के निशान को कम्प्यूटर में जमा कर लिया जाय तो सिर्फ शिकायत प्राप्त होने पर काउन्टर फाइल के सहयोग से सिर्फ गलत मतदान वाले मतपत्रों को ही जाँचा नहीं जायेगा बल्कि उस व्यक्ति को भी पकड़ लेना आसान होगा जो किसी के बदले गलत मतदान किया हो, यदि वैसे व्यक्ति को कड़ी से कड़ी सजा की घोषणा की जाय और दूरदर्षण के माध्यम से जनता को दिखा दिया जाय तो बिना जाँच के ही मतदान केन्द्र पर गलत मतदान करने वालों का दबाव घट जायेगा।

(6) **जाली मतपत्रों की छटाई** -गलत मतदान किए गये जाली मतपत्रों की छटाई बिल्कुल आसान हो जायेगी। इसके लिए गलत मतदान किये गये मतपत्रों के काउन्टर फाइल पर अंकित मतपत्र के क्रमांक की सूची तैयार होगी। जिसका प्लेट बनेगा उसे कम्प्यूटर में लगाकर मतपत्र पेटी से प्राप्त मतपत्रों को कम्प्यूटर में डाल दिया जायेगा। गलत मतपत्र स्वतः छट कर अलग हो जायेंगे। सही मतपत्रों को ताश की पत्ती की तरह हाथ से या कम्प्यूटर से छटाई और गिनती कर ली जायेगी। जो कुछ घंटों में पूरा किया जा सकता है।

(7) **अदालती सबूत** - छोटे मतपत्र एवं काउन्टर फाइल होने के कारण इसे पूरी अवधि तक कम जगह में आसानी से रखा जा सकता है, जो समय पर सबूत का काम करेगा।

वर्तमान चुनाव पद्धति, इलेक्ट्रोनिक वोटिंग मशीन एवं प्रस्तावित कम खर्च में चुनाव कराने की विधि का तुलनात्मक विवरण:-

	प्रस्तावित चुनाव विधि	वर्तमान चुनाव पद्धति	इलेक्ट्रोनिक वोटिंग मशीन
1.	इस विधि से बहुत कम खर्च में चुनाव कराया जा सकता है।	यह पद्धति खर्चीली है।	यह पद्धति खर्चीली है।
2.	यह विधि हर जगह उपयोगी है।	यह भी उपयोगी है। लेकिन खर्च बढ़ेगा।	यह भी उपयोगी है। लेकिन खर्च बढ़ेगा।
3.	इस विधि से कम समय में सही मतगणना हो सकता है।	मतगणना में बहुत समय लगता है और सही की गारण्टी नहीं है।	मतगणना में बहुत समय लगता है और सही की गारण्टी नहीं है।
4.	मतदान में कम समय लगेगा और सहूलियतें होंगी।	मतदान में ज्यादा समय लगता है और परेशानियाँ होती हैं।	मूर्खों द्वारा मतदान संभव नहीं है।
5.	मतपत्र पेटी कम होने के कारण आवागमन, रखारखाव एवं मतगणना में आसानी होगी और मत पेटी की हेरा-फेरी नहीं होगी।	मतपत्र पेटी ज्यादा होने के कारण सभी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है।	मतपत्र पेटी उपयोग में नहीं लाने से कोई प्रमाण नहीं रहता है।
6.	जाली मतपत्रों की छपाई और उपयोग बिल्कुल नहीं होगा	इसमें खुलेआम होता है।	मतपत्र का काम नहीं होता है। जिससे सबूत भी नहीं रहता है।
7.	गलत मतदान संभव नहीं है।	गलत मतदान खुलेआम होता है।	गलत मतदान आसानी से किया जा सकता है।
8.	जाली मतपत्रों की छटाई बिल्कुल आसान हो जायेगी।	जाली मतपत्रों को छांटना संभवन नहीं है।	जाली मतदान का पता ही नहीं चलेगा।
9.	जाली मतपत्रों की जाँच आसानी से हो जायेगी।	जाली मतपत्रों को जाँचना आसान नहीं है।	जाली मतदान का पता ही नहीं चलेगा।
10.	गलत मतदान करनेवाले आसानी से पकड़े जायेंगे।	गलत मतदाता को पकड़ना संभव नहीं है।	गलत मतदाता को पकड़ना संभव नहीं है।
11.	अदालती अड़चनें आने पर सही सबूत पेश किये जा सकते हैं।	सही सबूत साबित करना कठिन है।	सबूत ही नहीं रहेगा।
12.	मतदाता/उम्मीदवार का मौलिक अधिकार सुरक्षित रहेगा।	मौलिक अधिकार असुरक्षित हो गया है।	मौलिक अधिकारों की सुरक्षा संदेहास्पद है।
13.	दोबारा मतदान कराने में किसी प्रकार का बोझ वहन नहीं करना पड़ेगा।	आर्थिक एवं हर ढंग का वहन करना रहा है।	आर्थिक बोझ वहन करना पड़ेगा।
14.	बूथ लुटेरा खुद अपना आतंक बन्द कर देंगे।	लुटेरों का आतंक बढ़ता जा रहा है।	लुटेरों का आतंक बढ़ेगा।
15.	मतपत्र पेटी बदलने पर गलत मतपत्रों को पहचानना एवं अलग करना आसान है।	मतपत्र पेटी बदल देने पर मतपत्रों को पहचानना एवं अलग करना कठिन हो जाता है।	मतपत्र पेटी का उपयोग नहीं होगा जिससे सबूत नहीं रहेगा।
16.	मतपत्र गणना के समय गलत मतपत्र मिलाने पर भी पहचान और अलग करना आसान है।	पहचानना और अलग करना आसान नहीं है।	मतपत्र का उपयोग नहीं होने के कारण सबूत नहीं मिलेगा।
17.	दूसरे उम्मीदवार का मतपत्र मिलाकर बंडल बनाने पर उसकी कई बार जाँच की जा सकती है।	लम्बा-चौड़ा मतपत्र होने के कारण दोबारा जाँच कठिन दीखता है।	मतपत्र का उपयोग नहीं होने के कारण सबूत नहीं मिलेगा।

❑ जी.पी.ओ., पटना-1

कुर्सी की भूख ने भारतीय राजनीति को रसातल में पहुँचाया

❑ सुधीर रंजन

सत्ता और विशेषाधिकार की भूख आज के राजनीतिक दलों एवं उसके नेताओं में इस कदर हावी है कि उसके आगे विचारधारा कोई मायने नहीं रखती। यद्यपि यह स्थिति देश के प्रायः सभी राज्यों की राजनीति में अपना शिकंजा कसती जा रही है किन्तु राष्ट्रीय राजनीति को प्रभावित करनेवाले राज्य उ०प्र० में यह बुराई विभत्स रूप में घर कर गयी है, जिसका नजारा पिछले दिनों हुए वहां के विधान सभा चुनावों में देखने को मिला।

उ०प्र० के चुनाव में इस बार मुख्य तौर पर जातिवाद का बोलबाला तो रहा ही, बड़ी संख्या में आपराधिक छविवाले अथवा अपराध जगत से जुड़े बाहुबलियों ने चुनाव में अपने करतब दिखाए। कमोवेश चारो राज्यों के चुनावों में चुनाव प्रक्रिया की जितनी धज्जियाँ उड़ाई गई, इसके पूर्व ऐसा देखा नहीं गया था। मणिपुर के चुनाव में अराजकता और उत्तरांचल एवं पंजाब में जातिवाद, मजहब तथा पंथ ने मतदाताओं को काफी प्रभावित किया। इसी प्रकार अभिनेता और अभिनेत्रियों का भी खूब प्रयोग हुआ। मुखौटे लगाकर की जानेवाली राजनीति केवल दक्षिण भारत में सत्ता तक पहुँचने के लिए की जाती रही है लेकिन इस बार उत्तर भारत के चुनावों में प्रायः सभी राजनीतिक दलों ने भारी भीड़ जुटाने के लिए अभिनेता एवं अभिनेत्रियों का सहयोग लिया। स्पष्ट है कि भारतीय राजनीति के शीर्षस्थ नेताओं ने अपना आत्मविश्वास खो दिया। एक जमाना था जब स्वतंत्रता संग्राम में योगदान करने वाले राजनेताओं को देखने-सुनने के लिए आम जनता की भीड़ सभाओं में उमड़ पड़ती थी क्योंकि उनमें मूल्य, आदर्श, श्रेष्ठ संकल्प, चरित्र तथा सदाचरण के प्रति आस्था थी। इसलिए जनता उन्हें श्रद्धा और सम्मान की दृष्टि से देखती थी। किन्तु आज भारतीय राजनीति के मूल्यों में तेजी से हो रही गिरावट के चलते नेता असहाय हो गए हैं। लोकतान्त्रिक मूल्यों के प्रति प्रतिबद्धता न होकर सबकुछ जातिवाद, सम्प्रदायवाद तथा पंथवाद की भेंट चढ़ गया। अब क्या फिल्मी सितारों का व्यक्तिगत चरित्र ही हमारे लिए आदर्श बनेगा?

औरतें और अब किन्नर अर्थात हिजड़े भी चुनाव जितने में समर्थ हो रहे हैं। किन्नरों की चुनाव सभाओं में जो भीड़ इस बार के चुनावों में देखने में आई उतनी तो बड़े नेता भी भीड़ नहीं जुटा पाते हैं।

यह कहने की आवश्यकता नहीं कि देश के सामाजिक और राजनीतिक रसायन में जातिवादी आकांक्षाओं और मजहबी उन्मादों का जहर जिस प्रकार घोल दिया गया है वह राजनीतिक दलों के नकारात्मक सोच षड्यंत्र और विघटनकारी मानसिकता का परिचायक है। देश की राजनीति में राष्ट्र को हानि पहुँचाकर सिर्फ अपने दल के लिए राजनीतिक दलों ने उनकी आँखों पर जातिवादी अहंकार और विद्वेष की पट्टी बाँध दी है। आज की अधिकांश पार्टियों का गठन जातिगत आधार पर हुई है। उनका व्यक्तित्व और नेतृत्व जातीय आधार पर बँटा हुआ है, जिसके कारण वह पूरे समुदाय का न होकर किसी खास जाति, मजहब या वर्ग का होकर रह गया है। इसलिए उनका मत भी उनकी पार्टी को ही मिलता है। मणिपुर तथा उ०प्र० के चुनावों में जो खण्डित जनादेश मिले उसका स्पष्ट अर्थ है कि अब राजनीतिक दलों का चरित्र ऐसा नहीं रह गया है कि समाज का हर तबका किसी एक दल पर भरोसा कर सके क्योंकि कोई भी दल समाज के व्यापक जन समुदाय के सुख-दुःख आशाओं-आकांक्षाओं से नहीं जुड़ पाया है। बल्कि सच तो यह है कि प्रायः सभी पार्टियाँ चाहती हैं कि समाज आपस में बँटा रहे ताकि वे अपनी गोटी लाल कर सकें। पूर्व में कांग्रेस ने लगभग चार दशकों तक समाज को पिछड़ों, दलितों और अल्पसंख्यकों एवं सवर्णों में बाँटकर राज किया और अब उन्हीं के पदचिन्हों पर प्रायः सभी पार्टियाँ चल रही हैं।

जातिवादी और मजहबी राजनीति ने जो भस्मासुर तैयार किया है वह सामाजिक व्यवस्था को तो भस्म कर ही रहा है, राजनीतिक व्यवस्था को भी रसातल में भेज रहा है। मुसलमानों को न तो राष्ट्र की मुख्य धारा से जुड़ने दिया जा रहा है और न परिष्कृत किया जाता है। एक ओर मुसलमान वोटों की सौदेबाजी करनेवाले यह नहीं चाहते कि मुसलमान देश के विकास में अपनी सार्थक भूमिका अदा करे और दूसरी ओर मुस्लिमों को शंका की नजर से देखनेवाले उन्हें राष्ट्र की मुख्य धारा से जुड़ने नहीं दे पा रहे हैं। इस कारण मतदाता आज दिग्भ्रमित है। वह जन न होकर केवल जाति और सम्प्रदाय का होकर रह गया है। आखिर जनतंत्र सफल हो तो कैसे जब उसकी भागीदारी ही नहीं हो पा रही है। यह निश्चित है कि जब चुनाव जाति, मजहब, सम्प्रदाय, धन और बल के आधार पर लड़े जाएंगे तो वैसे प्रतिनिधियों से राष्ट्र व समाज के कल्याण की बात नहीं सोची जा सकती और ऐसी स्थिति में लोकतन्त्र का भविष्य भी शुभ नहीं कहा जा सकता क्योंकि लोकतन्त्र के प्रति लोगों की आस्था डगमगाने लगेगी और यह लोकतन्त्र के लिए बहुत खतरनाक होगा।

वक्त बीतने के साथ-साथ ज्यों-ज्यों लोकतन्त्र की जमीनी मुश्किलों और चुनौतियों से सामना हुआ, त्यों-त्यों लोकतान्त्रिक व्यवस्था के प्रति आकर्षण और आस्था कम होती गयी क्योंकि आमजन के मन में भविष्य के प्रति न तो कोई उमंग शेष है और न ही उत्साह। अगणित बिडंबनाओं, विसंगतियों और दिक्कतों से जूझते देशवासी अपने नेताओं के बंजर भाषणों और संकल्पहीन आश्वासनों से बारम्बार छलते जाते रहे हैं। देश के राजनीतिक परिदृश्य पर एक नजर डालने पर ऐसा लगता है कि सत्ता पर हुक्मरानों अथवा राजनीतिक दलों व उसके नेताओं का एक-सूत्र लक्ष्य रह गया है कुर्सी पर डटे रहना या ऐने केन प्रकरेण सत्ता हासिल करना। उनमें जनसेवा तथा कर्तव्य भावना का सर्वथा अभाव है। जो कभी मानवीय व्यक्तित्व हुआ करता था, आज एक दयनीय वामन का रूप ले चुका है। उन पर देशवासियों का विश्वास खत्म है।

विचार कार्यालय, दिल्ली

भाजपा की छवि धुमिल क्यों?

❑ शशि भूषण

पिछले फरवरी में हुए चारों राज्यों के विधान सभा चुनावों के परिणाम से यह स्पष्ट हो गया है कि भारतीय जनता पार्टी की छवि धुमिल हो चुकी है। गत कई सालों से यह संकेत तो मिल ही रहे थे लेकिन मणिपुर, पंजाब, उत्तरांचल तथा उत्तरप्रदेश में सम्पन्न विधान सभा के चुनावों में भाजपा को करारा झटका लगने से उसकी खण्डित छवि की सम्पुष्टि हो गयी क्योंकि 33 प्रतिशत मत के आसपास मंडराती उसकी लोकप्रियता पहले 27 और अब 21 प्रतिशत पर आ पहुँची।

यह बात किसी से छिपी नहीं कि भाजपा संघ परिवार के माध्यम से प्रदेश में उन्मादपूर्ण माहौल बनाने में पीछे नहीं रही। ठीक चुनाव के वक्त अयोध्या में मंदिर निर्माण का मुद्दा फिर से उठाने का प्रयास भी संघ परिवार की सोची-समझी साजिश थी और फलत: जनता ने अपने गुस्से का इजहार चुनावों में किया। यही नहीं भाजपा ने एक ओर जहाँ कमण्डल की बात की वहीं दूसरी ओर पिछड़ों-अतिपिछड़ों व अतिदलितों को अतिरिक्त आरक्षण का सब्ज-बाग दिखलाकर मंडल को भी नहीं छोड़ी। यदि भाजपा को अतिपिछड़ों व अतिदलितों के लिए इतनी चिन्ता थी, तो उसे यह बात पिछले पाँच सालों की जगह सिर्फ चुनावों से सिर्फ चार माह पूर्व ही क्यों याद आई। निश्चित रूप से मतदाता को भ्रमित कर वोट हथियाने की उसकी कोशिश थी।

जहाँ तक आर्थिक कारण का सवाल है भाजपा ने अपनी विचारधारा के अनुरूप उदारीकरण के तहत विदेशी वस्तुओं की आयात में खुली छूट देकर करोड़ों देशवासियों की रोजी-रोटी छीन ली। किसानों के अनाज मण्डियों में सड़ गए, लघु-उद्योग धन्धे बन्द हो गए, नवयुवकों के पास विकल्पहीनता की स्थिति आ गयी। मसलन पूंजीपतियों को छोड़कर सभी-वर्गों को इस सरकार से निराशा हाथ लगी।

जहाँ तक धनबलियों तथा बाहुबलियों को राजनीति में प्रवेश का सवाल है भाजपा ने भी और दलों की तरह खुलकर उन्हें टिकट दिया तथा पार्टी तोड़ने और विधायकों का दल-बदलू बनाने का कुकर्म भाजपा ने भी किया। भ्रष्टाचार के आरोप भाजपा के मंत्रियों पर भी खूब लगे।

महिलाओं के सत्ता में भागीदारी के सवाल पर भाजपा ने भी उन्हें टिकट देने में कोताही की। 33 प्रतिशत तो दूर 319 सीटों पर लड़ी भाजपा ने मात्र 31 महिलाओं को टिकट दिया। इसके अतिरिक्त केन्द्रीय सत्ता में आने के बाद भारत सरकार कश्मीर, आतंकवाद तथा सुरक्षा किसी भी मसले पर ऐसी कोई उपलब्धि नहीं दिखा पाई जिससे कर्मठ राष्ट्रवादी की उसकी छवि बची रहती। यही कारण है भाजपा की धुमिल होती छवि का और पिछले चुनावों में खण्डित छवि का खामियाजा भुगतने का।

कीर्तिमान बौने पड़ गए

1952 से लेकर आज तक म०प्र० के गुना- शिवपुरी लोकसभा के इतिहास में यह पहला अवसर है जबकि **ज्योतिरादित्य सिंधिया** कांग्रेस की टिकट पर अपने निकटतम प्रतिद्वंदी भाजपा विधायक देशराज सिंह यादव को इतने अधिक 4 लाख 6 हजार 568 मतों से पराजित किया। इसी लोकसभा सीट से उनके पिता माधवराव सिंधिया ने भी 1999 के चुनाव में 2 लाख 14 हजार 428 मतों से जीत हासिल कर एक रेकार्ड बनाया था। इस पूरे लोकसभा क्षेत्र में ऐसी कोई भी विधान सभा नहीं है, जहां से श्री ज्योतिरादित्य ने श्री यादव को करारी शिकस्त न दी हो। यहां तक कि जिस मुंगावली विधानसभा से वे दूसरी बार विधायक हैं, वहां भी उन्हें करारी हार का सामना करना पड़ा।

अब एम्स में कैंसर का रोबोटिक लेपरोस्कोपी आपरेशन होगा

विचार संवाददाता, दिल्ली

देश में कैंसर रोगियों के लिए आपरेशन में अब रोबोटिक लेपरोस्कोपी का इस्तेमाल होगा जिसमें रोगियों के आपरेशन के दौरान सर्जन को अपनी अंगुली तक का इस्तेमाल नहीं करना पड़ेगा और रोगी का रक्त भी नहीं बहेगा। इसमें मशीन आपरेशन करेगी और सर्जन अंदर बैठकर कैमरे से स्थिति पर नजर रखेगा। आवश्यकता पड़ने पर वह रोबोट को निर्देश दे सकता है। आपरेशन में लगभग 3 घंटे का समय लगता है। इस तकनीक का अविष्कार व विकास अमेरिका में हुआ है और वहां सौ फीसदी सफलता मिली है। एम्स में दो वर्ष बाद उसे व्यवहार रूप दे दिया जाएगा।

अमेरिका में इस तकनीक के माध्यम से सौ से भी अधिक आपरेशन करनेवाले सर्जन डॉ० मणि मेनन ने एम्स के निदेशक प्रो० पी० के दबे और यूरोलॉजी विशेषज्ञ प्रो० ए० के० हेमल की उपस्थिति में आपरेशन की एक फिल्म भी दिखाई। इस अवसर पर डॉ० मेनन तथा डॉ० हेमल ने बताया कि भारत में एक लाख की आबादी में 6.7 प्रतिशत लोग कैंसर से पीड़ित हैं। किन्तु समय पर कैंसर रोग का पता नहीं चल पाता है कारण कि स्क्रिनिंग जाँच समय पर नहीं हो पाती है। पश्चिमी देशों में डिजिटल रेक्टर के माध्यम से रोग का पता लग जाता है।

विधानसभा चुनावों में भाजपा को करारा झटका

❑ विनय सिन्हा

देश के चार राज्यों में सम्पन्न विधानसभा चुनावों के बाद जो परिणाम निकले उसको लेकर किसी भी पक्ष से कोई बड़ी प्रतिक्रिया नहीं आयी! जैसे कुछ भी अनपेक्षित न हुआ हो। किसी बड़ी प्रतिक्रिया का न आना स्वाभाविक हो सकता है परंतु चुनाव परिणाम के कारण और अर्थ को आसानी से पचा पाना किसी भी दल के लिए मुमकिन नहीं है। चारों राज्यों के चुनाव परिणाम नयी सामाजिक-राजनीतिक परिदृश्य पैदा कर दी है और यही भावी राजनीति की दिशा भी तय करेगी।

भारत के विधानसभाओं के चुनाव में अक्सर स्थानीय मुद्दे ही हावी होते हैं। कमोवेश यह चुनाव भी पिछली मान्यता का उदाहरण बना। गौरतलब है कि केन्द्र में चलनेवाली भाजपा-गठबंधन की सरकार चारों राज्यों में सत्ता से बाहर हो गयी तब यह कहना भी अतिश्योक्तिपूर्ण नहीं होगा कि केन्द्र सरकार की नाकारात्मक पहलू बेरोजगारों की फौज खड़ा करनेवाली आर्थिक नीतियों, किसान विराधी नीतियों, भ्रष्टाचार आदि का कड़वा मिश्रण भी मतदाताओं के नाकों में सुरसुरी पैदा की। भाजपा का आंतकवाद और राष्ट्रीय एकता वाले हौवा को जनता ने एक सिरे से नकार दिया।

प्रत्येक राज्यों के चुनावी डायनामिक्स और इथिक्स अलग-अलग होती हैं। इसमें जाति और धर्म सामान्य पक्ष हैं। पंजाब में हिन्दुओं का भाजपा से तथा सिक्खों का अकाली-दल से मुँह मोड़ लेना अकाली-भाजपा गठबंधन के हार का एक मुख्य कारण रहा। भाजपा को मिली 23 सीटों में सिर्फ 3 ही जीत सकी। भाजपा की ओर से भावी उपमुख्यमंत्री पद के घोषित उम्मीदवार बलरामजी दास टण्डन राज-खुराना से चुनाव हार गए। अकालियों को पिछले चुनावों के मुकाबले 49 सीटों का नुकसान हुआ। हार की एक वजह बादल के पंथक मोर्चे के नेताओं से समझौता न करना भी कहा जा रहा है। पंथक मोर्चे का एक मात्र मकसद बादल को सत्ता से बेदखल करना था। बादल की कुछ इज्जत बचायी बसपा ने! बहुजन समाज पार्टी का हाथी काँग्रेस का रास्ता रोककर इस तरह खड़ा हो गया कि काँग्रेस दो-तिहाई बहुमत हासिल नहीं कर पायी। चर्चा है कि प्रकाश सिंह बादल का बसपा से गुप्त समझौता था। समझौते के तहत बसपा ने पंजाब में सौ उम्मीदवार खड़े किए थे। बसपा पंजाब में एक भी सीट नहीं जीत पायी।

नागा बहुलवाले **मणिपुर** का परिणाम केन्द्र सरकार के पेंच से जुड़ा हुआ है। नागाओं के स्वायतता की ढुल-मुल नीति भाजपा के लिए नुकसानदेह साबित हुआ। गत वर्ष समता गठबंधन के राधा विनोद कोइजाम सरकार का भंग होना और राष्ट्रपति शासन का लगना वहाँ के लोगों को रास नहीं आया था। लिहाजा मतदाताओं ने काँग्रेस एवं अन्य विपक्षी पार्टियों को मत देकर अपना विरोध जताया। राज्य में भाजपा एवं समता का चुनावी तालमेल न होना काँग्रेस की बढ़त का एक मुख्य कारण माना जा सकता है। मणिपुर के तीन मुख्यमंत्री रिशोग कीशिंग, निपामाचा सिंह तथा समता पार्टी के राधा विनोद कोइजाम को मतदाताओं ने धूल चटा दिया। केवल एक पूर्व मुख्यमंत्री भारतीय जनता पार्टी के आर के दोरेन्द्र सिंह ही विधानसभा में प्रवेश कर सके। कीशिंग 1972 में मणिपुर को राज्य का दर्जा दिये जाने के बाद से पहली बार चुनाव हारे हैं। कीशिंग की हार न केवल नागा समुदाय का नेतृत्व खोने के समान है बल्कि चुनावों में सबसे बड़ी पार्टी के रूप में उभरी काँग्रेस के लिए संकट भी है। चुनावों की घोषणा के ठीक पहले मणिपुर नेशनल कांग्रेस का गठन करनेवाले निपामाचा सिंह के हारने से न केवल उनके नेतृत्व पर सवाल उठ रहे हैं बल्कि पार्टी का भविष्य भी दाव पर लग गया है। समता पार्टी के प्रमुख नेता राधा विनोद कोइजाम का चुनाव हारना दल की प्रतिष्ठा पर धक्का है।

उत्तरांचल में कांग्रेस सबसे अच्छी जीत दर्ज की। यहाँ समाजवादी पार्टी का सफाया हो गया। बसपा ने दलित मतों के सहारे सात सीटों पर महत्वपूर्ण जीत बनायी। उत्तरांचल में सवर्णों का ज्यादा मत कांग्रेस के पक्ष में ही गया। यहाँ भाजपा को अपनी हार का पूर्वाभास हो चुका था। उत्तरांचल में सबसे महत्वपूर्ण बात यह रही कि हरिद्वार बचाओ आंदोलन के चार प्रमुख नेताओं को हार का मुँह देखना पड़ा। इसके साथ हरिद्वार बचाओ आंदोलन का वजूद ही मिट गया। इस आंदोलन के पुरोधा समाजवादी पार्टी के निवर्तमान विधायक अंबरीब कुमार लालढांग, सपा के ही राय सिंह सैनी, उनके पुत्र राजकुमार सैनी एवं आंदोलन के संयोजक काजी मुहम्मद अपनी जमानत भी नहीं बचा सके। उत्तरांचल के प्रथम मुख्यमंत्री एवं भाजपा के उम्मीदवार के रूप में नित्यानंद स्वामी भी चुनाव हार गए।

उत्तरप्रदेश पर दंभ भरनेवाली भाजपा को यहां सबसे शर्मनाक हार का सामना करना पड़ा। यहां बहुजन समाज पार्टी का हाथी भी कमल को कुचलकर आगे निकल गया। वैसे उत्तरप्रदेश में सपा 145 सदस्य जीतकर सबसे बड़े दल के रूप में उभरी है परंतु वह सरकार बनाने के 202 के आँकड़े से काफी पीछे छूट गयी।

उत्तरप्रदेश के चुनाव में जाति का समाजशास्त्र ही फिट बैठता आया है। यहां हर पार्टी का जाति आधारित वोट बैंक है। चुनाव में प्रत्येक प्रत्याशी की व्यूह रचना होती है, अपनी जाति के वोट बैंक को बरकरार रखते हुए दूसरी जातियों के वोट बैंक में सेंध लगाना। लेकिन चुनाव बाद के सर्वेक्षणों पर गौर फरमाया जाय तो पता चलेगा कि मतदाताओं की गोलबंदी का आधार महज जाति फैक्टर ही नहीं है। जाति के भीतर ही अमीरी और गरीबी का वर्गभेद नजर आया। तुलनात्मक रूप से धनी पिछड़ों और दलितों का रूझान भाजपा की ओर रहा। सभी जातियों के अत्यंत गरीब तबकों का मत बहुजन समाज पार्टी की झोली में गिरा। सर्वेक्षणों के मुताबिक यादव मतों का ध्रुवीकरण समाजवादी पार्टी की ओर रहा वहीं राज्य में कोयरी-कुर्मी का कोई सर्वमान्य

नेता न होने के कारण इनके मतों का बंदरबाट हुआ। गैर यादव एवं गैर कोयरी-कुर्मी मत का अधिक प्रतिशत झुकाव भाजपा की ओर रहा। अत्यंत पिछड़ा वर्ग का मत लगभग बराबर के अनुपात में तीन प्रमुख दलों सपा, बसपा एवं भाजपा के बीच बटा। मुसलिम मतदाता एक खास रणनीति के तहत वोटिंग करते रहे हैं। कमोबेश इस बार भी स्थिति पिछले चुनावों की तरह रही। पिछड़े मुसलमानों का एक मुश्त वोट सपा की झोली में गिरा परंतु ऊँची जाति मुस्लिम का कुछ प्रतिशत मत कांग्रेस और भाजपा के बीच भी विभाजित हुआ।

उत्तरप्रदेश के चुनावों में वोटिंग का प्रमुख आधार जाति रहा ही है परंतु इस बार मतदाताओं ने प्रत्याशी और पार्टी को भी विकल्प बनाया। मतदाताओं ने जाति के भीतर ही अच्छी छवि के प्रत्याशी को पसंद किया। सर्वेक्षण के मुताबिक सिर्फ जाति के नाम पर पार्टी का आधार तैयार करनेवालों को जनता ने खारिज कर दिया। कल्याण सिंह तो चुनाव जीत गए और खुद को जोड़कर तीन सदस्य को ही विधानसभा पर पहुँचा सके। कल्याण सिंह की राष्ट्रीय क्रांति पार्टी राज्य के सभी 403 सीटों पर चुनाव लड़ी थी। कुर्मी जाति के कथित नेता सोनेलाल पटेल का अपना दल राज्य में मात्र 3 विधायकों को ही विधान सभा में भेज सकी, किन्तु सोनेलाल पटेल स्वंय हार गए।

इस बार के चुनाव नतीजों से यह आइने की तरह साफ झलकता है की बड़े नेताओं के भाषणों तथा व्यक्तियों का मामूली असर भी वोटरों पर नहीं पड़ा। अपने परंपरागत गढ़ों में भी बड़े नेताओं का भाषणों का जादू नहीं चल सका। पंजाब में प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी सहित भाजपा के तमाम नेताओं ने टिड्डी दल की तरह धावा बोला था। सुषमा स्वराज, मदनलाल खुराना नेताओं ने खूब प्रचार और हिंदू-एकता की दुहाई देते हुए 1984 के दंगों को भुनाने की कोशिश की, परंतु इसका तनिक भी प्रभाव जनता पर नहीं पड़ा। उत्तरांचल में भी मतदाताओं ने अपनी ही मर्जी चलायी।

अपने ही निर्वाचन क्षेत्र अमेठी (उत्तरप्रदेश) में सोनिया गाँधी का करिश्मा नहीं चल सका। लोकसभा चुनाव में तीन लाख से ज्यादा मतों से जीती सोनिया के क्षेत्र की पांच में से तीन सीटें भाजपा, सपा के खाते में चली गयी। अमेठी विधानसभा सीट पर संजय सिंह की पत्नी एवं भाजपा उम्मीदवार अमिता सिंह जीत गयी हैं। लखनऊ में अटल जी के भाषणों का रंग नहीं दिखा। लखनऊ के पांच विधानसभाओं में मात्र दो पर ही बहुत मुश्किल से भाजपा जीत पायी। इसी प्रकार उत्तरप्रदेश के जाटलैंड में जाट नेता अजित सिंह लड़खड़ा गए। यह इलाका लोकदल की राजनीति का क्रेमलिन कहलाता है। यहां समाजवादी पार्टी को अधिक सीटें एवं अधिक वोट मिले।

उत्तरप्रदेश में सपा और बसपा का बढ़त सामाजिक बदलाव के चाहनेवालों की लामबंदी माना जा सकता है। उन्हें भाजपा शासन में घुटन महसूस हो रही थी। राजनाथ सिंह की नौकरियों में नया आरक्षण फार्मूला तथा प्रशासनिक सुधार भी नेतृत्व परिवर्तन चाहनेवालों को रास नहीं आया। लिहाजा मतदाता उपेक्षा और अपेक्षा के बीच बंट गया। राजनाथ सिंह सरकार में उपेक्षित महसूस करनेवाली जाति यादव सपा के साथ तथा दलित पहले से कहीं ज्यादा की तादाद में बसपा के साथ है। सवर्ण जातियां तथा वे पिछड़ी जातियां जिन्हें की भाजपा से अधिक अपेक्षा है वे भाजपा के पीछे हो लिया।

बहरहाल तीन राज्यों पंजाब, उत्तरांचल एवं मणिपुर की जनता को नयी सांस मिली और उत्तरप्रदेश की राजनीतिक फांस। उत्तरप्रदेश में जैसे-तैसे अगर गठबंधन सरकार बन भी जाती है तो उसका जीवन काल कब तक का होगा और वह उत्तरप्रदेश की जनता को क्या दे पायेगी यह प्रश्न ही बना रहेगा। चारों राज्यों से भाजपा गठबंधन का फिसलन पार्टी के लिए गहरा आघात है। भाजपा केन्द्र में सरकार बनाने के बाद से राज्यों में उसे हार ही नसीब हुआ है। भाजपा की यह हार एक संयोग मात्र नहीं है। केन्द्र सरकार की अबतक की नीतियां देश के मध्य वर्ग के खिलाफ ही गयी है। गरीबी बेकारी, मंहगाई जैसे राष्ट्रीय मर्ज भाजपा की अव्यवहारिक नीतियों से बढ़ता ही जा रहा है। सरकारी नौकरियों में लगातार कटौती, आवश्यक वस्तुओं का मँहगा होना, सब्सीडी में कटौती देश के मध्यवर्ग और गरीब वर्ग के जीवन को संघर्षमय बना दिया है। यह भाजपा के लिए आने वाले लोकसभा चुनाव के लिए चुनौती बन सकता है। कांग्रेस और अन्य विपक्षी पार्टियों को भी इस मुगालते में नहीं रहना चाहिए कि यह आसान जीत स्थायी है। उसे भाजपा द्वारा छोटी-बड़ी गयी गलतियों को दुरूस्त करना होगा।

❑ द्वारा सुशील कुमार सिन्हा
पंचवटी नगर(श्रमजीवी कॉलोनी)
साउथ बाजार समिति
पटना-16

आतंकवाद और वैश्विक एकता पर अहमदाबाद में संगोष्ठी

राष्ट्रीय विचार मंच की गुजरात इकाई की ओर से विगत 26 जनवरी को अहमदाबाद स्थित सन फ्लावर इंग्लिश स्कूल, कमलेश पार्क, महेश्वरी नगर ओढ़व के प्रांगण में **आतंकवाद और वैश्विक एकता** विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया जिसकी अध्यक्षता अ.भ. मंच के नवनिर्वाचित संयुक्त सचिव वीरेन्द्र सिंह ठाकुर ने की। इस अवसर पर उपस्थित प्रायः सभी वक्ताओं ने एक स्वर से वैश्विक एकता के लिए आतंकवाद को समाप्त करने पर बल दिया। इसके लिए देश के सभी क्षेत्र के लोगों को एक जुट होकर अपनी चुप्पी तोड़नी होगी और मुखौटा हटाना होगा।

संगोष्ठी में जिन वक्ताओं ने निर्धारित विषय पर अपने विचार व्यक्त किए उनमें प्राचार्य डॉ० कृष्ण कुमार सिंह, राम निवास मिश्र, योगेश मिश्र, जगदम्बा प्र० सिंह, विनोद कुमार गिरि, राजनारायण सिंह, श्रीवास्तव जी, संजय साहए राजेश सिंह एम., राजेश सिंह आर., हरिकेश बहादुर सिंह, प्रवीण कुमार सिंह, नरेश चन्देल, केशरीमल अग्रवाल, रमेश अग्रवाल तथा वी.पी. सिंह का नाम उल्लेखनीय है। अन्त में मंच की गुजरात इकाई के सचिव वीरेन्द्र सिंह ठाकुर ने अतिथियों एवं वक्ताओं के प्रति आभार व्यक्त किया।

विचार संवाददाता, अहमदाबाद से,

डॉ० प्रतिभा रंजन की चार क्षणिकाएँ

(1)
कभी-कभी
नहीं चाहती
करना
"थैंक्यू" कहकर
अपना और
"धन्यवाद" का
अपमान

(2)
मैं वासुदेव की
करती हूँ पूजा
पर
मैंने, उसे
कभी देखा नहीं है।
लेकिन, छूटती हुई
ट्रेन में
कोई करता मदद
जब,
देखती हूँ अपने
वासुदेव को उसमें
और फिर,
घर जाकर
पूजती हूँ
अपने वासुदेव को
माँगती हूँ
कि मेरे
आँखों के आँचल
में
ऐसे ढेर सारे
वासुदेव भर दो।

(3)
अपने ढेर सारे
अनुभव
जब कविता को
दूँगी,
तो क्रय-विक्रय के
जमाने में
ये कविताएँ
संतोष का जहर
पिलाकर
संतुष्ट हो जाएगी
मेरी तरह
खुद ही में।

(4)
मेरी कठोरता से
नाराज थे
मेरे आँसू
पर
अपनी कठोरता
की कोमल-विवशता
का क्या करूँ?

❑ 93 ए-1, कैलाश नगर, कानपुर

सपने सभी सजाना है

❑ डॉ. जयसिंह 'व्यथित'

बना भिखरी देश आज यह
देश का बचपन भूखा है
खण्ड-खण्ड हो यौवन टूटा
रस जीवन का सूख है
जाने किस ने डाका डाला
'दिया' बार घर लूटा है
कश्ती फँसी भँवर में अब तो
साहिल पर ले जाना है।
छोड़ काहिली श्रम-संयम से सपने सभी
सजाना है ।।१।।
बातों का है वख्त नहीं अब
नहीं समय यह खोना है
सोये पड़े नींद में गहरी
आगे और न सोना है
रोना-धोना छोड़ कर जाना है
आगे बढ़ कर जाना है
अँगारों से जूझ-जूझ अब
भरना हमें खजाना है।
छोड़ काहिली श्रम-संयम से सपने सभी
सजाना है ।।२।।

❑ ओढ़व, अहमदाबाद

हमें फूलों से मत मारो

❑ अरुण कुमार सिन्हा

हमें फूलों से मत मारो, जिगर में आग
उठती है।
बने तब ग़रदोस्त भी दुश्मन जब किस्मत
हाये रुठती है।।
गड़े काँटें भी अवसर पा सहे जो लाख
अपना मन
गिरे मकरन्द के आँसू कि दिल पर छाप
उठती है।
रहे बन गैर ही अच्छे जो देते न कभी
गच्चे
वे अपना बन किये ऐसा जहर बन झाग
उठती है।
रहे न लोग सीधा अब सहे स्वास्थ्य के
सीधा सब
भँजते जाति-पंथ रिश्ता मनुजता भाग उठती है।
हमें फूलों से मत मारो जिगर में आग
उठती है।।

❑ महेन्द्रू, पटना-6

हाइकू कविताएँ

❑ डॉ. भगवतशरण अग्रवाल

(1)
ओर न छोर
कहाँ ढूँढू क्षितिज !
कहाँ नहीं है ?

(2)
बातें करतीं
हरियाली लॉन पै
पड़ी कुर्सियाँ ।

(3)
लिपटे साँप
इच्छाओं के, मन है –
चंदन-वृक्ष ।

(4)
नभ में लिखीं
वृक्षों ने कविताएँ
पढ़ते मेघ ।

(5)
जोड़ता बच्चा
झड़े हुए पत्ते को
क्या कहे कोई ?

(6)
झरते पत्ते
कहानी कह गए
आशियाने की ।

(7)
बैठतीं टिड्डी
गेहूँ की बलियों पै,
किसान सोते ।

(8)
कानों में कही
भँवरे ने कली के
मुस्काया फूल ।

(9)
तूफानी रा
पेड़ो पै जमी बर्फ
पंछी वेचैन ।

(10)
प्यार से सेया
पंख आते ही उड़े
खाली है नीड़ ।

❑ 396, सरस्वतीनगर,
अहमदबाद-15

राष्ट्रीय एकता और आज की युवा पीढ़ी

❑ पल्लवी सिंह चौहान

20वीं सदी के 47वें वर्ष के अगस्त मास की 15 वीं तिथि को जब स्वतंत्र भारत के मुक्ताकाश पर तिरंगे की अनुपम छवि देखकर प्रत्येक भारतीय का हृदय हर्ष और उल्लास से प्रफुल्लित था, हर्षोन्माद के इन क्षणों में भी प्रत्येक भारतीय के अन्तर्मन में एक टीस थी, एक चोट थी, एक दर्द था। वो दर्द था-बँटवारे का, वो पीड़ा थी जुदाई की। बाँट दिया गया था- धर्म के नाम पर राष्ट्र को, जुदा कर दिया गया था- **"राम को रहीम से", "कृष्ण को करीम से"**। यही वो अन्तिम शूल था जो ब्रिटिश राज ने जाते-जाते भारतीयों के हृदय में गाड़ दिया था।

चोट बहुत गहरी थी, परन्तु हौसले बुलन्द थे, जिसका आधार थी "राष्ट्रीय एकता की भावना", जो प्रत्येक भारतवासी के हृदय में व्याप्त है। पूरब से पश्चिम, उत्तर से दक्षिण-विविध भाषाएं, विविध जातियाँ, विविध वेशभूषायें और विविध परम्परायें परन्तु समान भावधारा-"हम एक हैं। हम भारतीय हैं।" इसी एकता का प्रमाण है कि स्वतंत्रता के बाद भी हमारे पड़ोसी राष्ट्रों ने जब-तब भारत के सीने पर प्रहार किये परन्तु हर बार उन्हें निराशा हाथ लगी।

यदि हम विश्वमंच पर दृष्टिपात करें तो पायेंगे की भारत के सिवाय विश्व का अन्य कोई भी राष्ट्र इतनी विविधताओं को आत्मसात करते हुए भी विश्व का सबसे बड़ा जनतंत्र कहलाने का गौरव प्राप्त नहीं कर सका।

आज का विद्यार्थी वर्ग, जो इस महान जनतांत्रिक राष्ट्र का भावी कर्णधार होगा अपनी "राष्ट्रीय एकता" को मात्र शाब्दिक रूप में ही नहीं वरन् समग्र आत्मीयता से ग्रहण करता है। यद्यपि भारतीय संविधान में भारत को "सम्पूर्ण प्रभुत्व सम्पन्न धर्म निरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य" घोषित किया गया है, तथापि कुछ विजातीय तत्वों ने जब-तब राष्ट्र में साम्प्रदायिक दुर्भावना को भड़काया, तो कभी भाषायी विवाद का स्वर बुलन्द किया, कभी हमारे पड़ोसियों ने हमारे राज्यों पर डाका डालकर हमारी एकता को विखण्डित करने का प्रयास किया है। ऐसी विकट परिस्थितियों में भी हमें सम्पूर्ण विवेक और धैर्य की आवश्यकता है, क्योंकि राष्ट्रीय एकता मात्र किसी पुस्तक का अध्याय नहीं, उत्तेजक भाषणों और नारेबाजी द्वारा प्रकट की जाने वाली भावना नहीं।

आज की विकट परिस्थितियों में प्रत्येक विद्यार्थी राष्ट्रीय एकता को मजबूत करने का प्रथम प्रयास राजनैतिक स्तर पर चाहता है। चूंकि भारत एक जनतांत्रिक राष्ट्र है और जनतंत्र का आधार राजनीतिक दल हैं, अत: प्रथम आवश्यकता राजनीतिक दलों में एकता की है। ना तो हमें विविध राजनीतिक दलों की भरमार चाहिये और ना ही राजनैतिक उथल-पुथल।

आज का छात्र वर्ग ऐसे संगठित राजनीतिक नेतृत्व की परिकल्पना करता है जो स्वच्छ छवि के साथ स्थिर सरकार के द्वारा राष्ट्र की छवि को सुदृढ़ बनाकर विविधताओं से परिपूर्ण इस राष्ट्र की एकता को दृढ़ रख सके। व्यक्ति, समाज और राज्य सदा से एक रहे हैं, अब राजनीतिक नेतृत्व को संगठित करना है। "आधार की खोज बहुत हो चुकी हमें शिखर पर पहुँचना है।" तभी राष्ट्रीय एकता सच्चे अर्थों में बरकरार रहेगी।

हम "भारतीय गाँधीवादी विचारों के समर्थक, पंचशील के प्रतिपादक रहे हैं," परन्तु इसका तात्पर्य कोई हमारी कायरता से नहीं ले, हमारी रगों में बहनेवाला लहू आज भी चंद्रशेखर, सुभाषचंद्र बोस और भगत सिंह के बलिदानों से प्रेरणा पाता है। "हम संसद पर हमला झेल नहीं सकते, 1947 का विभाजन सह चुकें हैं लेकिन कश्मीर को बाँट नहीं सकते, सांप्रदायिक जहर के कारण फिर से अपनों से बिछड़ नहीं सकते।" कुछ लोगों का कथन है-"युद्ध से ही शांति की उत्पत्ति होती है।" परन्तु हम यह भी जानते हैं कि ऐसी शांति के जन्म से पूर्व होनेवाली वेदना भी असहनीय होगी और जहाँ एक अरब की जनसंख्या का प्रश्न है, वहाँ समस्या अधिक विचारणीय है।

इसलिए सर्वप्रथम हम समर्थन करेंगे समझौतावादी नीतियों का, पारस्परिक विचार-विमर्श, शिखर-सम्मेलन एवम् कूटनीतिक प्रयासों का। आज सारा युवा वर्ग व्यक्ति को समाज से, समाज को राज्य से, राज्य को राष्ट्र से जोड़ते हुए राष्ट्रीय एकता के सुदृढ़ सार्थक प्रयासों का पक्षधर है। युवावर्ग यही संकल्प ले कि-**"गंगा की पवित्रता यूँ ही प्रवाहित होती रहे, हिमालय का मुकुट सदैव शोभा देता रहे, मरुभूमि का वैभव सदा उन्नत रहे और ब्रह्मपुत्र का अमृत नित्य छलकता रहे।"**

प्रत्येक भारतवासी एक स्वर में वन्दना करे-

"सर्वे भवन्तु सुखिनः।
सर्वे सन्तु निरामया॥"

❑ सयुक्त सचिव,
राष्ट्रीय विचार मंच,
राजस्थान, जयपुर

लौट - आओ

❑ प्राणेन्द्र कुमार सिंह

प्राचीन काल से मौजूद हमारी भारतीय संस्कृति को कायम रखने के लिए हमारा समाज विकृतियों के खिलाफ संघर्ष करता आ रहा है। देव और दानव, ऋषि और यक्ष, आर्य एवं अनार्य के बीच संघर्ष की कथा सर्वविदित है।

पूर्तगाली, मुगल और अंग्रेजों के आक्रमण से संघर्ष हुए, किन्तु भारत की प्राचीन संस्कृति में इतना दम है कि आक्रमणकारियों को पराभव का मुँह देखना पड़ा। इतिहास गवाह है कि जब-तब वैनाशिक तत्वों का प्रभाव बढ़ जाने तथा वैनाशिक शक्तियों का संख्यात्मक प्राचूर्य (आधिक्य) होने पर भी समाज ने ऐसी विकृति के सामने झुककर स्वीकृति की मुहर नहीं लगाई। यह हमारे पौराणिक भारतिय संस्कृति का ही प्रभाव माना जाएगा। किन्तु आज हम अपनी संस्कृति को विस्मृत करने की चेष्टा कर रहे हैं। आश्चर्य की बात है कि जिस भारतीय संस्कृति पर सारा विश्व नतमस्तक है और आत्मसात करने का पूरजोर प्रयास कर रहा है, वहीं हमारी नई पीढ़ी जो भारत के भविष्य हैं, पश्चिमी सभ्यता की ओर भागने की होड़ लगा रखी है। दुष्परिणाम सामने है कि आध्यात्मिक और वैज्ञानिक दृष्टि से सम्पन्न राग में आबाद हमारा शास्त्रीय गायन तथा भरतनाट्यम, कथकली इत्यादि नृत्य रैप साँग, पॉप साँग तथा कैबरे, ब्रेक डान्स, एंगिल डॉन्स और एरोबिक डान्स जैसे पश्चिमी देशों के शेरगुल युक्त गान और नृत्य की चकाचौंध में धुँधला गया है। हमारे देश की 80% जनता 'पेट की संस्कृति' से ऊपर नहीं उठ पाई है। किंतु नई पीढ़ी के गुमराह बच्चे पश्चिमी जगज की नकल में इस कदर आगे बढ़ रहे हैं कि उन्हें यह भी नहीं पता कि जब माँ-बाप का पेट भूखा रहता है तब उनके तन पर जिन्स और जैकेट चढ़ता है। इस तरह 80% जिन्स और जैकेट के पीछे की यही पृष्ठभूमि है।

आज की पीढ़ी विध्वंस के मार्ग से सृजन का इतिहास गढ़ना चाहती है। वर्चस्व कायम करने और अलग पहचान बनाने के लिए वे स्वयं का कथित रूप से पश्चिमीकरण कर सारी सीमाएँ लाँघ चुके हैं।

हमने पर्वतों को तोड़कर सड़को पर बिछा दिया, वृक्षों को काटकर महलों को सजा लिया और फिर बड़े फक्र से कहते हैं कि हमने सांस्कृतिक विकास किया। भारतीय संस्कृति की यह अनदेखी विकृति को आमंत्रण देना है और यही कारण है कि हम परिवार से देश तक हिंसा का तांडव और विनाश का बवंडर झेल रहे हैं।

मित्रों, भारत एक ऐसा देश है जिसने सर्वप्रथम अखिल विश्व में ज्ञान का आलोक बिखेरा। भारत की संस्कृति इतनी मर्यादित है हम आज भी अनुप्रमाणित हैं, गौरवान्वित हैं। हम भारत के प्रथम पुरूष मनु की संतान मानव हैं, हमें दानव का मुखौटा फेकना ही होगा। हम पौर्वात्य सभ्यता में जीते हैं, हमें पाश्चात्य को बिसरना ही होगा। पश्चिम की चकाचौंध से ऊपर उठकर खोए अतीत को पाना ही होगा। समय मूल्यवान है और यह कम है, हमें जहरीले रूप को बदलना ही होगा। पश्चिमी जगत् की ओर बढ़ते आज की नई पीढ़ी को मैं आवाज देता हूँ कि भारतीय संस्कृति से ऊपर कोई संस्कृति नहीं–

लौट आओ। किसी देशभक्त शायर ने खूब कहा है–

"दुनियाँ में ऐसी धरती ऐसा गगन नहीं है,
मेरे वतन से अच्छा कोई वतन नहीं है"।

❑ बी.-278,279, नेहरू विहार,
तिमारपुर, नई दिल्ली-54

पटना मेडिकल रिहैवलिटेशन क्लिनिक
मखनियाँ कुआँ रोड, पटना-4
मोबाइल-9835095988
सिन्हा फिजियोथेरापी क्लिनिक
लक्ष्मी नर्सिंग होम कम्प्लेक्स, पश्चिमी बोरिंग केनाल रोड
राजापुर के निकट
डॉ॰ परमानन्द प्र॰ सिंह
BBC. DDT (PAT), SG R. P. (Cal)

नयी सदी में महज नारे उछलते रहे

❑ सुशीला झा

गुजर गया नयी सदी का एक वर्ष! आधी आबादी को दे नहीं पाया तनिक हर्ष!! दो हजार एक को नारी सशक्तिकरण वर्ष के रूप में मनाया गया, नारे-उछलते रहे-नारी, न्याय और नैतिकता की बात होती रही। नारी शक्ति की अग्नि परीक्षा लेते रहे पुरुष पुंगव! यूं तो नयी सदी में बहुत कुछ बदला। जीवन की गति तीव्र से तीव्रतर होती गयी। ज्ञान-विज्ञान के साथ-साथ महत्वाकांक्षाएँ विस्तार पा रही हैं, लेकिन महिला की स्थिति बेहतर नहीं हुई। आज भी परिवार में पुरुष वर्चस्व और नियंत्रण कायम है। समाज में आधी आबादी को आज भी जैविक इकायी के रूप में देखने समझने की प्रवृत्ति नहीं पनपी। भोग्या के रूप में देखने-समझने की प्रवृत्ति ही बढ़ी, जिससे समाज में लगातार बढ़ती नैतिकता, अत्याचार का ग्राफ बढ़ता जा रहा है। महिलाओं की सुरक्षा पर मंडराते खतरों में निरन्तर वृद्धि से महिलाएँ रोषपूर्ण वातावरण में साँस ले रही हैं। सबके सामने सुरक्षा का प्रश्न चिन्ह खड़ा है। असुरक्षा का सवाल बाहर ही नहीं घर में भी महिलाएँ सुरक्षित नहीं हैं। पारिवारिक हिंसा और बलात्कार की घटनाएँ आम बात बनती जा रही हैं। गुंगी, बहरी, अबोध बच्ची से लेकर प्रौढ़ महिलाएँ तक अपहरण और बलात्कार की शिकार हो रही हैं, कुकर्म केवल बाहरी अपरिचित व्यक्तियों द्वारा ही नहीं किये जाते हैं।

दरअसल जन्म से ही लड़कों को जन्मघुटी में घोलकर यह पीला दी जाती है कि चूंकि वह लड़का है इसलिए उसका दर्जा लड़की से ऊँचा है। सभी रोक-टोक नियम कायदे औरतों के लिए हैं, मर्दो के लिए नहीं। स्वामी, शौहर, पति ये शब्द स्वयं ऊँच-नीच का सम्बन्ध दर्शाते हैं। रिश्तों की परिभाषा में ही असमानता निहित है। औरत उत्पादन करने वाला वर्ग है तो पुरुष फायदा उठाने वाला वर्ग। चौबिसों घंटे चलने वाला उबाऊ काम करने वाली महिला को पति पर निर्भर व्यक्ति के रूप में देखा जाता है। जो बाहर जाकर काम करती है उस पर भी मर्द ही नियंत्रण रखते हैं। पुरुष चाहे पढ़ा- लिखा तथाकथित-प्रगतिशील हो या अनपढ़ गंवार महिलाओं को मात्र परम्परागत भूमिका में देखने का अभ्यस्त हो चुका है इसलिए जरा सा भी परिवर्तन बर्दास्त नहीं कर पाता। अब उच्च शिक्षा से महिलाओं में आत्मविश्वास बढ़ा है और वह सार्थक इकायी के रूप में अपने को प्रस्तुत कर रही है। पुरानी परम्पराओं, रूढ़ियों, रीति-रिवाजों और अंधविश्वास के प्रति उसका दृष्टिकोण काफी बदल गया है। हर पहलु को परखने की क्षमता है अत: बने बनाये राह पर ही नहीं चलती बल्कि नये रास्ते ईजाद कर रही है। तो यह कैसे बर्दास्त करे कि जो अतीत में औरतों के साथ होता रहा वही आज भी हो। आज जहां कहीं भी अवसर मिलता पुरुषों से बीस साबित होती उन्नीस नहीं। समय के बदलाव के साथ पारिवारिक-सामाजिक व्यवस्थाओं जो बदलाव के साथ पारिवारिक सामाजिक व्यवस्था में जो बदलाव होने चाहिए थे नहीं हुए- पुरुष दृष्टिकोण में पिता, पति, पुत्र के मन में समानता का भाव नहीं जगा। बात-व्यवहार में बदलाव नहीं हुआ। महिलाएँ तो घर-बाहर दोनों कुशलतापूर्वक संभाल ली। गृहसंचालन के साथ-साथ परिवार की आर्थिक सहायता व देश के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे रही है। जीवन के प्रति सोचने विचारने में काफी परिवर्तन आया है। वह केवल पारिवारिक दायित्व ही वहन नहीं करती बल्कि पुरुषों के कंधों से कंधा मिलाकर विकास की भागीरथी में सहभागी भी है। अत: वह चाहती है पति उसका मित्र हो उसे जाने समझे और सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाये। महिलाओं के प्रति हिंसा मानवाधिकार के सिद्धान्तों के प्रतिकूल है। महिला हिंसा की समाप्ति किसी संगठन या कानून से संभव नहीं अपने-अपने घर से हिंसा समाप्त करने का संकल्प लेना होगा। महिलाओं के प्रति हिंसा को बढ़ावा देनेवाली प्रवृति को बदलने के लिए लोकशक्ति और रणनीति का उपयोग करना होगा। वर्तमान अवनति और शोचनीय अवस्था का मूल कारण है भेदभाव, परस्पर सद्भाव, सहयोग व समझ से ही समतावादी शोषण रहित समाज का निर्माण संभव है। महिलाओं को नीचा स्तर कायम रखनेवाली रीति-नीति परम्पराओं में आमूल परिवर्तन समय की सबसे बड़ी माँग है। जब तक सामाजिक संरचना में बदलाव नहीं होगा, महिलाओं की स्थिति नहीं सुधरेगी। पुरुष नकारात्मक सामंती सोच के कारण ही महिलाओं की कार्यकुशलता से बौखलाकर उस पर अत्याचार और अपमान कर अपनी कुंठा शान्त करने का प्रयास करता है। निर्मम निरंकुश पुरुषवादी व्यवस्था के कारण सड़क पर बस में, ट्रेन में, स्कूल-कॉलेज में, ऑफिस में नारी का शोषण उत्पीड़न जारी है। हर साल महिलाओं के प्रति होनेवाले अपराध 22 से 24 प्रतिशत बढ़ रहे हैं। कितने शर्म की बात है कि केवल बिहार में 375 बहुएँ जला दी गईं। प्रत्येक 45 मिनट पर एक महिला के साथ बलात्कार और प्रत्येक 41 मिनट पर एक महिला का अपहरण होता है। यौन उत्पीड़न एवं भ्रूण हत्या, वधू हत्या में दिनोदिन बढ़ोत्तरी हो रही है। जबकि सभी घटनाएँ रिकार्ड में नहीं आ पाती। नारी सुलभ लज्जा व पुलिस और अदालती कार्यवाही भी उलझने अश्लील ढंग से पूछताछ महिलाओं को शिकायत दर्ज करवाने से रोक देती है। अनुमान है कि वास्तविक घटनाएँ आंकड़ों से कई गुना अधिक होगी। दु:ख तो इस बात का है कि दर्ज मामलों की भी सुनवायी नहीं होती। 80 प्रतिशत मामले लिखित ही रहते या पैरवी पहुँच के बल पर अपराधी ससम्मान बरी हो जाता। हैरतअंगेज बात तो यह है कि न्याय नपुंसक है। 80 प्रतिशत जज महिलाओं के प्रति हो रहे अत्याचार पर कथित सबूत के अभाव में विश्वास ही नहीं करते। 48 प्रतिशत का कहना है वह हिंसा नहीं। क्या ये नैतिकता के सुरक्षा प्रहरी पारिवारिक हिंसा को बढ़ावा नहीं दे रहे? लेकिन याद रहे न्यायमूर्ति का

निर्णय अन्तिम नहीं है। अन्तिम फैसला तो समाज स्वयं करेगा।

समाज, संसद, सत्ता, शिक्षा, सम्पत्ति और कानून व्यवस्था सब पर पुरुषों का सर्वाधिकार सुरक्षित है। नियम, कायदे कानून, परम्परा, नैतिकता आदर्श व सिद्धान्त सब पुरुषों ने ही बनाये और वे ही समय-समय पर परिभाषित और परिवर्तित करते रहे अपने हितों की रक्षा करते हुए। औरतों को आदर की आढ़ में अपमानित ही किया गया है। विवाह के बाद परिवार में महिलाओं की स्थिति आज भी गुलाम से बेहतर नहीं है। यूँ समान अधिकार की बातें बहुत होती हैं लेकिन व्यवहारिक तौर पर समानता शब्द सही अर्थ से महिलाएँ अपरिचित हैं।

नारी सशक्तिकरण वर्ष भी बीत गया। क्या हालात बेहतर हुए? प्रधान मंत्री कार्यालय में महिलाओं को लाभ पहुँचाने वाली सत्ताइस योजनाएँ तैयार की गयी। अलग-अलग मंत्रालयों के अन्तर्गत पड़नेवाली इन योजनाओं के नाम पर ढेर सारा पैसा खर्च किया गया। महिलाओं के अधिकारों की रक्षा करने वाले कानून बनाये गये। सभी योजनाएँ बेमानी ही साबित हुए। पर्सपेक्टिव प्लान फार वुमेन 1988 से 2000 तक के लिए था। 2001 महिला सशक्तिकरण वर्ष के रूप में बदलाव आया? अब सन् 2002 आ गया है। क्या सरकार ने कोई ऐसी समिति बनायी है जो यह समीक्षा कर सके कि महिलाओं के जीवन में उन योजनाओं की क्या भूमिका रही?

अब ऐसा महसूस होता है महिलाएँ अगर कुरीति-नीति, सांस्कृतिक फासीवाद, बाजारवाद आदि का घर-बाहर विरोध नहीं करे तो अर्जित अस्तित्व से भी हाथ धोना पड़ेगा।

महिलाओं का अस्तित्व उजागर हुआ मात्र वैदिक युग में। वैदिक युग में समाज न वर्णों में बँटा था, न वर्गो में। नर-नारी के मानसिक व शारीरिक श्रम में अन्तर नहीं था। उत्पादन के साधनों और फल के वितरण पर समान अधिकार था। पुरुषों की तरह महिलाएँ भी स्वतंत्र थी। सामाजिक व्यवस्था मातृसत्तात्मक थी। जब सामन्तवाद शुरू हुआ तो समाज धीरे-धीरे पतनोन्मुख होने लगा। सम्पत्ति के प्रादुर्भाव ने पुरुषात्मक समाज की नींव डाली। स्थिति बदलती गयी। महिलाओं पर प्रतिबंध लगाये जाने लगे। पर्दा प्रथा की शुरूआत हुई। महिलाओं की शिक्षा-दीक्षा प्रभावित हुई। प्रगति का मूलाधार शिक्षा है। महिलाएँ चाहरदीवारी में कैद हुई और पिछड़ती गयी। यहीं से बालिका विरोधी भावनाएँ पनपी जो कालान्तर में उग्र से उग्रतर होती रही। कोख से कब्र तक शोषण का सिलसिला शुरू हुआ और कानून मूक दर्शक की भांति सब देखता रहा है। सबसे प्रमुख कारण दहेज प्रथा है। प्रारम्भ में बेटी-दामाद को विदा करते वक्त स्नेहवश उपहार दिया जाता था, जो नयी गृहस्थी बसाने में सहायक होती थी। आगे जाकर यही उपहार दहेज के रूप में वर पक्ष का अधिकार बन गया। यही दहेज सुरसा के मुंह की भाँति अधिक से अधिक देने पर भी कभी संतुष्ट नहीं होता। वधू को तरह-तरह की यातनाएँ भोगनी पड़ती है। तलाक देना या वधू की हत्या करना दहेज दस्यु के लिए आम बात है।

पूंजीवादी व्यवस्था ने नया आर्थिक आधार अर्थात नयी परिस्थितियाँ पैदा की। इसने महिलाओं को घर से निकालकर आधुनिक उद्योग के उत्पादन क्रिया में शामिल तो किया, एक रिश्ता बनाया वह महिला पुरुष का बराबरी का नहीं। पूंजीवाद के चकाचौंध रोशनी मे सौन्दर्य-प्रतियोगिताओं का आयोजन कर औरत को मात्र उपभोग की वस्तु बना दिया। नारी शरीर को केन्द्र में रखकर धरती का चप्पा-चप्पा विकृत विज्ञापनों से ढंक दिया। सौन्दर्य-प्रसाधनों से लेकर रसोई के समान पोशाक, जेवर ही नहीं पुरुषों के उपयोग की वस्तुओं को बेचने के लिए भी नारी शरीर व मानस के टुकड़े-टुकड़े कर बिक्री बढ़ाने का नया तरीका ढूंढ़ा गया। अत: अब जरूरी है कि अपनी अस्मिता के लिए प्रगति के साथ साथ पितृसत्तात्मक ढाँचे में आमूल चूल बदलाव लाना होना। बदलाव के बाद ही समतावादी शोषण रहित समाज में नारी सही अर्थ में नर के बराबर प्रथम दर्जे के नागरिक बनेंगी। नारी स्वतंत्रता का पक्षधर होना पुरुष विरोधी होना नहीं है। कहते हैं इतिहास नारी स्वतंत्रता एवं विकास के लिए हमारे महापुरुषों ने आजीवन संघर्ष किया। महिला विकास के हर प्रयास से समाज व राष्ट्र का ही विकास होगा। अत: पारिवारिक, सामाजिक संरचना में परिवर्तन को टालना खतरनाक साबित होगा। महिला संस्कारों की समीक्षा होनी चाहिए। सामाजिक आर्थिक, राजनैतिक समान न्याय की नींव डाले बिना शोषण रहित नव-निर्माण असंभव है। जनसंख्या नियंत्रण के लिए परिवार नियोजन पर जोर दिया जाता है और वंश वृद्धि के लिए पुत्र जन्म पर। इसका नतीजा सामने है। 2001 की जनगणना के अनुसार तमाम राज्यों में 0 से 6 वर्ष तक के आयु के बच्चों को लड़कों के अनुपात में लड़कियों की तायदाद में भारी गिरावट आ चुकी है। लगातार निजी चिकित्सालयों में अवैध रूप से कन्याभ्रूण हत्या करवाकर औरत जात को ही खत्म करा रहे हैं लोग।

कैसी शर्मनाक विडम्बना है कि बहुघोषित महिला सशक्तिकरण के समापन के समय महिलाओं के समर्थन में नारेबाजी और सेमिनारों का सिलसिला जारी रहा लेकिन बालिका शिशु की भ्रूणहत्या रोकने के आदेश धरे के धरे रह गये। शायद यह सब मात्र चुनावी हथकंडे हैं।

औरतों के, बच्चों के, दलितों के उत्थान सशक्तिकरण और मानवाधिकार की बाबत सरकारी योजनाएँ गढ़ी जाती, पोस्टर छपते हैं। लेकिन व्यवहार के ठोस धरातल पर तमाम कार्यकलाप मात्र क्षुद्र स्वार्थ साबित होते हैं। अन्यथा आधी आबादी की समस्या को नारी की कोख पर नियंत्रण के परिप्रेक्ष्य में देखने की बजाए नारी के लोकतांत्रिक हकों की बहाली के परिप्रेक्ष्य में देखते और कोशिश करते कि शिक्षा तथा स्वास्थ्य जैसे बुनियादी हकों से वे वन्चित न रहें। स्वस्थ शिक्षित नारी स्वयं तय करती कि कब और कितने सन्तानों को जन्म देना है। नीति निर्माता कभी आधी आबादी के लिए चिन्तित होते तो आजादी की आधी सदी के बाद भी महिलाओं की मातृ मृत्युदर में कमी नहीं आती? कानून के ठेकेदार सत्तावान पुरुष, सभ्यता संस्कृति के प्रहरी पुरुष पुंगव पुरुष सत्ता को जांचे, परखें क्या वर्तमान अवनति और शोचनीय अवस्था का मुख्य कारण भेदभाव नहीं है?

❑ संजय गांधी नगर,
रोड न०- 9 हनुमाननगर, पटना

गाँव में संगोष्ठी

सत्ता-विकेन्द्रीकरण महज एक नारा बनकर रह गया

अपने अधिकारों से आज भी वंचित हैं पंचायत

❑ मोहन कुमार

राष्ट्रीय विचार मंच, बिहार की बाढ़ अनुमण्डल ग्रामीण शाखा के तत्त्वावधान में विगत 5 मार्च को टाल क्षेत्र के चौधराईन चक गांव में पंचायती राज से जुड़े सवालों को लेकर **सत्ता के गलियारे में भटकता ग्रामीण लोकतन्त्र** विषय पर एक संगोष्ठी आयोजित की गयी जिसका उद्घाटन बिहार के पूर्व राज्य निर्वाचन आयुक्त जिया लाल आर्य ने किया। अपने उद्घाटन भाषण में उन्होंने कहा कि यह बात ठीक है कि बिहार पंचायती राज कानून के तहत पंचायतों को उनके वास्तविक अधिकारों से वंचित रखा जा रहा है किन्तु कानून की अवहेलना अधिक समय तक नहीं की जा सकती। पंचायती राज संस्थाओं के प्रतिनिधियों को बड़ी ईमानदारी और निष्ठा से पेयजल, शिक्षा तथा स्वास्थ्य जैसी गांवों की बुनियादी जरूरतों को पूरा करने में लग जाना होगा।

बी०एन०कॉलेज, पटना के पूर्व हिन्दी विभागाध्यक्ष प्रो० रामबुझावन सिंह ने संगोष्ठी की अध्यक्षता की। उन्होंने अपनी व्यंग्यात्मक शैली में ग्रामीण समाज की मौजूदा विसंगतियों, विद्रूपताओं तथा दिन-व-दिन बिगड़ती स्थितियों का चित्रण कर ग्रामवासियों के जनमानस को झकरोरा।

संगोष्ठी के मुख्य अतिथि पद से निर्धारित विषय पर एक आलेख प्रस्तुत करते हुए **विचार दृष्टि** के सम्पादक सिद्धेश्वर ने कहा कि बिहार में नवनिर्वाचित पंचायती राज के प्रतिनिधियों को उनके वास्तविक हक देने में सरकार तथा अधिकारी अभी भी कतरा रहे हैं और पंचायती राज कानून के तहत ग्रामीण विकास से सम्बन्धित 29 विभागों के कार्यों को जमीन पर उतारने में कोताही बरती जा रही है। प्रशासनिक अधिकारियों तथा विधायिका के सदस्यों को भय है कि कहीं उनकी सत्ता न छीन जाए। इसके पूर्व उन्होंने मंच के उद्येश्यों व उन्हें मूर्त रूप दिए जा रहे कार्यकलापों पर विस्तार से प्रकाश डाला।

प्रारम्भ में मंच की इस ग्रामीण शाखा के संयोजक रामानुग्रह प्रसाद ने उपस्थित अतिथियों का स्वागत करते हुए ग्रामीण समस्याओं की आँकड़ों सहित चर्चा की तथा उन्होंने इस बात पर चिन्ता जाहिर की कि इन समस्याओं के समाधान की दिशा में प्रशासन तो सुस्त है ही, हमारे जनप्रतिनिधि भी कम उदासीन नहीं हैं।

संगोष्ठी के विषय को प्रस्तुत करते हुए जिला परिषद् के सदस्य मनोज कुमार ने कहा कि एक तो काफी हिला-हवाला तथा सरकार की टालमटोल नीति के कारण 23 वर्षों के बाद बिहार में पंचायतों का चुनाव हुआ और आज छह माह से अधिक की अवधि की समाप्ति के बाद भी सत्ता का विकेन्द्रीकरण महज एक नारा बनकर रह गया है। उन्होंने मंच के अधिकारियों से अनुरोध किया कि इस तरह का एक आयोजन क्षेत्र के बेलछी प्रखण्ड में किया जाए। मंच के राष्ट्रीय महासचिव सिद्धेश्वर ने अध्यक्ष की सहमति से अप्रैल के दो या तीन तारीख को आयोजन करने का निर्णय लेकर उन्हें सूचित किया और इसे सफल बनाने की दिशा में पहल करने की बात कही।

संगोष्ठी के विशिष्ठ अतिथि पटना ट्रेनिंग कॉलेज के प्राध्यापक तथा लेखक डॉ० राधाकृष्ण सिंह ने अपने सम्बोधन में पंचायती राज के प्रतिनिधियों तथा ग्रामवासियों को कानून के तहत प्रदत अधिकारों को हासिल करने के लिए न केवल चौकस रहने की सलाह दी बल्कि इसके लिए आन्दोलन पर उतरने को तैयार रहने की बात कही। इसके साथ ही तेजी से बिगड़ते गांव के माहौल को देखते हुए ग्रामवासियों से सद्भाव एवं भाइचारे का वातावरण बनाने की अपील की।

इस अवसर पर जिला परिषद के सदस्य शिवजी सिंह ने अपने कर्तव्य-निर्वहन के दौरान उत्पन्न कठिनाइयों की चर्चा करते हुए जहां चौधराईनचक गांव के विकास के लिए अपनी निधि से 62 हजार रुपये देने की घोषणा की वहीं एकडंगा पंचायत के मुखिया देव कुमार साव ने इस गांव में एक चापाकल मुहैया कराने का वादा किया। बराह पंचायत के कर्मठ एवं निष्ठावान युवा मुखिया अनन्त प्रसाद उर्फ नन्दे जी ने अपने पंचायत क्षेत्र में उनके द्वारा किए जा रहे कार्यों की चर्चा करते हुए गांव के अधिकांश विवादों को स्वयं निबटाने की बात कही। अन्दौली के मुखिया अरविन्द प्रसाद तथा पूर्व शिक्षक एवं सामाजिक कार्यकर्त्ता मुशहरी प्रसाद ने भी संगोष्ठी के विषय पर अपने विचार व्यक्त करते हुए अनेक सुझाव दिए तथा डॉ० बालेश्वर प्रसाद भाव-बिह्वल हो संगोष्ठी की सफलता पर अपनी प्रसन्नता जाहिर की। संगोष्ठी को गांव की सरज़मी पर उतारने में अहम भूमिका निभानेवाले मंच की ग्रामीण शाखा के सहसंयोजक मोहन कुमार ने संगोष्ठी में पधारे अतिथियों तथा पंचायत प्रतिनिधियों के प्रति आभार व्यक्त करते हुए इस संगोष्ठी की पृष्ठभूमि को विस्तार से रखा तथा मंच के उद्येश्यों को जन-जन तक पहुंचाने के लिए गांव तथा क्षेत्र के सभी लोगों के सहयोग की अपेक्षा की। संगोष्ठी के अन्त में लोकसभाध्यक्ष जी०एम०सी० बालयोगी की असामयिक मृत्यु पर दो मिनट का मौन रख उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की गयी।

ग्रामः चौधराइनचक, बाढ़ से।

अब फसलों को ऊँगलियों पर नचाया जा सकता है

जेनेटिक इंजीनियरिंग के सहारे अब फसलों को ऊँगलियों पर नचाया जा सकता है यानी भारत भी अब दालों में प्रोटीन की मनचाही मात्रा भर सकता है और धान में उन खनिजों के गुण बढ़ा सकता है जिनके बाद शायद कुछ दवाएं खाने की जरूरत ही न पड़े। भारतीय कृषि अनुसन्धान परिषद (आईसीएआर) ने इस दिशा में पहल करने हेतु जेनेटिक इंजीनियरिंग के क्षेत्र में शोध के लिए कमर कस ली है। जरुरत केवल इस बात की है कि इस शोध के लिए सरकार कितना पैसा मुहैया कराती है। इस सन्दर्भ में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के उपमहानिदेशक डॉ० मंगला राय ने विशेष बातचित में बताया कि "हम धान की जीन संरचना तो सम्भवत: और दो तीन सालों में जान ही जाएंगे। लेकिन अगर अरहर व चने की दाल सहित अन्य खाद्यान्नों की भी जीन संरचना व उन पर अन्य जीनों के प्रभाव को जानना है तो योजना आयोग को अनुसन्धान के लिए और धन मुहैया करवाना होगा।

कमजोर वर्गों के हितैषी और उदीयमान नेता चल बसा

लोकसभाध्यक्ष बालयोगी का असामयिक निधन

लोकतन्त्र के प्रहरी और लोकसभा के सबसे कम उम्र के अध्यक्ष जीएमसी बालयोगी का पिछले 3 मार्च को अपने क्षेत्र आमलापुरम की यात्रा पर जाते हेलीकॉप्टर की दुर्घटना में मौत हो गयी। बालयोगी ने बतौर लोकसभाध्यक्ष, थोड़े ही समय में अपनी सूझबूझ, कर्मठता और दूरदर्शिता की वजह से 12वीं एवं 13वीं लोक-सभा का जिस कुशलता से संचालन कर लोकप्रियता हासिल की, उसके लिए वे चिर स्मरणीय रहेंगे। उन्होंने अपनी प्रतिभा के बल पर संसदीय प्रबन्धन में उच्च मापदण्ड स्थापित कर लोकसभा के संचालन में अपने अद्भुत व्यक्तित्व का परिचय दिया। सदन में जनहित के ज्वलंत मुद्दों को सुलझाने में उन्हें महारथ हासिल थी।

पिछले 8 फरवरी को राष्ट्रमंडल संसदीय संघ की बिहार शाखा के सम्मेलन को सम्बोधित कर बिहार के जनमानस में उन्होंने एक अमिट छाप छोड़ी थी और दोबारा बिहार जाने का वादा किया था जो रब को मंजूर नहीं हुआ। कमजोर वर्गों के हितैषी और उदीयमान सांसद बालयोगी का, ऐसे समय में जब संसद के समक्ष जटिल समस्याएं हैं, सहसा उठ जाना देश तथा संसद के लिए अपूरणीय क्षति है।

लोकसभा के इतिहास में 13 वीं लोकसभा का यह तीसरा काला रविवार था, जब इसके अध्यक्ष जीएमसी बालयोगी चिर निद्रा में लीन हो गए। इससे पूर्व कांग्रेस के नेता राजेश पायलट व माधवराव सिंधिया की रविवार को ही क्रमशः सड़क एवं विमान दुर्घटना में मौत हो चुकी है। ये तीनों ही नेता अपने जीवन के पाँचवें दशक में ही काल के गाल में समा गए।

राष्ट्रीय विचार मंच ने पिछले 4 मार्च को एक शोक-प्रस्ताव पारित कर स्व० बालयोगी को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनकी शाश्वत आत्मा की चिर शांति तथा शोक-संतप्त परिवार को इस दारुण व्यथा को सहनशक्ति प्रदान करने के लिए दो मिनट का मौन रख जगन्नियंता से प्रार्थना की गयी।

मथुरा बाबूः सौम्यता जिनके रग-रग में बसी थी

विचार कार्यालय, पटना

विचार दृष्टि के सदस्य तथा अपने सहकर्मी व पड़ोसी **मथुरा प्र० सिन्हा** से पिछले 35 वर्षों के अविस्मरणीय क्षणों की याद कर हमारा भाव-विह्वल होना स्वाभाविक है। कारण कि भारतीय लेखा एवं लेखा परीक्षा विभाग के पटना कार्यालय में वे हमारे कदम दर कदम पर साथी थे। पत्रिका के काम से मैं दिल्ली में था कि इधर पिछले 6 फरवरी को हृदयगति रूक जाने के कारण 68 वर्ष की उम्र में वे हमें छोड़ चल बसे।

मृत्यु न केवल एक दर्दनाक घटना है बल्कि हमारे भीतर की बहुत सारी चीजों का मर्त्य एहसास भी है। किन्तु मात्र यादें ही बच जाती हैं। मथुरा बाबू की न जाने कितनी ही स्मृतियाँ एक साथ मेरे मानस-पटल पर उभरकर मन को उद्वेलित कर रही हैं। उनके चेहरे पर सदैव सहज भाव होता, तो सौम्यता उनकी रग-रग में बसी थी। उनका खुलापन और उनकी आत्मीयता ही उनके व्यक्तित्व की विशेषता थी, जिसके हर कोई कायल थे। उनकी साफगोई अपने रंग और ढंग की। इनके भीतर छिपा एक कोमल इंसान।

1934 में भोजपुर (बिहार) जिले के अख्तियारपुर गांव में जनमें मथुरा बाबू अपनी पत्नी के साथ तीन सुपुत्रों एवं सैकड़ों शुभेच्छुओं को अपने पीछे छोड़ गए। मंच तथा **विचार दृष्टि** परिवार की ओर से मैं उनकी स्मृति को नमन कर उन्हें हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।

❑ **सिद्धेश्वर**

मैथिली व हिन्दी के तपस्वी सुमन का निधन

मैथिली व हिन्दी साहित्य के तपस्वी 93 वर्षीय आचार्य सुरेन्द्र झा सुमन का 5 मार्च को दरभंगा में निधन हो गया। वे मैथिली आन्दोलन के सबल स्तम्भ थे। कहा तो यहां तक जाता है कि कवि कोकिल विद्यापति के बाद मैथिली साहित्य की विकास यात्रा में सर्वाधिक महत्वपूर्ण योगदानकर्त्ता के रूप में आचार्य सुमन जी का नाम आता है।

अपने सुदीर्घ साहित्य साधना अवधि में आचार्य सुमन ने करीब 4 दर्जन पुस्तकों की रचना की जिनमें काव्य, कथा, उपन्यास, आलोचना और अनुवाद विधा की पुस्तकें शामिल हैं। सी०एम० कॉलेज दरभंगा के मैथिली विभाग में व्याख्याता के पद से अपने जीवन की शुरूआत कर सुमन जी ने अपनी सक्रियता से राजनीति में भी काफी प्रतिष्ठा पाई। दरभंगा संसदीय क्षेत्र का भी संसद में उन्होंने प्रतिनिधित्व किया लेकिन राजनीति में भी वे नैतिकता और मूल्यों की राजनीति के लिए चर्चित रहे। उसके अवमूल्यन प्रारम्भ होने पर उन्होंने अपने को राजनीति से किनारा कर लिया।

रमा प्रसादः जिसके नृत्य से सपने अपने हुए

कवि **पाँश** ने मौजूदा दौर में सपनों के मरते जाने पर चिन्ता जाहिर की है। वैसे सच कहा जाए तो यह दौर ही अकाल मृत्यु का है। जबतक हम इन्तजार करते हैं कली के खिलने का, वह मुर्झा जाती है। उसका खिलना और फलना बस एक सपना भर रह जाता है। किन्तु ऐसे समय में भी रमा प्रसाद चट्टोपाध्याय एक ऐसा व्यक्तित्व सामने उभरकर आता है, जिसने नृत्य के बदौलत अपने सपने को अपना बनाया और जिसके जीवन रूपी खेतों में उमड़-घुमड़कर बादल आए तथा उसकी उम्मीदों की फसल लहलहाने लगी।

वैसे कहने को तो कहा जाता है कि हीरो के घर में हीरो तथा जीरो के घरमें जीरो पैदा होता है पर चट्टोपाध्याय ने इसे चुनौती स्वीकार कर अपने सपने को साकार किया। कोलकाता स्थित पूर्व रेलवे के मुख्यालय में पदस्थापित चट्टोपाध्याय ने जयपुर घराने की सुष्मिता मिश्रा के निर्देशन में कत्थक नृत्य का प्रारम्भिक प्रशिक्षण प्राप्त कर पिछले दस वर्षों से नृत्य का अभ्यास कर यह सिद्ध किया है कि प्रतिभाएं गरीबी में छिपी होती है। जरूरत केवल इस बात की है कि उसे पहचाना जाए। चट्टोपाध्याय ने अपने अन्दर छिपे **टैलेन्ट** को पहचाना और नियमित रियाज के बदौलत नृत्य के क्षेत्र में अपनी एक अलग पहचान बनाई।

सुप्रसिद्ध कत्थक कलाकार विरजू महाराज के शिष्य चट्टोपाध्याय लखनऊ घराने के पं० विजय शंकर के नृत्य से भी अत्यधिक प्रभावित रहे हैं। तमाम असुविधाओं और रूकावटों को अपने पदचाप से अहिस्ता-अहिस्ता दूर करते हुए एकाग्रचित्त हो अपने **फन** को सजाने-संवारने में वे लगे हैं। आखिर तभी तो आपने प्रयाग संगीत समिति, इलाहाबाद की ओर से आयोजित अ० भा० नृत्य-संगीत प्रतियोगिता में स्वर्ण-पदक प्राप्त किया। मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा आयोजित **नृत्य-भूषण** की परीक्षा में प्रथम स्थान पाया। दूरदर्शन केन्द्र, कोलकाता के आप 'ए' स्तरीय कलाकार तो हैं ही, देश-विदेश में भी अपनी कला का प्रदर्शन किया है।

रमा प्रसाद चट्टोपाध्याय की प्रतिभा की चर्चा के वक्त हमें निम्न पंक्तियाँ याद आई जो उनके जीवन की उपलब्धियों को रेखांकित करती हैं-

सपने कभी अपने नहीं होते
सपने टूटने की पीड़ा से भी अंजान नहीं हूँ मैं
फिर भी न जाने क्यों सपने देखना मेरी फितरत बन गयी है।

प्रस्तुतिः राजकिशोर राजन
सचिव, राष्ट्रीय विचार मंच
1/ए, राजेन्द्र एवेन्यू, प्रथम लेन,
उत्तरपाड़ा-712258, प० बंगाल

मंचः एक परिचय

राष्ट्रीय विचार मंच वैचारिक अभिव्यक्ति का एक ऐसा सार्थक एवं सशक्त मंच है जिसके द्वारा सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक ताने-बाने से लेकर साहित्यिक सांस्कृतिक विषयों पर विचार गोष्ठी, परिसंवाद, परिचर्चा एवं काव्य-संन्ध्या का आयोजन कर ज्वलंत समस्याओं को निर्भीकता से विश्लेषण किया जाता है। इस प्रकार विगत वर्षों से राजनीतिक एवं सार्वजनिक जीवन में बढ़ते भ्रष्टाचार, सामाजिक विभाजन, अपसंस्कृति के शोर-शराबे तथा अनेक परिवर्तनों को मंच ने रेखांकित किया है तथा आम जन-मानस को कुरेदकर उनमें राष्ट्रीय चेतना जागृत करने का प्रयास किया है।

सामाजिक जीवन में और विशेषकर उपेक्षित वर्गो को सक्रिय एवं गतिशील बनाए रखने वाले कार्यक्रमों को यह मंच बढ़ावा देता है। राष्ट्रीय एकता की ताकतों को मजबूत करने हेतु यह मंच साम्प्रदायिकता, जातीयता, भाषायी एवं क्षेत्रीयता आदि से संबंध रखने वाले तत्वों का विरोध करता है। इसी को मद्देनजर रखते हुए मंच के वार्षिक कार्यक्रमों में देश के उन साहित्यकारों एवं प्रतिभाशाली रचनाकारों को सम्मानित करना शामिल है जिनकी रचनाओं में राष्ट्रीय एकीकरण, सामाजिक उन्नयन का उद्घोष उपलब्ध हो। इस प्रकार यह गैर राजनीतिक स्वैच्छिक संस्था अपने दायित्व को बखुबी समझकर राष्ट्र तथा समाज के समक्ष खड़ी चुनौतियों का मुकाबला करने का प्रयास कर रहा है। इसलिए मंच अब सिर्फ एक संस्था ही नहीं वरन् विचार-मंथन और आन्दोलन है, गतिहीन यथास्थिति के वर्चस्व के विरूद्ध एक दृष्टि भी है।

मंच एक खुला मंच है जिसे अपने पर विश्वास है और जिसके कार्यक्रमों को सराहनेवाले सभी तबकों से आते हैं। इसलिए बहुत सचेत रूप से इसने अपने लिए साहित्य, संस्कृति, समाज एवं राजनीति का ही मैदान चुना है। मंच रचना और विचार को महत्व देने वाले प्रबुद्धजनों का एक विशाल परिवार है जिसके सदस्य देश के हर भाग में हैं। मंच के साधनों का अगर कोई एक सबसे बड़ा स्रोत है तो वह है उसके साथ जुड़े सर्जक, कलाकार, लेखक, प्रशासनिक अधिकारी व कर्मचारी, चिकित्सक, अभियन्ता, प्राध्यापक, किसान एवं मजदूर जिनका सहयोग हमेशा इसके कार्यक्रमों को कार्यान्वित करने में मिलता है। मंच को यह विश्वास है कि बगैर स्वस्थ समाज के एक समद्ध राष्ट्र की कल्पना नहीं कि जा सकती। इस दृष्टि से मंच एक स्वस्थ समाज के निर्माण की दशा में भी पर्यत्नशील है।

जब देश में अधिकतर आदमी गलत काम कर रहा हो, प्रवृत्ति सुविधाभोगी हो गयी हो, लोकतंत्र की ओट में भीड़तंत्र का बोलवाला हो, जनप्रतिनिधि व प्रशासनिक अधिकारी अपने कर्तव्य भूलकर सिर से पांव तक आकंठ भ्रष्टाचार में डूबे हों तथा जनता किंकर्तव्यविमूढ़ हो गयी हो, तब खूनी क्रांति नहीं बल्कि वैचारिक क्रांति जरूरी हो जाती है और यह वैचारिक क्रांति लाने की क्षमता प्रबुद्धजनों में है। पर वे मौजूदा हालातों को नियति मानकर हाथ पर हाथ धरे तटस्थ हैं। **राष्ट्रीय विचार मंच** ने इसी के मद्देनजर पिछले तीन वर्षों में पूरे भारत खासकर दक्षिण भारत के चारों राज्यों तथा पश्चिम के महाराष्ट्र और गुजरात एवं उड़ीसा और प०बंगाल तथा राष्ट्रीय राजधानी में अपनी शाखाऐं स्थापित कर अपनी सक्रियता का परिचय दिया है और उसके माध्यम से उन राज्यों की राजधानियों में जा-जाकर न केवल प्रबुद्धजनों की सूखे काठ में अग्नि की तरह सुप्त चेतना को विचारों के माध्यम से जागृत करने का काम किया है बल्कि समाज व देश की ज्वलन्त समस्याओं का बड़ी निर्भीकता से विश्लेषण किया है।

जहां तक मंच के मुख-पत्र **विचार दृष्टि** के उद्देश्यों का प्रश्न है राष्ट्रीय चेतना की यह वैचारिक पत्रिका ने जीते-जागते जन की गरीबी, गैर-बराबरी, शोषण और संघर्ष, दुःख-दर्द और दमन, बढ़ती आबादी, आतंकवाद, जातिवाद और जीवन मूल्यों-मर्यादाओं के अवमूल्यन के खिलाफ न केवल आम आदमी को वाणी दी है बल्कि समाज के हाशिए पर पड़े समुदाय तथा जिनकी झोपड़ियों में आजादी के बाद से ही अब तक विकास की किरणें नहीं जा पाई हैं, उनमें चेतना जागृत करने का प्रयास कर रही है। साथ ही समाज की रूढ़ियों व अंधविश्वासों पर हमला करने तथा समाज-विरोधी तत्त्वों एवं देशद्रोही ताकतों के खिलाफ भी आवाज उठाई है। मंच तथा विचार दृष्टि ने इधर एक दो वर्षों से अपने कार्यकलापों को ग्रामीण क्षेत्रों में भी ले जाने का प्रयास किया है क्योंकि एक ओर जहां गावों का वातावरण विषाक्त होता जा रहा है, आपसी द्वेष, घृणा एवं वैमस्यता प्रकाष्ठा पर है तो दूसरी ओर गांव के किसानों एवं मजदूरों की आर्थिक स्थिति दिन व दिन बद-से-बदत्तर होती जा रही है। इस प्रकार मंच तथा पत्रिका ने परम्परागत ठंग से चली आ रही गतिविधियों से कुछ हट कर एक नए रास्ते की तलाश की है। इसके बावजूद मंच तथा पत्रिका का यह दावा नहीं कि वह जनांदोलन बन गया है पर इतना अवश्य है कि बीते वर्षों में मंच ने जनमानस को एक खास दिशा में मोड़ने की कोशिश की है। तो आइए आप भी इसकी सदस्यता ग्रहण कर इसके द्वारा चलाए जा रहे आन्दोलन का एक हिस्सा बनें।

❑ मान. न्यायमूर्ति बी.एल यादव
राष्ट्रीय अध्यक्ष

❑ सिद्धेश्वर
राष्ट्रीय महासचिव

माँ की भूमिका से काफी खुश हैं स्मिता जयकर

फिल्म संवाददाता, मुंबई

स्मिता जयकर ने माँ की भूमिका निभाने में अपनी एक अलग पहचान बना ली है। दर्शक भी उन्हें अब सुन्दर और शक्तिशाली माँ के रूप में देखना पसन्द कर रहे हैं। मराठी फिल्मों की जानी मानी अभिनेत्री स्मिता के चेहरे पर आज भी ग्लैमर मौजूद है जबकि वे दो बच्चों की माँ बन चुकी हैं।

अपने जीवन के प्रारम्भिक दौर में स्मिता ने आमदनी के लिए वकालत का पेशा अपनाया और काले कोट तथा कड़क सफेद कॉलरवाले अधिवक्ताओं के परिवार में रहकर भी वे सर्वथा भिन्न निकली। दरअसल महाराष्ट्रियन परिवार की होने की वजह से स्मिता की शादी सही आयु में हो गयी और शीघ्र ही उन्हें दो पुत्र भी हुए, फिर भी उसके बाद मॉडलिंग की दुनिया में उस समय कदम रखा जिस वक्त केवल दूरदर्शन ही था और विज्ञापन बहुत कम था। तब भी प्रेशर कुकर से लेकर तकिए, साबुन, डिटर्जेन्ट व दाँतों के उत्पाद तक सभी तरह के उन्होंने लगभग 150 विज्ञापन किए। उसके बाद उन्हें अपनी क्षमता का अहसास हो गया और तब से उन्होंने वकालत का पेशा छोड़कर फिल्मी दुनिया में प्रवेश किया। सही मेकअप का इस्तमाल सही शॉट देकर और नयी इन्डस्ट्री में अनुशासन प्रिय होकर फिल्मों में एक उभरती हुई अदाकारा बन गईं।

अपने पति की प्रेरणा और अपेक्षित सहयोग से स्मिता सर्वप्रथम पुलिस केस पर आधारित 100 एपिसोड के एक टी०वी० कार्यक्रम में दाखिल हुई और फिर **आह्वान** नामक एक मराठी धारावाहिक में काम किया, जो कि एक बहू द्वारा अपने-क्रूर व लालची ससुरालवालों को सबक सिखाने के बारे में था। फिर तो **जुनून** व **घुटन** में काम करने के बाद **सरफरोश** में उन्होंने अभिनय किया जो सुपरहिट हुई। फिर दिलीप कुमार के साथ **किला** और फिरोज खाँ की **प्रेम अगन** में काम करने के बाद आयीं **हम आपके दिल में रहते हैं** में, जिसमें उन्होंने काजोल की माँ बनी। उसके बाद **हम दिल दे चुके सनम** में एश्वर्या की माँ की भूमिका निभाई।

फिल्म इन्डस्ट्री का बूरा अनुभव स्मिता को सुभाष घई की परदेश फिल्म से हुआ। उनका मानना है कि दो विवाहित या अविवाहित व्यक्ति आपस में शारीरिक सम्बन्ध आपसी रजामन्दी पर रख सकते हैं किन्तु जो स्त्री ऐसा सम्बन्ध रखने से मना करे, उससे जबर्दस्ती ठीक नहीं। स्मिता का कहना है कि जो घई ने किया, वह गलत था और स्मिता ने इसे सार्वजनिक रूप से कहा। उन्होंने घई के साथ कभी काम नहीं करने का संकल्प लिया। यह उनके दृढ़ चरित्र का परिचायक है जो उन्हें परिवारिक पृष्ठभूमि से प्राप्त हुआ।

स्मिता जयकर अपनी फिल्मों में से अधिकतर में माँ की भूमिका अदाकर काफी खुश हैं। वे कहती हैं- मैं और भी खुश होती हूँ, जब यूनिट वाले सेट पर मुझे माँ या अम्मा कहते हैं। इससे यह मेरे व्यक्तित्व में चार चाँद लगता है और मुझे माँ का सम्मान मिलता है। इसमें कतई सन्देह नहीं कि स्मिता की सफलता का श्रेय उनके पति को भी जाता है क्योंकि न केवल उनके पति उन्हें संरक्षण देते हैं बल्कि असीम प्यार भी। इन दिनों भी जब स्मिता सज-धज कर, खुद को समाज के हिसाब से 'डेकोरेट' कर निकलती हैं तो वह एक आकर्षक महिला के रूप में दिखाई देती हैं। महीने में 20 दिन फिल्मों में व्यस्त रहनेवाली स्मिता का बाकी दिन अपने परिवार के बीच एक सफल गृहिणी के रूप में बितता है क्योंकि वह अपने परिवार के साथ सदैव मित्रवत रहती हैं।

'लगान' भी दुनिया की पाँच सर्वश्रेष्ठ फिल्मों में एक

दुनिया की 5 फिल्मों में से कुल पाँच सर्वश्रेष्ठ फिल्मों का चयन किया गया है, उनमें से आशुतोष गोवारिकर निर्देशित अमीर खान की हिन्दी फिल्म **लगान** भी एक है। **लगान** के साथ जिन अन्य चार फिल्मों का चयन सर्वश्रेष्ठ विदेशी फिल्म की श्रेणी में हुआ है वे हैं - एमेली (फ्रांस), एलिंग (नार्वे), नो मेन्स लैंड (बोलिया) और सन ऑफ दी बाइड (अर्जेनटीना)

भारतीय फिल्मी इतिहास में **लगान** तीसरी फिल्म है जिसे **ऑस्कर पुरस्कार** के लिए नामांकित किया गया है। इससे पूर्व **मदर इन्डिया** और **सलाम बाम्बे** को यह सौभाग्य मिला था। खुशी इस बात की है कि हिन्दी फिल्में धीरे-धीरे विश्व स्तर पर अपनी उपस्थिति दर्ज कराने में कामयाब हो रही हैं।

विचार दृष्टि का अगला अंक

दलित अंक

राष्ट्रीय चेतना की वैचारिक त्रैमासिकी **विचार दृष्टि** ने प्रवाह को दलित भाइयों की अस्मिता एवं पहचान की दिशा में पहल करने हेतु अपना कदम बढ़ाया है। इस दृष्टि से इसका अगला अंक-12 **दलित अंक** होगा। इस विशेषांक के लिए चिंतकों एवं लेखकों से वैचारिक लेख आमंत्रित है।

डॉ० शिवनारायण
कार्यकारी संपादक
विचार दृष्टि

वर्ष : 4 अंक : 11 अप्रैल-जून : 2002 R.N.I.Regd.NO. DEL HIN/1999/791

पटना स्नातक निर्वाचन क्षेत्र के
एक भरोसेमन्द उम्मीदवार

28 अप्रैल, 2002

पटना शिक्षक निर्वाचन क्षेत्र से
सबल और सक्षम उम्मीदवार

श्री जयप्रकाश सिंह

बिहार विधान परिषद
के
चुनाव में
हम
दोंनों के कदम
साथ–साथ

प्रॉ० (डॉ०) अर्जुन प्र० सिन्हा

क्योंकि:

- उदारीकरण के इस दौर में सुरसा-सी बढ़ती बेरोजगारी और शिक्षा जगत में बेतहासा बढ़ती अराजकता का सामना करने के लिए यह जरूरी हो गया कि हम एक दूसरे के कन्धों से कन्धे मिलाकर चलें।
- धर्म और जाति के कठघरे में खड़ी इस राज्य की जनता खासकर स्नातकों की बेरोजगार फौज शिक्षकों की समस्याओं का निदान निकालना किसी एक के बूते मुश्किल है।
- पढ़े-लिखे लोगों को दरकिनार कर आज अनपढ़ राज्य की नैया के खिवैया बन बैठे हैं, जिन्हें नाव खेना नहीं आता, मात्र उन्हें किनारे पर लहर गिनने के लिए बैठा दिया गया है, तो ऐसी स्थिति में कब तक हम अपनी ढफली बजाते और अपना राग अलापते रहेंगें?
- नयी पीढ़ी में नयी सामाजिक व राजनीतिक चेतना जाग्रत करके उसे भविष्य की जिम्मेदारियों को बौद्धिक क्षमता प्रदान करना है।
- भ्रष्टाचार की दलदल में सिर से पांव तक डूबे इस राज्य को प्रगति पथ पर ले जाने के लिए एक सामुहिक प्रयास समय की माँग है।
- सामूहिक प्रयास से ही जन-जागरण अभियान और भ्रष्टाचार के खिलाफ जनमत तैयार किया जा सकता है।
- प्रयोंगों की भूल-भुलैया से गुजरती हुई राज्य की शिक्षा और शिक्षा-निति की उदासीनता से एक अंधी गली की ओर बढ़ती वर्तमान तथा भावी पीढ़ी को बचाना एक सामूहिक दायित्व है, जिसका निर्वाह हम दोंनों को मिलकर करना है।
- हमें मिलकर ही शिक्षा को समाज व राज्य के लिए उपयोगी बनाने की जिम्मेदारी निभानी है। सामाजिक, आर्थिक तथा शैक्षिक विकास में सामाजिक गतिशीलता प्रदान के लिए भी हमें कदम से कदम मिलाना है।
- स्नातकों एवं शिक्षकों की मूलभूत समस्याओं के समाधान हेतु प्रयास कर उन्हें सुविधाएं मुहैया करवाना हम दोनों की प्राथमिकता होगी।

तो आइए, 28 अप्रैल, 2002 को होने वाले पटना स्नातक तथा पटना शिक्षक निर्वाचन क्षेत्रों से आप हम दोनों प्रत्याशियों को भारी मतों से विजयी बनाएं, यह आप प्रबद्ध मतादाताओं की गरिमा के अनुरूप होगी।

जयप्रकाश सिंह *प्रो० अर्जुन प्रसाद सिन्हा*

प्रकाशक, मुद्रक व स्वामी सिद्धेश्वर द्वारा यू-207, शकरपुर विकास मार्ग, दिल्ली-92 से प्रकाशित
एवं प्रोलिफिक इनकारपोरेटेड, एक्स-47, ओखला, फेज-2, नई दिल्ली-20 में मुद्रित। – सम्पादक : सिद्धेश्वर